—: सम्पादक :—
डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी
— सहायक —
मु० ग़ुफ़रान नदवी
मु० हसन अन्सारी
हबीबुल्लाह आज़मी



कार्यालय
मासिक सच्चा राही !
मजलिसे सहाफत व नशरियात
पो० बॉ० नं० 93
टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फोन : 0522-2740406
फैक्स : 0522-2741231
e-mail :
nadwa@sancharnet.in


सहयोग राशि

| | |
|---|---|
| एक प्रति | रु० 9/– |
| वार्षिक | रु० 100/– |
| विशेष वार्षिक | रु० 500/– |
| विदेशों में (वार्षिक) | 25 यूएस डालर |

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें :
"सच्चा राही"
पता : सेक्रेटरी मजलिसे सहाफ़त
व नशरियात नदवतुल उलमा,
लखनऊ–226007


मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ़्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात, टैगोर मार्ग नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

H.I.Computers - 9335214913



हिन्दी मासिक
# सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक
लखनऊ

अक्टूबर, 2008 वर्ष 7 अंक 08

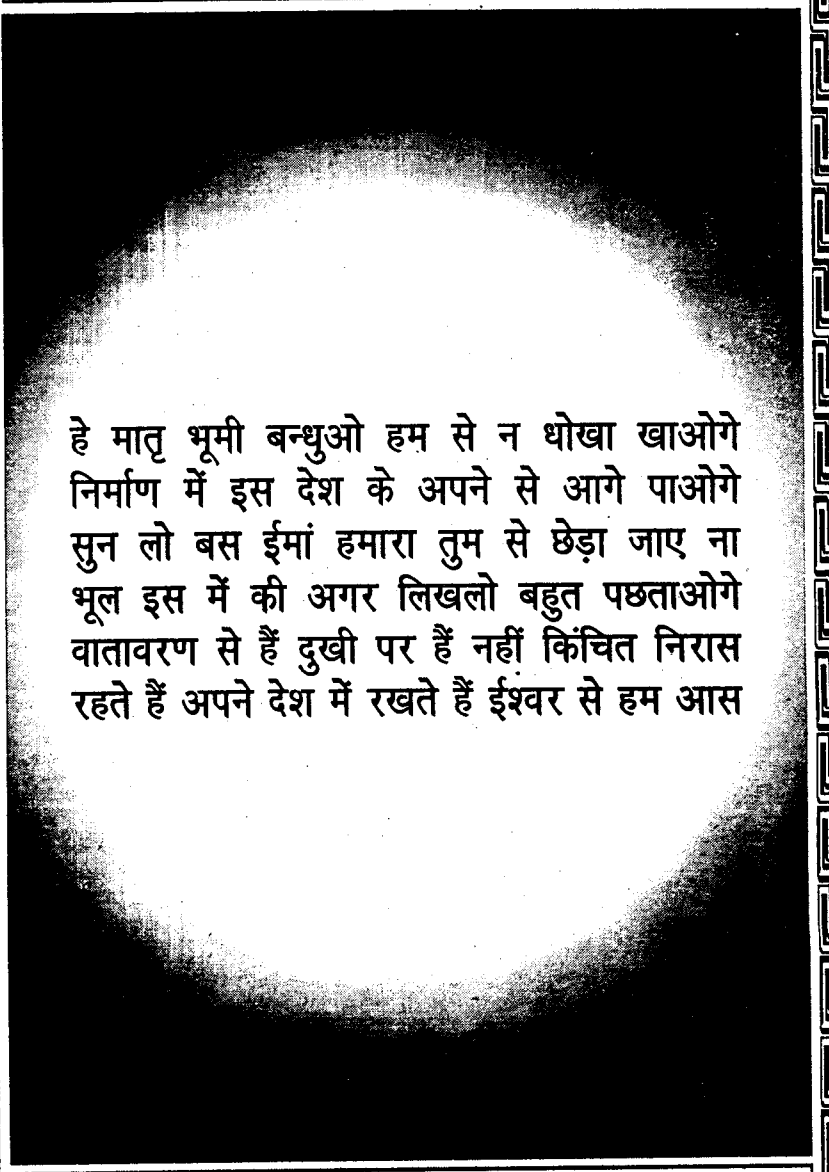


हे मातृ भूमी बन्धुओ हम से न धोखा खाओगे
निर्माण में इस देश के अपने से आगे पाओगे
सुन लो बस ईमां हमारा तुम से छेड़ा जाए ना
भूल इस में की अगर लिखलो बहुत पछताओगे
वातावरण से हैं दुखी पर हैं नहीं किंचित निरास
रहते हैं अपने देश में रखते हैं ईश्वर से हम आस

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

# विषय एक नज़र में


| | | |
|---|---|---|
| ❐ | पूरे वर्ष कुशल मंगल से रहो | सम्पादकीय.....3 |
| ❐ | कुर्आन की शिक्षा | मौलाना मंजूर नोमानी ..... 5 |
| ❐ | प्यारे नबी की प्यारी बातें | अमतुल्लाह तस्नीम ..... 8 |
| ❐ | हम कैसे पढ़ाएं | डा० सलामतुल्लाह ..... 10 |
| ❐ | कारवाने ज़िन्दगी | मौ० स० अबुल हसन अली हसनी ..... 11 |
| ❐ | भारत का संक्षिप्त इतिहास | स० अबूज़फर नदवी ..... 14 |
| ❐ | आत्म हत्या कारण निवारण | अनीस अहमद नदवी ..... 16 |
| ❐ | ऐ ईमान वालो सावधान | बिलाल हसनी नदवी ..... 18 |
| ❐ | इस आत्महीनता का अन्त कब तक | नजमुस्साकिब अब्बासी ..... 19 |
| ❐ | आत्म चिन्तन | मु० हसन अन्सारी ..... 20 |
| ❐ | अनाथों के अधिकार | मौ० स० सुलैमान नदवी ..... 21 |
| ❐ | ब्रह्माण्ड के रहस्य | शादमान ..... 24 |
| ❐ | भूत और आसेब | इदारा ..... 25 |
| ❐ | आपके प्रश्नों के उत्तर | इदारा ..... 26 |
| ❐ | देश में हो रहे बम धमाके | एजाज़ अहमद असलम ..... 28 |
| ❐ | लहसुन | इदारा ..... 29 |
| ❐ | अल्लाह की रहमत | अमीना जोन ..... 30 |
| ❐ | पुस्तक समीक्षा | ..... 33 |
| ❐ | पश्चिम प्रेमियों के कुतर्कों से सावधान | गुलज़ार सहराइ ..... 34 |
| ❐ | शादियों में भी फुजूल खर्ची न करें | संकलित ..... 36 |
| ❐ | मायूस नहीं हैं (पद्य) | इदारा ..... 37 |
| ❐ | उर्दू शब्दों का उच्चारण तथा अर्थ | इदारा ..... 38 |
| ❐ | बातें गुरू जी की | इदारा ..... 39 |
| ❐ | अन्तर्राष्ट्रीय समाचार | डॉ० मुईद अशरफ नदवी ..... 40 |


❐❐❐

(सम्पादक का लेखकों से सहमत होना आवश्यक नहीं है। सच्चाराही से सम्बन्धित सभी विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ होगा।)

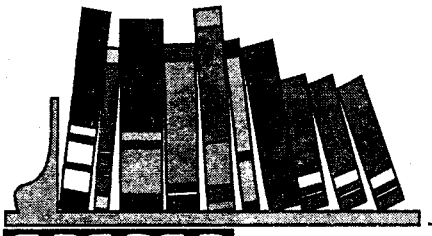

# पूरे वर्ष कुशल मंगल से रहो

*डा० हारून रशीद सिद्दीकी*

ईद मुबारक ! २९ रमज़ान की शाम को चान्द दिखा कि बच्चे दौड़ दौड़ कर अस्सलामु अलैकुम के साथ ईद की मुबारकबादी देने लगे इस लिये कि ईद की सुबह को उन को हर एक से वसूली करना है। अस्लन ईद तो इन बच्चों ही की ईद है, जिनके पास रंज व ग़म का गुज़र नहीं, उनका ग़म अगर है तो बस यह है कि उनकी तवक्कुअ से ईदी कम मिली, लेकिन यह कमी उन के आंसुओं को देखकर लोग जल्द ही पूरी कर देते हैं। अगर कोई बड़ा एहसास न दिलाए तो एहसासे कमतरी (आत्म हीनता) तो उनके क़रीब नहीं फटकती। अब से साठ वर्ष पहले की, दो बच्चों की ईद के रोज़ की बात चीत, ख़ूब याद है। उनमें से एक बच्चे की क़मीज़ बहुत अच्छे पापलीन की थी और पैजामा उम्दा किस्म के लट्ठे का सर पर चमकदार टोपी, पैर में बूट जूते कमीज़ में जंजीरदार चान्दी के बटन, वह ज़रा खाते पीते घर का था। दूसरे बच्चे के जिस्म पर लूम का बुना हुआ बुन्दकीदार कपड़े का कुर्ता, मारकीन का पैजामा, उसी की टोपी, नंगे पैर, दोनों दोस्त थे, एक साथ दौड़ दौड़ कर पड़ोसियों के घर जाते सलाम करते, सेवय्यां खाते, एक जगह कई बच्चे इकट्ठा हो गये, और कपड़ों जूतों पर बात चल पड़ी। ग़रीब बच्चा कह रहा था : देखो मेरा कुर्ता बुन्दकियों पर नज़र नहीं ठहरती, इसी में सफ़ेद बटन जड़े हुए हैं, पहना बटन चढ़ा लिये, उतारना हुआ बटन खोल दिये, पैजामा इतना मजबूत कि कांटा लगे तो वह टूट जाए पैजामा न फटे, टोपी मैली हुई धो लिया। पैर में जूते तो बेड़ियां हैं, दौड़ने में रोक बनते हैं और अगर काट दें तो इन को ख़ुद लादो। उस बच्चे की बात सुनकर मैं हैरान रह गया कि अल्लाह तआला का क्या निज़ाम है, कि ऐसे मअसूम (पाप रहित) को सोचने का क्या ज्ञान दिया। अगर अल्लाह की तरफ़ से इस तरह सोचने की तौफ़ीक़ न मिले तो कितने लोगों की ज़िन्दगी दूभर हो जाए। मैं अपने खयालों में डूब गया कि बेशक ईद तो बच्चों ही की है।

बड़े भी एक दूसरे को मुबारक बाद कह रहे हैं लेकिन उन के दिल बैठे हुए हैं कि कब किसी धमाके से उन का और उनके मअसूमों (पाप रहित बच्चों) का अन्त कर दिया जाएगा और कब उनको और उनके नवयुवक लाडिलों को नान बेल एबिल धारा में जेल भेज दिया जाएगा। वैसे अल्लाह पर भरोसा करने वालों के दिल बड़ी से बड़ी परीक्षा में भी शान्तिमयी रहते हैं और इस पर सन्तुष्ट रहते हैं कि जो कुछ होता है वह अल्लाह की मर्ज़ी ही से होता है और अल्लाह जो करता है अच्छा करता है, बस अपने कर्मों की लेखा परीक्षा (मुहासबा) करते रहना चाहिए। जीवधारियों विशेषकर मानव समूह में बम बिस्फोट करना तथा किसी की जान अकारण लेना किसी धर्म और किसी विधान में बैध नहीं हो सकता और मैं तो डंके की चोट कहता हूं कि इस्लाम धर्म में तो यह हराम (वर्जित) है। दुन्या तथा आख़िरत दोनों स्थानों में दंड पाने वाला पाप है। परन्तु क्या किया जाए हालात ऐसे हैं कि सभावित भयों से ईद की खुशी भी छिनी हुई है।

क़ुर्बान जाइये इस्लामी सकाफ़त (इस्लामी संस्कृति) पर कि इस्लाम ने साल में दो ईदें दीं अर्थात दो दिन खुशी मनाने के लिऐ दिये परन्तु यहां भी आज़ाद (स्वतंत्र) नहीं छोड़ा ख़ुशी मनाने

की सीमाएं निर्धारित कर दीं। सब से पहले तो नहा धोकर हैसियत के अनुसार अच्छे वस्त्र पहनना है, सुगन्ध लगा कर मन मस्तिष्क को आनन्दित करना है, कुछ मीठा खा कर मिठास के स्वाद से आनन्द लेना है। एक दूसरे को सलाम तथा मुबारकबाद कह कर समाज को आनन्द मय बनाना है। ईद गाह जाकर सामूहिक नमाज़ के दृश्य से समाज को मान्सिक उल्लास प्रदान करते हुए अपने रब की प्रसन्नता प्राप्त करना है जिससे मन तथा आत्मा को वास्तविक शान्ति भी मिलती है, आनन्द भी मिलता और ईश प्रसन्नता भी। इस ख़ुशी में हम को आपे से बाहर होने की न इच्छा न अनुमति। हम मदिरा पीकर बाजा बजा कर, फिल्मी गाना गाकर तथा नृत्य क्रिया से काम इच्छा को नहीं उभारते, हां हम्द, नअ़त पढ़कर अल्लाह और उसके रसूल के प्रेम को उभारने की अनुमत है, यदि कुछ नव युवक अपने शारीरिक करतबों से लोगों को प्रसन्न करना चाहें तो इस की भी अनुमति है।

सबसे महत्वपूर्ण बात जो है वह एक दूसरे को आशीर्वाद देना है। हम एक दूसरे को सलाम करते हैं प्रणाम नहीं करते। दोनों में बड़ा अंतर है। प्रणाम का अर्थ हुआ नत मस्तक होना जिसको प्रणाम किया उससे कहा कि मैं आपको इतना बड़ा मानता हूं कि आपके आगे झुकता हूं। नमस्कार तथा नमस्ते का भी यही अर्थ है। जिन लोगों ने प्रणाम, नमस्कार, नमस्ते का अर्थ सलाम लिखा उनसे बड़ी भूल हुई। सलाम और ही चीज़ है। इस्लाम में अल्लाह (ईश्वर) के अतिरिक्त किसी के समक्ष नतमस्तक होना या नतमस्तक होने को कहना अवैध है। अस्सलाम अ़लैकुम का अर्थ है तुम पर सलामती हो अर्थात ईश्वर तुम को हर प्रकार से सुरक्षित रखे। सुरक्षित रखे बम विस्फोट से, लड़ाई झगड़े से, हर प्रकार के हानि तथा कष्ट से। ध्यान देने योग्य है, कैसे ही हालात हों यह आशीर्वाद कितना अच्छा तथा प्यारा है, इस्लाम भेंट के समय किसी की जय पुकारने का आदेश नहीं देता बल्कि सर्वशक्तिमान अल्लाह से, सम्मुख वाले के लिए सलामती (सुरक्षा) मांगने का आदेश है, क्या इस बमविस्फोट काल में एक दूसरे के लिये यह दुआ शान्ति प्रदान करने वाली नहीं है? अवश्य है, उस समय हृदय को और ठन्डक मिलती है जब उससे रहमत, व बरकत की दुआ बढ़ा कर मिलती है अर्थात जब उसे अस्सलामु अ़लैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू कहा जाता है। इसके जवाब में ख़ुश रहो, आनन्द रहो कहने के स्थान पर वही शब्द लौटाने का आदेश है व अ़लैकुमुस्सलामु व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू।

यह ईद मुबारक भी दुआ ही है इस का मतलब है अल्लाह तआला तुम को ईद का दिन मुबारक (मंगल मय) करे। कोई अत्याचारी बम विस्फोट कर के तुम्हारी ख़ुशी छीन न ले, न पुलिस तुम्हें बिना किसी अपराध के जेल भेज दे।

मैं सात वर्षों तक सऊ़दी अ़रब में स्टडी करता रहा, वहां ईद के दिन दूसरे अच्छे शब्दों के साथ एक दूसरे को "कुल्लु आमिन् व अन्तुम् बिख़ैर" कहते सुना। जिस का अर्थ है "पूरे वर्ष कुशल मंगल से रहो" लीजिए ईद मुबारक और ईदे सईद में तो मंगलमय के लिये ईद का दिन सीमित था, यहां अल्लाह (ईश्वर) से पूरे वर्ष की दुआ मांग ली गई। वहां यह भी देखा कि ईद के दूसरे तीसरे दिन तक जब एक दूसरे से मिलने गये तो सलाम के पश्चात यह शब्द दुहराए गये। पर्चा देर से पहुंचे या वक़्त पर मैं भी अपने पाठकों से कहता हूं "कुल्लु आमिन् व अन्तुम बिख़ैर" ख़ुदा (ईश्वर) करे कि आप पूरे वर्ष मंगल मय रहें।

हो मुबारक आप को ईदे सईद दे ख़ुदा तौफ़ीक़ नेकी की मज़ीद
नंगे, भूखों को न भूलें ईद में याद रखें आज हो उनकी भी ईद

# क़ुर्आन की शिक्षा

मौ० मु० मंजूर नोमानी

## अहलो अयाल :

माँ–बाप के बाद, इन्सान का सब से बड़ा तअल्लुक़ बीवी बच्चों से होता है। और इन्सान की यह आम फितरत है कि वह अपने अहल व अयाल को आराम ही से रखना चाहता है बल्कि इस बारे में तो बहुत से लोग अपनी हद से बढ़ जाते हैं। इस लिये क़ुरआने मजीद में इस बारे में जियादा ज़ोर नहीं दिया गया है कि अह्ल व अयाल के साथ अच्छा बरताव किया जाये, और उनका हक़ अदा किया जाये।

लेकिन चूंकि बहुत से लोगों से अहल–व–अयाल की दीनी इस्लाह (सुधार) व तरबियत के बारे में कोताही होती है, इस लिये क़ुरआने मजीद ने अहल–व–अयाल से इस हक़ की तरफ ख़ास तौर से ध्यान दिलाया है कि उन को दीनदार बनाने की और अल्लाह तआला की रिज़ा के रास्ते पर चलाने की उसी तरह फ़िक्र और कोशिश की जाये, जिस तरह कि हर ईमान वाले को अपनी जान दोजख से बचाने की फ़िक्र करनी चाहिए। सूरए–तहरीम में इर्शाद फ़रमाया गया है –

तर्जमा : ऐ ईमान वालो ! अपने को और अपने अहल–व–अयाल को दोजख की आग से बचाओ, जिस का ईंधन आदमी और पत्थर हैं। इस पर (अजाब देने के लिये।) ऐसे फरिश्ते मुकर्रर है जो बड़े सख्त दिल (बनाये गये हैं।) और बड़े मजबूत हैं। अल्लाह ने उनको हुक्म दे दिया है वे (जरा भी) उसकी खिलाफ वर्जी नहीं करेंगे। और जिस काम के लिये वे लगाये गये हैं वे उनको (पूरा–पूरा) अन्जाम देंगे। (तहरीम : ६)

च्योंकि बीवियों के बारे में बहुत से लोगों से कोताहियां होती हैं, इस लिये उन के साथ हुस्ने–सुलूक और उनके हक की अदायगी के बारे में क़ुरआने मजीद ने ख़ास ताकीद फर्मायी है।

सूरए–बकरह ही में इर्शाद फर्माया गया है –

तर्जमा : और औरतों के मर्दों पर उसी तरह हक हैं जैसे कि मर्दों के हक औरतों पर हैं दस्तूर के मुताबिक। (बकरः २२८)

और सूरए–निसॉअ में इर्शाद फर्माया गया है –

तर्जमा : और उनके साथ (यानी अपनी बीवियों के साथ) दस्तूर के मुताबिक अच्छे तरीके पर गुजर बसर करो। (निसा : १६)

अगर अल्लाह के किसी बन्दे के बीवी बच्चे अपने बुरे स्वभाव या बेदीनी की वजह से उसके खिलाफ हों और उसको दुख देने वाले हों और उस को उन की तरफ से खतरा हो, तो क़ुरआने मजीद की हिदायत है कि वह अपने को उनके शर (दुष्कृत्य) से बचाता रहे, और उनकी तरफ से होशियार रहे, लेकिन जहां तक संभव हो उन से बदला न ले और सख्ती का बरताव न करे। बल्कि मुआफ करे और नजर अन्दाज करता रहे। इन्शाअल्लाह यह अमल उन की इस्लाह का सबब भी बनेगा। सूरए–तगाबुन में इर्शाद है–

तर्जमा : ऐ ईमान वालो ! तुम्हारी कुछ बीवियां और तुम्हारी कुछ औलाद तुम्हारी दुश्मन हैं। पस तुम उन के शर (शरारत) से बचे रहो। और अगर तुम मुआफ करो और दरगुजर करो और बख्श दो तो (यह तुम्हारे लिये बेहतर और अच्छा अन्जाम होगा)। बेशक अल्लाह तआला बड़ा बखशने वाला और रहम फर्माने वाला है। (तगाबुन : १४)

## आम इन्सानों के हुकूक और उनके साथ हुस्ने–सुलूक

बन्दों के हुकूक के सिलसिले में मां–बाप, अहल–व–अयाल, रिश्तेदारों, पड़ोसियों और यतीमों, असीरों वगैरा कमजोर *तबकों (वर्गों)* के हक और उनकी खिदमत व हुस्ने–सुलूक के बारे में क़ुरआने –मजीद की तालीम व ताकीद आप पढ़ चुके हैं। अब देखिये कि आम इन्सानों (सामान्य मनुष्यों) के हक और उन के साथ हुस्ने–सुलूक के बारे में क़ुरआने–मजीद की तालीम क्या है।

इस सिलसिले में पहले तो क़ुरआने–मजीद ने जगह–जगह पर यह वाजेह कर दिया है कि सारे इन्सान एक ही मुकर्रम व मोहतरम जोड़े (आदम

व हव्वा अलैहिमस्सलाम) की औलाद हैं, पूरी इन्सानी बिरादरी को अपनी अस्ल व फितरत के लिहाज़ से क़ाबिले एहतराम (सम्मानीय) बना दिया है। फिर दूसरी तमाम मखलूक़ात के मुक़ाबले में इनसान को जो खास इलमी अमली सलाहियतें और ताक़तें बख़शी गयी हैं जिन के ज़रीये वह इस पूरी काइनात को इस्तेमाल कर रहा है, इस को भी क़ुरआने–मजीद में पूरी इन्सानी नस्ल के लिये ख़ुदा की तरफ़ से एक शरफ़ व एजाज़ (सम्मान) बताया गया है। इर्शाद है –

तर्जमा : और हम ने बनी आदम (आदम की औलाद) को एक ख़ास शरफ़ व एजाज़ बख़्शा और इस दुनिया के बह्र व बर (जल–थल) पर इस को क़ब्जे वाला और इस्तेमाल करने वाला बना दिया। (बनी इस्राईल : ६०)

इस फितरी व तकवीनी (सृष्टात्मक) सम्मान के अलावा क़ुरआने मजीद ने अपने मानने वालों को हुक्म दिया कि वे सब इन्सानों से अच्छी बात करें।

तर्जमा : और सब लोगों से अच्छी बात कहो। (बकरः ८३)

इसी तरह सब के साथ इन्साफ़ और एहसान का हुक्म दिया गया। ईमान वालों को सुनाया गया कि :–

तर्जमा : अल्लाह तआला हुक्म देता है इन्साफ़ करने का और इहसान करने का (सब के साथ) । (नह्ल : ६०)

दूसरी जगह फ़र्माया गया :

तर्जमा : और अच्छा सुलूक करो (सबके साथ) अल्लाह तआला अच्छा सुलूक करने वालों से महब्बत करता है। (बक़र : १६५)

यहां तक कि अगर कोई तुम्हारा दुश्मन हो और तुम्हारे साथ बुराई से पेश आता हो तो उस के हक़ में भी क़ुरआने मजीद का हुक्म है कि जहां तक हो सके तुम उस के साथ अच्छा ही मुआमला करो, और उसकी बदी (बुराई) का जवाब भी नेकी ही से दो। इर्शाद फर्माया :

तर्जमा : अच्छा रवैया और बुरा रवैया बराबर नहीं (बल्कि अच्छा रवैया नेकी है और बुरा रवैया बदी है, इसलिये तुम को चाहिए कि) बुराई का जवाब भी तुम नेकी ही से दो।

(हामीम सजद : ३४)

दूसरी जगह फर्माया गया :

तर्जमा : तुम बुराई का जवाब भी अच्छे रवैये से दो, हमें खूब मालूम है जो कुछ वे (तुम्हारे मुतअल्लिक) कहते हैं। (मुअ्मिनून : ६६)

क़ुरआने मजीद में एक जगह बताया गया है कि अल्लाह के जो नेक बन्दे बदी का जवाब भी नेकी से दे सकें और बुराई करने वालों के साथ भी अच्छाई करें वे दोहरे सवाब और दोहरे इनाम के हकदार हैं। फरमाया गया :

तर्जमा : अल्लाह के उन बन्दों को दोहरा अज्र व सवाब दिया जायेग, उन के सब्र करने की वजह से और बदी का जवाब नेकी से देने की वजह से। (क़िसस : ५४)

आम इन्सानों के साथ रवादारी और हुस्ने सुलूक के बारे में क़ुरआनी तालीम की रूह को कुछ इस से समझा जा सकता है कि जो लोग अपनी फरेब कारियों (चालबाजी) और खियानत करने वाले (विश्वास घातक) मुआहदों (समझौतों) के जरीये खुद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को धोका दिया करते थे उनके बारे में भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से फर्माया गया :

तर्जमा : और आप पर बराबर उन की खियानतों के राज फाश होते रहेंगे और सिवा चन्द के उन की धोखा बाजियां आये दिन आप को मालूम होती रहेंगी, फिर भीं आप उनको मुआफ कर दिया करें और उनके कुसूर (गलतियों) से दर गुजर किया करें।

दूसरों पर एहसान करने वाले बन्दे अल्लाह को प्यारे हैं। (माइदः १३)

और यह तो क़ुरआने–मजीद का आम मन्शूर (घोषणा) है जिस का हर मुसलमान मुख़ातब व कर्मनिष्ट है कि बड़े से बड़े दुश्मन के साथ भी पूरा इन्साफ़ किया जाये और किसी की दुश्मनी की वजह से उसका हक अदा करने में कोई कोताही न की जाये। इर्शाद है और कितने ज़ोर और ताकीद के साथ इर्शाद है :

तर्जमा : और किसी कौम की दुश्मनी हरगिज तुम्हें इस पर आमाद न करे कि तुम उसके साथ बे–इन्साफी कर बैठो, तुम (दुश्मनों के साथ भी) पूरा–पूरा इन्साफ करो। यही तकवा के समीप है। (माइद : ८)

अलगरज क़ुरआने–मजीद में जिस तरह खुद की इबादत और अपने मां–बाप और रिश्तेदारों की खिदमत और यतीमों, कमजारों, मिस्कीनों, हाजतमन्दों के साथ हुस्ने–सुलूक की तालीम दी गयी है इसी तरह आम इन्सानों, यहां तक कि अपने दुश्मनों और बुरा चाहने वालों के साथ भी इन्साफ़ और अच्छे व्यवहार की ताकीद की गयी है।

## इस्लामी बिरादरी के ख़ास हुकूक

कुरआने–मजीद ने खून और नसब (कुल–गोत्र) के रिश्तों की तरह ईमान और इस्लाम को भी एक अहम और मुकद्दस रूहानी रिश्ता क़रार दिया है। और इस रिश्ते के जरिये हर मुसलमान को दूसरे मुसलमान का भाई बताया है। इर्शाद है :

तर्जमा : सारे मुसलमान आपस में भाई भाई हैं। (हुजुरात : १०)

फिर इस रूहानी और ईमानी रिश्ते की वजह से हर मुसलमान पर दूसरे मुसलमान भाई के कुछ ख़ास हुकूक रखे गये हैं जैसे –

उन में एक दूसरे के प्रति प्यार और रहम हो।

उन का परस्पर संबंध नर्मी और आजिजी का हो।

हर एक दूसरे का खैर–ख़ाह (शुभ–चिंतक) और खिदमत करने वाला और नियाज़ मन्द (आज्ञाकारी) हो।

इसी लिये एक अहले ईमान की शान यह बयान की गयी है कि –

तर्जमा : वे आपस में रहम व प्यार का मुआमला करने वाले हैं। (फत्ह : २६)

और दूसरी जगह उन का हाल यह बयान किया गया है कि : –

तर्जमा : ईमानी भाइयों के सामने वे नियाज़मन्द और अपने को नीचा रखने वाले हैं। (माइदा : ५४)

और जो चीजें परस्पर संबंध को खराब करने वाली और दिलों में कुदूरत (मलिनता) पैदा करने वाली हो सकती हैं, कुरआने–मजीद ने मुसलमानों के लिये सख्ती से उन की मनाही फर्मा दी। जैसे –

किसी के साथ ठठोल करना, उस का मज़ाक़ बनाना, हंसी उड़ाना, उस को ऐब (दोष) लगाना, किसी बुरे नाम से उसको याद करना, पीठ–पीछे उस की बुराई करना, या उस के ऐबों को ढूंढ़ना, या सिर्फ क़ियास व ख़याल की वजह से और इसी तरह तहक़ीक़ किये बग़ैर किसी अफ़वाह की बुनयाद पर किसी के बारे में बद् गुमानी करना और उस के खिलाफ़ राय कायम (मत प्रदर्शन) करना –

ये, वह चीज़ें हैं जिन में लोग ज़ियादा एहतियात (सतर्कता) नहीं करते। लेकिन च्योंकि इन बातों से दिलों में रंजिश और मैलापन पैदा होता है और आपस के सम्बन्ध में ख़राबी पड़ती है इस लिये कुरआने–मजीद में स्पष्टता तथा ताकीद के साथ हुक्म दिया गया है कि कोई मुसलमान किसी दूसरे अपने मुसलमान भाई के साथ कदाचित ऐसा न करे और इस सम्बन्ध में पूरी सावधानी बरते।

(पृष्ठ १० का शेष)

मौजूदा दौर को अधिक विस्तार से पेश करना चाहिए।

इतिहास को मात्र घटनाओं और सनों का एक शुष्क संकलन नहीं होना चाहिए। सम्राटों और रहनुमाओं के व्यक्तित्व को कौम की समाजी जेहनी तथा औद्योगिक उन्नति के मुकाबले में कम महत्व देना चाहिए। लेकिन हमें यह हमेशा याद रखना चाहिए कि बच्चे की दिलचस्पियां विचारों से नहीं बल्कि व्यक्तियों से जुड़ी होती है। अतएव जब हम यह कहते हैं कि व्यक्तियों के कार्यों के बजाय कौम की तरक्की पर ज्यादा जोर देना चाहिए तो हमारा मकसद यह कदापि नहीं होता कि हम इतिहास को समय से पूर्व इल्म इमरानियात (गूढ़ विद्या) का दर्जा देना चाहते हैं बल्कि उद्देश्य यह है कि किसी व्यक्ति के जीवन की घटनाओं को महज कहानी न बना दिया जाय। उसे उसके सामाजिक माहौल में रख कर बच्चों को यह महसूस कराया जाये कि उस की सफलता या असफलता की तह में कौन सी शक्तियां थीं और उसके कारनामों ने समाज की भलाई पर क्या असर डाला है। इस प्रकार धीरे धीरे बच्चे यह समझने लगेंगे कि इतिहास के असाधारण व्यक्ति अन्तरिक्ष में यों ही पैदा हो गये बल्कि उनकी महानता का असल कारण यह है कि उन्होंने अपने जमाने की ऐतिहासिक परिस्थितियों का सही तौर पर जायजा लिया और उन सामाजिक शक्तियों को अपना सेवक बनाया जो कि उस दौर की पैदावार थीं। (जारी)

प्रस्तुति : एम हसन अंसारी

### अनमोल मोती

संकलन : एम० हसन अंसारी

अनपढ़ से पढ़ा बेहतर
पढ़ा से ज्ञानी कढ़ा बेहतर
ज्ञानी कढ़ा से निष्ठ कर्मयोगी बेहतर
निष्ठ कर्मयोगी से वह कर्मनिष्ठ बेहतर जो खुदा से डरता रहे।

जो व्यक्ति तुम्हारे सामने दूसरों की बुराई करता है, वह दूसरों के सामने तुम्हारी बुराई करता है।

जो बुझ रहा हो जला लो उसी से बढ़ के चिराग,
फिर इस की लौ में खुद अपना जहां तलाश करो।

विनय विद्या का आभूषण है।

इल्म इन्सानियत का जेवर है,
इल्म से आदमी संवरता है।

दुनिया से गुजरना है तो दामन को समेटो,
कांटो से भरी दोस्तो यह राह गुजर है। –

नहीं तेरा नशेमन कसरे सुल्तानी के गुम्बद पर
तू शाहीं है बसेरा कर पहाड़ों की चटानों में।

# प्यारे नबी की प्यारी बातें

अमतुल्लाह तस्नीम

## खुदा की मख्लूक की महबूबियत का नुस्खः

हज़रत सह्ल बिन सअद (र०) से रिवायत है कि एक आदमी नबी (स०) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज किया या रसूलल्लाह! मुझे ऐसा अमल बताइये जिसको इख़्तियार करूं तो अल्लाह तआला मुहब्बत करने लगे और लोग भी मुझसे मुहब्बत करें। आपने फरमाया, दुनिया के बारे में ज़ुहद इख़्तियार करो, अल्लाह तआला तुमसे मुहब्बत करेगा। और जो लोगों के पास है उसकी तमअ न करो, बेफ़िक्र और ग़नी हो जाओगे। लोग तुमसे मुहब्बत करने लगेंगे। (इब्नि माजः)

## भूक से रसूलुल्लाह (सल्ल०) की हालत

हजरत नुअमान (र०) बिन बशीर से रिवायत है कि हजरत उमर (र०) बिन अलखत्ताब ने एक रोज लोगों की दौलत और फारिगुल्बाली का जिक्र किया, फिर कहने लगे कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) भूक से झुक जाते और दुहरे हो जाते थे। ख़राब खजूर भी पेट भरने के लिये न मिलती थी। (मुस्लिम)

## हुजूर ने वफ़ात के वक़्त क्या छोड़ा

हजरत आयशः (र०) से रिवायत है कि जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) की वफ़ात हुई तो मेरे घर में कोई चीज न थी कि उसको कोई जानदार खाले, सिवाय थोड़े से जौ के जो दीवारगीरी पर पड़े हुए थे। मैं उसको खाती रही और ज़ियादः दिन तक खाती रही। मगर जब मैंने उसको नापा तो वह ख़त्म हो गये। (तिर्मिज़ी)

हज़रत उम्मुल मोमिनीन जुवैरियः (र०) के भाई उमर (र०) बिन अलहारिस से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी वफ़ात के वक़्त दिरहम, दीनार, लौण्डी, गुलाम, कुछ नहीं छोड़े, मगर एक सफेद ख़च्चर जिस पर आप सवार होते थे और हथियार और जमीन जिसको मुसाफ़िरों के लिये सदका कर दिया था। (बुखारी)

## हज़रत मुस्अब (र०) बिन उमैर को पूरा कफ़न भी मयस्सर न हुआ

हज़रत ख़ब्बाब (र०) बिन अलअरत से रिवायत है कि हमने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ अल्लाह के लिए हिजरत की, पर बाज तो ऐसे थे कि उन्होंने अपनी नेकी का कोई फल (दुनिया) में न पाया। वह मुस्अब बिन उमैर थे। जब उहद के दिन शहीद हुए तो एक कम्बल छोड़ा था। जब हम उस से उनका सर ढांकते तो पांव खुल जाते और पांव ढाकते तो सर खुल जाता। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमको हुक्म दिया कि हम उनके सर को छुपा दें और पांव पर इजखर रख दें। और हममें से बाज ऐसे हैं जो इन मेहनतों के पक्के हुए फल मजे से खा रहे हैं। (बुखारी–मुस्लिम)

## अल्लाह के नजदीक दुनिया की हक़ीक़त मच्छर के पर के बराबर भी नहीं

हजरत सहल (र०) बिन सअद (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, अगर दुनिया अल्लाह के नजदीक मच्छर के पर के बराबर भी हक़ीक़त रखती तो काफिर को उससे एक घूंट पानी न पिलाता। (तिर्मिजी)

## ख़ालिस दुनिया अल्लाह की रहमत से दूर है

हज़रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना है – दुनिया अल्लाह की रहमत से दूर और उसकी हर चीज अल्लाह की रहमत से दूर है, सिवाय अल्लाह तआला के ज़िक्र के और जो इससे मुतअल्लिक है और सिवाय अिलम सिखाने और सीखने वाले के। (मुस्लिम)

## हुजूर का जायदादें बनाने का सहाबः (र०) को मना करना

हज़रत अब्दुल्लाह (र०) बिन मस्ऊद से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया जायदादें न बनाओ तुमको दुनिया की रगबत हो जायेगी। (तिर्मिज़ी)

हजरत अब्दुल्लाह (र०) बिन अम्र बिन अलआस से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हमारे पास से गुज़रे और हम अपने

एक छप्पर की मरम्मत कर रहे थे। आपने फरमाया, मैं देखता हूं कि मौत इससे भी ज़ियादः करीब है। (अबुदावूद–तिर्मिज़ी)

## माल फ़ित्नः है

हज़रत कअब (र०) बिन अयाज़ से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना है कि हर उम्मत के लिये एक फ़ित्नः था। और मेरी उम्मत का फ़ित्नः माल है। (तिर्मिज़ी)

## ज़िन्दगी की असली जरूरतें

हज़रत उसमान (र०) बिन अफ़्फ़ान से रिवायत है कि नबी (स०) ने फरमाया, इब्नि आदम के लिऐ तीन चीज़ों के सिवा कुछ हक़ नहीं है। रहने के लिए घर, बदन ढांकने के लिए कपड़ा, खाने के लिऐ रोटी और पानी। (तिर्मिज़ी)

## अपने माल में इन्सान का असली हिस्सा

हज़रत अब्दुल्लाह (र०) बिन शिख्खीर से रिवायत है कि मैं नबी (सल्ल०) की खिदमत में हाज़िर हुआ। आप अल्हाकुमुत्तकासुरू तिलावत फरमा रहे थे। फ़रमाया, आदमी कहता है, मेरा माल–मेरा माल। ऐ आदम के बेटे। तेरे माल से इसके सिवा क्या है? जो तूने खाया, फना किया; जो पहना, पुराना किया या सदका किया तो उसको आख़िरत के लिए जख़ीरः बना लिया। (मुस्लिम)

## आं हज़रत से मुहब्बत करना फक्र के लिए तैयार होना है

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुगफ़्फ़ल से रिवायत है कि एक आदमी ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अर्ज़ किया, मैं आपसे मुहब्बत करता हूं। आपने फरमाया, देखो क्या कहते हो? उसने कहा खुदा की कसम मैं आपसे मुहब्बत करता हूं। (तीन मर्तबा कहा) आपने फ़रमाया, अगर तुम मुझसे मुहब्बत करते हो तो फक्र के लिए तैयार हो जाओ। बेशक जो मुझसे मुहब्बत करता है तो फक्र उसके पास सैलाब से भी ज़ियादः तेज पहुंचता है। (तिर्मिज़ी)

## भूखे भेड़िये से ज़ियादः आदमी के लिए माल की हिर्स खतरनाक है

हज़रत कअब (र०) बिन मालिक से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, दो भूखे भेड़िये बकरियों के गल्ले में छोड़ दिये जायें और उनका सत्यानास करें तो वह इतने खतरनाक नहीं जितनी आदमी के दीन के लिए दौलत व अिज़्ज़त की हिर्स खतरनाक होती है। (तिर्मिज़ी)

## हुज़ूर (सल्ल०) को दुनिया को सराये फानी समझना

हज़रत अब्दुल्लाह (र०) बिन मस्ऊद से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक चटाई पर आराम फ़रमाया। उससे आपके पहलुओं पर निशान पड़ गये। मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! हम आपके लिए कोई नर्म बिस्तर न तैयार कर दें? आपने फरमाया, मुझे दुनिया से क्या मतलब ! मैं दुनिया में उस सवार की तरह हूं जो एक दरख्त के नीचे साया ले, फिर चला जाये, और उसको छोड़ दे। (तिर्मिज़ी)

## फ़ुक़रा उमरा से बहुत पहले जन्नत में दाखिल होंगे।

हज़रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, फ़ुक़रा उमरा से पांच सौ साल पहले जन्नत में दाखिल होंगे। (तिर्मिज़ी)

हज़रत इब्नि अब्बास (र०) और इमरान (र०) बिन अलहुसैन से रिवायत है कि नबी (सल्ल०) ने फरमाया, मैंने जन्नत का मुआयना किया तो देखा कि अक्सर उसमें फुकरा हैं। और दोज़ख को देखा तो ज़ियादातर औरतें देखीं। (बुख़ारी मुस्लिम)

हज़रत उसामः बिन ज़ैद (र०) से रिवायत है कि नबी (सल्ल०) ने फरमाया मैं जन्नत के दरवाजे पर खड़ा हुआ, देखा तो उसमें अक्सर मसाकीन थे। और दौलतमन्द रोक दिये गये थे। और दोजख वालों को दोजख की तरफ हुक्म दे दिया गया था। (बुखारी–मुस्लिम)

---

अनादिल ने अपना पढ़ा जब फ़साना
कहां दिल ने गाऊं मैं अपना तराना
तो अशआर ढलने लगे फिर उसी दम
कहा मैं ने कागज़ कलम जल्द लाना
नसाएह हमेशा मैं सुनता रहा हूं
मगर चाल अपनी नहीं है मियाना
तसव्वुर में अपने वो नासेह बने हैं
वतीरा है उन का मगर ज़ालिमाना
ख़यालों में अपने अकेला रहा हूं।
नहीं साथ देता है मेरा ज़माना
परन्दों की दुन्या का दरवेश हूं मैं
बनाता नहीं हूं कहीं आश्याना
ख़ुदा या हिमायत में अपनी तू ले ले
कि उस ने बनाया है मुझ को निशाना
मैं आसी गुनाहो से ताइब हूं अपने
मेरा रब करेगा नजर राहिमानो

आसी लखनवी

( किस्त सात )

अध्यापक बन्धुओं के लिये

# हम कैसे पढ़ायें ?

## विषयों का चयन

डॉ० सलामतुल्लाह

### इतिहास

इतिहास इन्सानी कारनामों की कहानी है। हमारे लिये इन कारनामों का जानना परम आवश्यक है। क्योंकि बिना इसके न हम मौजूदा समाज की बनावट को समझ सकते हैं और न पिछली पीढ़ियों के अनुभवों से लाभ उठा सकते हैं। इन उद्देश्यों को दृष्टिगत रखते हुए इतिहास की सही शिक्षा होनी चाहिए। किन्तु दुर्भाग्यवश इतिहास की अधिकांश किताबें जो आज मिलती हैं उनमें इतिहास के असल मंसब को नजर अन्दाज कर दिया गया है। इन से यह मालूम नहीं होता कि किस काल में इन्सानी समाज की क्या हालत रही है, और वह कौन सी शक्तियां थीं जिनसे बड़े बड़े इन्क़्लाब पैदा हुए और समाज की काया पलट गयी, इसके बजाय हमारी इतिहास की किताबें बादशाहों, फौजी सिपहसालारों और इसी प्रकार की दूसरी नामवर हस्तियों की जीवनी से भरी पड़ी हैं। इन आत्माविहीन घटनाओं के अध्ययन से न इन्सानी समाज की सही हालत का अन्दाजा होता है और न ही उन शक्तियों का पता चलता है जो वास्तव में इन घटनाओं की जिम्मेदार हैं। फिर एक अवगुण यह भी है कि यह किताबें घटनाओं को सही शक्ल में पेश नहीं करतीं। इन में लिखने वाले को सियासी और तबकाती तअस्सुबात व भेद–भाव पूर्ण रवैया का दखल होता है। हमारे नजदीक इतिहासकार को चाहिए कि वह सच्चाई को और सब बातों पर प्राथमिकता दे। उसे घटनाओं को ईमानदारी के साथ असल शक्ल में पेश करना चाहिए चाहे इनसे उस के जाती अकीदों को ठेस क्यों न लगती हो। अगर वह इस बात को समझता है कि इतिहास इन्सानी समाज की हरकत से बनता है तो उसके सामने हमेशा यह मकसद रहना चाहिए कि उस का इतिहास बजाय खुश ऐतकादी (खुश करने वाली आस्था) के हकीकत पसन्दी का सबक दे। और बजाय तंग जज़बात पैदा करने के अक्ल से काम लेना सिखाये।

अब हमें देखना है कि इतिहास की यह नयी परिकल्पना हमारे स्कूलों में इतिहास की शिक्षा पर किस तरह असर डाल सकती है। जाहिर है कि हम छोटे बच्चों के हाथ में असल ऐतिहासिक दस्तावेजों जिन से इतिहास के नतीजे निकाले जाते हैं, नहीं दे सकते। और अगर दें भी तो वह उसे इस्तेमाल नहीं कर सकते। यह बात तो अपनी जगह बिल्कुल दुरुस्त है कि इतिहास को तअस्सुब से निकल कर इल्मी अन्दाज में पेश करना चाहिए। अर्थात अध्यापक का काम यह है कि वह घटनाओं को मात्र घटनाओं के रूप में पेश कर दे, और बस, जहां तक नतीजे निकालने और फैसला करने का तअल्लुक है, बच्चों को बिल्कुल आजाद छोड़ दे। वह जो नतीजा निकालें और फैसला करें उनमें उस्ताद की जाती राय को दख्ल न हो। लेकिन नीचे की कक्षाओं में न तो यह बात मुमकिन ही है और न पसन्दीदः। क्योंकि फैसले की शक्ति एक पेचीदः और देर में पैदा होने वाली सलाहियत है। बच्चों को उनके हाल पे छोड़ देने में बहुत नुकसान हो सकता है। वह ऐसे नतीजे निकाल सकते हैं जो हकीकत के एतबार से गलत और नैतिक लिहाज से हानिकारक हो। अतएव उस्ताद को वह अवसर अच्छी तरह इस्तेमाल करना चाहिए जो नैतिक शिक्षा के लिये उचित हों और जिन से उच्च विचार और भावनायें पैदा हो सकें।

इतिहास की विषय वस्तु के चयन में हमें बच्चे की प्रवृत्ति को उसकी फितरत को अपना रहनुमा बनाना चाहिए। चूंकि छोटे बच्चों की फितरी दिलचस्पियां प्रारम्भिक मानव की दिलचस्पियों से ज्यादा मिलती जुलती हैं, इस लिये इतिहास की शिक्षा प्रारम्भिक इन्सान की जिन्दगी के हालात से शुरू होनी चाहिए कि किस तरह इन्सान ने जरूरत की जिन्दगी के हालात के मातहत अपनी व्यवस्तताओं में तब्दीली की। किस तरह बड़े–बड़े आन्दोलन वर्तमान सभ्यता और संस्कृति के विकास के कारण बने। छोटी क्लासों में यह सारी बातें एक साथ नहीं बताई जा सकतीं यहां एक सामान्य परिकल्पना पैदा करना हमारा लक्ष्य है अंतिम कक्षाओं में इतिहास को विशेषकर इसके

(शेष पृष्ठ ७ पर)

किस्त आठ

# कारवाने ज़िन्दगी

अबुल हसन अली हसनी नदवी
अनुवाद : एम हसन अंसारी

## वालिद साहब मरहूम के साथ

वालिद साहब की असल मसरूफियत तसनीफ व तालीम की थी। मतब और नदवा की निजामत के जरूरी काम से जो वक्त बचता वह सब "नुजहतुल खवातिर" की तसनीफ में खर्च होता। मुझे अभी तक याद है कि हमारे मकान के ऊपरी दक्खिनी पूर्वी कमरे में जो सड़क की तरफ है, उनकी मसहरी थी, उस के पास आराम कुर्सी, उस आराम कुर्सी पर बराबर वह लिखने में लगे रहते। मुझे कमसिनी के बावजूद उन के साथ खाना खाने का बहुत शौक था। इस इन्तेज़ार में मैं देर तक बैठा रहता। वह गैर मामूली तरीकः पर कम खूराक थे। लेकिन खाना लतीफ, सादा मगर नफीस होता। सुबह नाश्ता में भी शिर्कत करता जिस में सिर्फ चाय, एक आध बिस्कुट और थोड़ा सा देसी मक्खन होता, पुराने दोस्तों में से कोई बाहर से आता, तो उस की पुरतकल्लुफ दावत करते, और हम लोगों की गोया मौज हो जाती। वालिदः साहिबः खानों की तैयारी में न सिर्फ मश्शाक बल्कि नई नई चीजें तैयार करती रहतीं। मुझे उस ज़माने में मालूम नहीं कहां से यह शौक हो गया था कि वालिद साहब किसी मरीज को देखने भी जायें तो साथ जाऊं, बाज अवकात तांगा चल पड़ता तो भी मैं सवार होने की कोशिश करता। शहर के किसी रईस या नदवा से तअल्लुक रखने वाले मुअज्ज़ज़ आदमी के यहां जाना होता, तो मैं भी अपने उन्हीं कपड़ों में साथ हो जाता और वालिद साहब भी अज राहे शफकत और दिखावे से बरी होने की बिना पर मुझे साथ बिठा लेते, एक आध मर्तबः मेरी टोपी दुरुस्त करने का भी ख्याल आता है।

शहर में सबसे ज्यादा आना जाना नवाब सैयद नूरूल हसन खां की कोठी भोपाल हाउस, घसियारी मन्डी में था। नवाब साहब का (जो नवाब सिद्दीक हसन खां के बेटे थे) तअल्लुक वालिद साहब से दोस्ताना नहीं, बिरादराना व आशिकाना था। हमारे घर के बड़े छोटे उनको नूर मियां कहते थे। शायद कोई हफ्तः गुजरता हो कि वालिद साहब या वालिदः साहिबः का किसी तकरीब या उनवान से बड़ी कोठी न जाना होता हो, इस खानदान से अजीजदारी भी थी। नवाब साहब की बेगम साहिबः हम लोगों से ऐसा तअल्लुक रखती थीं जैसे हकीकी फूफियों या खालाओं का होता है।

नवाब साहब के अलावा वालिद साहब के मख़सूस दोस्तों और पीर भाइयों मुंशी सैयद मुहम्मद खलील साहब नेहटोरी, मुंशी रहमतुल्लाह साहब और शाह मुहम्मद खां साहिब और शेख मुहम्मद अरब साहब के यहां भी आना जाना था।

नूर मियां की कोठी के करीब हमारे बड़े हकीकी खालाजाद भाई सैयद मुहम्मद अहमद साहब बैरिस्टर की कोठी थी। हम लोग वहां भी जाते रहते थे। मुझे उस कमसिनी में भी जब ६–७ साल से ज्यादा उम्र न थी फूलों का बड़ा शौक था। मैं उन के चमन से फूल तोड़कर लाता और खुश होता। इन चन्द घरों के अलावा जिन से गोनागूं तअल्लुकात थे, वालिद साहब के साथ नदवा के सीरत के जल्सः में जो साल में एक बार बड़े एहतमाम से होता था, और मिठाई तकसीम होती थी, और किसी खास मेम्बर विशेषकर नवाब सदर यार जंग, मौलाना हबीबुर्रहमान खां शेरवानी की आमद पर किसी स्वागत समारोह में जाना याद है। एक मर्तबः वालिद साहब के साथ हंसवा जाते या आते हुए शैखे वक्त मौलाना सैयद नजमुद्दीन शाह की खानकाह फतेहपुर में जाना याद है जो एक टीले पर थी। अभी तक याद है कि उन्होंने कमसिन बच्चे की खातिर मिठाई से करनी चाही। मिठाई एक नेअमत खाना में थी, और उस में ताला पड़ा हुआ था, और कुंजी उनके घर के किसी आदमी के पास थी, मुझे उस आदमी का तलाश कराना और अपनी बेचैनी कि शायद वह न मिले, अभी तक याद है। यह याद नहीं कि उसमें कामयाबी हुई थी या नहीं, लेकिन इस की खुशी है कि एक कामिल बुजुर्ग की ज़ियारत हो गयी थी इस मौके पर यह बात भी काबिले जिक्र है कि मैं बचपन में अक्सर बीमार रहता। पानी किसी बर्तन में हजरत मौलाना सैयद ऐनुलकुजात साहब नक्शबन्दी मुजद्दिदी की खिदमत में जाता और वह दम करते। इस तरह मैं ने उनका

दम किया हुआ पानी बहुत पिया है, क्या अजब है कि उनकी मुबारक सांसों का कोई असर हिस्से में आया हो। वालिद साहब का माहौल चूंकि बिल्कुल इल्मी व तस्नीफी था, वह बकसरत अपनी जरूरत से किताबें मंगवाते थे, और लेखक भी उनको भेजते थे, बहुत सी किताबें और रिसाले ऐसे होते थे जिन पर वह एक नजर डालकर उनको एक तरफ रख देते थे। मैं उस ढेर से रिसाले आदि छांट कर ले जाता, आंगन में एक खुली अल्मारी थी उस में उनको सजाता। एक छोटा सा बोर्ड बनाया था जिस पर लिखा था कुतुब खाना अबुल हसन अली। मुझे अब भी याद है कि एक मर्तबः मैं रो रहा था या किसी बात पर जिद कर रहा था। वालिद साहब ने अपने पेशकार मोल्वी सैयद अब्दुल गफूर साहब शरर स्थानवी नदवी मददगार नाजिम नदवा को बुलाया था, वह जीने पर खड़े थे। वालिद साहब ने 'गुले रअना' का लेख जो उस समय पूरा हुआ था, उनके हवाले किया और हिदायत की कि वह मोलवी सैयद सुलैमान (मौलाना सैयद सुलैमान नदवी) को आज़मगढ़ भेज दिया जाये। लेख हवाले करते हुए मुझ से फरमाया कि चुप हो जाओ, मैं इस किताब में तुम्हारा नाम छपवाऊंगा। खुदा की शान कि आज उन की वफात के लगभग साठ साल के बाद इस की नौबत आ रही है कि "गुले रअना' के पांचवें एडीशन के प्रकाशन पर, मेरा इस किताब पर तबसरा और आबे हयात से मुवाज़ना बतौर मुकदमा शायः हो।

वालिद साहब के मतब में अगर कभी उनके कोई खास दोस्त या कोई खास शखसियत आ जाती तो उन की फरमाइश या वालिद साहब की ख्वाहिश पर मुझे बुलाया या मिलवाया जाता। एक मर्तबः मौलाना सैयद तजम्मुल हुसैन साहब देसनवी बिहारी तशरीफ लाये, गालिबन उन्होंने खुद मुझे बुलवाया और अपने हाथ का लिखा हुआ पूरा कुरआन शरीफ मुझे इनायत फरमाया जो अभी तक हमारे जाती कुतुबखाना की जीनत व बरकत हैं।

१६२१ में वालिद साहब पर जोड़ के दर्द का हमला हुआ, जब वालिद साहब कुछ संभले तो कमज़ोरी के बावजूद नवाब साहब की कोठी घसियारी मंडी में रात गुजारने के लिऐ जाया करते थे, मैं साथ जाता था। वहां जाना और वहां का नक्शा खूब याद है। उसी जमाने में गुले रअना लिखी थी।

## बाकायदा तालीम

मेरी बिस्मिल्लाह अगरचः रायबरेली में हो गयी थी, लेकिन लखनऊ ही में जहां अस्ल कियाम था, कुर्आन मजीद खत्म किया, मुझे वह हल्की सी दावत याद है जो इस तकरीब की खुशी में हुई थी। मेरी मकतब नशीनी तो मस्जिद नवाज़ी में हुई थी, जब कुछ आगे बढ़ा तो चचा मोहतरम मौलवी सैयद अजीजुर्रहमान साहब नदवी के पास जो गोलागंज में स्थित नदवा के दफतर में काम करते थे, जाना शुरू किया, जिसकी दूरी हमारे घर से मेरी उम्र के लिहाज से ज्यादा थी। पुल झाउलाल के नीचे से एक गली जाती थी और खातून मंज़िल के करीब एक इमारत में नदवा का दफ्तर और लाइब्रेरी थी वही मौलाना गुलाम मुहम्मद साहब शिमलवी का कियाम रहता था जिन से बढ़कर शान व शौकत वाला, मृदुभाषी (खुश तकरीर), सक्रिय और निष्ठावान (मुखलिस) सफीर नदवा को नहीं मिला। उनका मामूल था कि वह मुझे अपने पास बुला लेते, और शिमला से लाये हुए फल और मुरब्बे और मिठाइयां खिलाते।

उर्दू जरूरत भर को पढ़ लेने के बाद जिसके पाठ्यक्रम में ज्यादा तर मौलवी मुहम्मद इस्माईल साहब मेरठी की किताबें थीं जिन में सफीन–ए–उर्दू हम भाई बहनों की गोया बयाज़ और वजीफे की किताब थी और जिसकी बहुत सी नजमें हम लोगों को जबानी याद हो गयी थीं। अंजुमन हिमायते इस्लाम की फारसी की पहली दूसरी किताब से हमारी फारसी की तालीम शुरू हुई। इस के लिये शहर के उलमा के एक पुराने खानदान के तजर्बःकार उस्ताद मौलवी महमूद अली साहब चुने गये। यह खानदान गालिबन रियासत नाभा से आया था। उसमें बड़े–बड़े उलमा और खुश नवीस गुजरे हैं। मौलवी साहब बड़े सभ्य स्नेही और वयोवृद्ध गुरू थे। इसी जमाने में खुद वालिद साहब की लिखी हुई किताबें तालीमुल इस्लाम और नूरूल ईमान पढ़ी। और उन मौलवी साहब से जो खुद भी खुशखत थे, तख्ती और कागज पर लिखने की मश्क की जो उस जमाने में तालीम का एक खास हिस्सा था।

भाई साहब अपनी तालीम में तल्लीन थे। उन्होंने अरबी की शिक्षा प्राप्त की और देवबन्द से डिग्री हासिल करने के बाद अंग्रेजी शुरू की थी और अब वह मेडिकल कालेज लखनऊ में एम.बी.बी.एस. के तीसरे चौथे साल में थे। उनके पास समय न बचता। मुझे याद है कि मैं उनको हमेशा पढ़ते हुए देखता, और कभी उन के कमरे में

चला जाता तो अटपटा सा महसूस करता। वालिद साहब का सायः सर से उठजाने के बाद अचानक उनमें जबरदस्त बदलाव आया और बाप की शफकत बल्कि बाज हैसियतों से मां की भी शफकत और दिलदारी उनमें आ गयी।

वालिद साहब बहुत कम बोलने वाले, वकार और तमकनत से भरपूर थे, जिस की वजह से घर पर एक खामोशी और सुकून की फजा तारी रहती। जब हमारी फूफी साहिबः और मोहतरम चचा सैयद तल्हा साहब छुट्टियों में लाहौर से आते या हमारे रिश्ते के दादा सैयद अब्दुल्लाह साहब तहसीलदार भोपाल से आते उस वक्त वालिद साहब को बोलते हुए और मजलिस में शिर्कत करते हुएं देखते और घर में खास चहल पहल और रौनक नजर आती। नीचे के कमरे में, जो गली की तरफ था, हमारे मामूजाद भाई सैयद हबीबुर्रहमान और हंसवा के बाज चचाजाद भाई जो शहर के किसी स्कूल या नदवा में पढ़ते होते, रहते थे। उनकी वजह से भी बाहर की हवा के झोंके अन्दर आ जाते, और शहर की घटनाओं की जानकारी होती। (जारी)

प्रस्तुति : एम० हसन अंसारी

(पृष्ठ १५ का शेष)

काफी इज्जत होती कुछ बादशाहों को भी इस का शौक था। चुनांचि इस्माईल आदिलशाह खुद कवि था। वह "फानी" तखल्लुस (उपनाम) करता था। संगीत का बड़ा शौक था। संगीत के बाकमाल लोग दरबार में मौजूद रहते। विद्वानों और संतों (सूफियों) और मुख्यतः ईरानी लोगों की बड़ी इज्जत करता। अदालत की भाषा मराठी थी। इस लिए मरहटों ने उस जमाने में बड़ी उन्नति की। फौज में उनकी भरती बड़ी संख्या में थी।

इस खानदान की शाही बेगमात सल्तनत के कामों में बहुत हिस्सा लेतीं। चुनांचि इस्माईल आदिल शाह की मां ने अगर जोड़ तोड़ न किया होता तो इस्माईल आदिल तख्त से वंचित हो जाता। शाहजहां के जमाने में उन की दशा एक अधीन रियासत की हो गयी थी। अली आदिलशाह के काल में डेढ़ लाख पैदल फौज अस्सी हजार सवार और सात सौ पैंतालीस जंगी हाथी थे। बन्दरगाहों के जरिये व्यापरिक सम्बन्ध भी कायम थे। आखिरी जमाने में अकसर बन्दरगाहों पर पुर्तगीजों का कब्जा हो गया था और विदेशी व्यापार कुल उनके हाथ में आ गया था। (जारी)

हबीबुल्लाह आजमी

(पृष्ठ १७ का शेष)

पैदा करके तथा गरीबी पर कन्ट्रोल करके लोगों को भौतिकता (माद्दीयत) के तूफान से मिलकर रूहानियात से करीब करके इस महामारी पर नियंत्रण कर सकते हैं। हमारा कर्तव्य है कि हम नई नस्ल को जो हमें एक और दौलत के रूप में दी गई है हर प्रकार की हानि से बचाकर उन्हें उच्च शिक्षा देकर उनके अन्दर रचनात्मक जज्बा पैदा करें ताकि वह देश व समुदाय के लिए लाभकारी तथा उसके निर्माण में बराबर के हिस्सेदार बन सकें।

प्रस्तुति : हबीबुल्लाह आजमी

(पृष्ठ १८ का शेष)

अनुमति है। मक्का एवं मदीना इससे अपवाद रहेगे इस लिये कि वैटिकन सिटी में भी कोई मस्जिद नहीं है किन्तु कल यह हो सकता है कि वहां किसी मस्जिद का निर्माण हो जाए फिर मक्का एवं मदीना में भी कलीसा निर्माण की मांग हो। तौरात, इंजील को उनके मानने वालों ने ऐसा परिवर्तित कर दिया कि खुद उनके लिए इन आसमानी पुस्तकें कहना कठिन है सर्वधर्म संवाद के समय पर भी उनकी यह मांग होती है कि इस को एक मानवी घोषित कार्य करके आपस में वार्तालाप किया जाए फिर जहां तक वह जाते है एक मुसलमान उसके बारे में सोच भी नहीं सकता किन्तु वह उनको इस्लाम से इतना दूर ले जाना चाहते हैं कि उनमें केवल इस्लाम का नाम बाकी हो जैसे कोई मृत शरीर जिसमें आत्मा न हो किसी से भी मुकाबला की बात ही न रहे यह विश्वव्यापक ऐसी साजिश है जो पिछले भयों तथा कठिनाइयों से अधिक भयकर है – यहूदियों, ईसाइयों से मुसलमानों की कभी कोई सधि न हो सकेगी वह केवल एक ही सूरत में उनके सगी साथी एवं परममित्र हो सकते हैं कि वह इस्लाम ही को त्याग दें कुरआन स्वयं इस पर साक्षी है। अनुवाद : हुजूर सल्ल० को सम्बोधित करते हुए कहा गया कि आप जब तक उनके धर्म विधान को अंगीकार न करेंगे वह कभी आप से राजी नहीं हो सकते । पूरी उम्मत के साथ आज भी यह व्यवहार किया जा रहा है। उम्मत की जिम्मेदारी है कि वह इन साजिशों को ज्ञात रखें एवं अपने बैरियों के षडयंत्रों से चौकन्ने रहें ताकि कोई भी उनके ईमान को न खरीद सके न बेच सके।

सत्तरहवीं किस्त

# भारत का संक्षिप्त इतिहास

# मुस्लिम काल

सै० अबू ज़फर नदवी

## आदिल शाही बादशाह

इस सल्तनत के संस्थापक यूसुफ सुल्तान निजाम बहमनी का एक तुर्क अफसर था जो प्रारम्भ में अस्तबल का दारोगा था। फिर निजामुल मुल्क के पास बरार गया और निजामुल मुल्क के शहीद हो जाने पर दुश्मनों को पराजित करके शत्रु घन का सारा माल लेकर दरबार में हाजिर हुआ। बादशाह बहुत प्रसन्न हुआ और उसको हजारी सरदारों में शामिल कर लिया। वह आदिल खां की पदवी पहले ही पा चुका था। कुछ दिनों के बाद बीजापुर का सूबेदार भी हो गया।

सुल्तान महमूद बहमनी के बाद १४८६ ई० (८६५ हि०) में उसने स्वतंत्रता का एलान कर दिया और अपना नाम आदिलशाह रखा। कासिम बुरीद तुर्क और दूसरे सरदारों को उससे ईर्ष्या पैदा हो गई। उन्होंने साजिश करके विजय नगर के राजा को भी बुला लिया और चारों तरफ से वे आदिल शाह पर टूट पड़े। परन्तु यूसुफ आदिलशाह ने सब पर विजय पाई और सारे कांटों से सलतनत को पाक कर डाला जब इतमिनान हो गया तो उसने अपनी सल्तनत में शीया धर्म का प्रचार किया। इससे फिर सरदारों में बदला लेने का जोश पैदा हुआ। अन्त में एक सख्त लड़ाई के बाद सब में सुलह हो गयी।

१४६२ ई० (८६८ हि०) में वह सख्त बीमार हुआ। राजा विजय नगर उसके मरने की गलत खबर सुनकर चढ़ दौड़ा। युसुफ आदिलशाह ने उसको प्राजित कर दिया। १५०६ ई० (६१५ हि०) पुर्तगीजों से गोवा वापस लिया। १५१० ई० (६१६) में आदिलशाह का देहान्त हो गया।

अपने बाप के मरनेपर इस्माईल आदिल शाह तख्त पर बैठा लेकिन कमाल खां नामी एक सरदार ने उसको नजरबन्द करके खुदबादशाह बनना चाहा। इस्माईल की मां ने कमाल खां को मरवा डाला और उसके लड़के युद्ध में मारे गये। इस प्रकार ईस्माईल शाह के लिए रास्ता साफ हो गया। ईरान के बादशाह का दूत जब उपहार लेकर आया तो उसने उसका बड़ा सम्मान किया और उसी दिन से सफवी बादशाहों का नाम खुतबों में लिया जाने लगा और सत्तर वर्ष तक यह रस्म जारी रही। ईस्माईल शाह खुद बड़ी हिम्मत वाला और दयालु बादशाह था। हमेशा विद्वानों और विशेषज्ञों की संगत में रहता। गायन और शेर शायरी में रूचि लेता। खुद भी कवि (शायर) था। "फानी" उस का तखल्लुस (उपनाम) था। १५३४ ई० (६४१ हि०) में उसका देहान्त हो गया।

इस्माईल के बाद उसका लड़का मुल्लू आदिलशाह बादशाह हुआ। यह शराब का आद्दी और तबीयत का कमजोर था, लोगों को दिन रात अपमानित करता। इस से तंग आकर यूसुफ शहना और असद खां लारी ने उस को अन्धा कर दिया। मुल्लू के बाद उसका भाई इब्राहीम आदिल शाह बादशाह हुआ। यह बड़ा बहादुर और निडर था। उस ने हनफी धर्म इख्तियार कर लिया। फौजों से भी मुगलों को निकाल बाहर किया। अदालत की भाषा जो फारसी थी मरहटी से बदल दिया।

इब्राहीम पहला बादशाह है जिसने शीया सुन्नी गृह युद्ध से तंग आकर मरहटों को हर काम में दाखिल कर लिया और बारह हजार प्यादों का अफसर बना दिया। उसकी सारी उम्र आपस की लड़ाई में व्यतीत हुई। १५५६ में उसका देहान्त हो गया।

बाप के मरने के बाद अली आदिल शाह ने सल्तनत संभाली। बाप के खिलाफ उस ने फिर शीया धर्म अपना लिया और हर जगह से शीया उलमा को बुलाकर अपने दरबार में जगह दी। उसने केवल कुछ सरहदी किले हासिल करने के लिए, जिस को निजाम शाह तनहा नहीं ले सकता था, विजय नगर के राजा की इस कदर खुशामद की कि जब राजा का लड़का मर गया तो खुद जाकर शोक प्रकट किया। इस का नतीजा यह हुआ कि जब राजा की फौज अली आदिल शाह के साथ निजाम शाह को तबाह करने के लिए चली तो उसने इस्लामी मुल्क में पहुंच कर सौ वर्षों का द्वेष (कीना) इस प्रकार निकाला कि कुर्आन, मस्जिद,

मर्द औरत किसी चीज का सम्मान बाकी नहीं रखा और लौटते समय उन को कम जोर समझ कर पक्षक (फरीक) से एक–एक जिला प्राप्त किया। अली आदिलशाह को यह बात सख्त नागवार हुई। बीजापुर के एक सरदार शाह अबूतुराब की सलाह से यह करार पाया कि तमाम इस्लामी रियासतें मिलकर इस राजा की जड़ ही उखाड़ दें। चुनांचि आपस में महब्बत बढ़ाने के विचार से हुसैन निजाम शाह की लड़की चांद बीबी के साथ अली आदिलशाह की शादी कर दी गयी। शोलापुर का सरहदी किला जिस के कारण हमेशा दोनों में लड़ाई होती रही है, जहेज में दिया गया। जब दकिन की तमाम रियासतों में बात तय हो गयी तो १५६४ ई० (६६२ हि०) में सब मिलकर विजय नगर के स्थान तालीकोटा में पहुंचे। राजा की फौज भी आ गयी। दोनों पक्षों में सख्त लड़ाई हुई। विजय नगर का राजा राम राज घमन्ड में घोड़े पर सवार तक न हुआ। अन्त में वह इस लड़ाई में मारा गया और उसकी फौज तबाह हुई। मुसलमानों ने विजय नगर को इस प्रकार तबाह कर डाला कि दोबारा फिर आबाद होना नसीब न हुआ।

अली आदिल शाह को १५८८ ई० (६८८ हि०) में एक ख्वाजा सरा ने रात के समय कत्ल कर दिया। इसके शासन काल में अकबर बादशाह के दूत दो बार बीजापुर आये। अन्तिम बार उसकी मृत्यु के समय भी मौजूद थे। बीजापुर की जामा मस्जिद, तालाब शाहपुर और आबकारें उसकी यादगार है।

अली आदिल शाह का भतीजा इब्राहीम आदिल शाह द्वितीय उसके बाद तख्त पर बैठा जो केवल नौ वर्ष का था। उसके दरबार का एक सरदार कामिल खां और चान्द सुल्ताना सल्तनत की देखभाल करतीं। पहले तो कामिल शाह ने अपना सिक्का जमाया। फिर उसके कत्ल के बाद दिलावर खां ने कब्जा कर लिया। १५८४ ई० (६६२ हि०) में हुसैन निजामशाह की शादी आदिल शाह की बहन से हुई। १५८६ (६६५ हि०) में इब्राहीम आदिल शाह की शादी मुहम्मद कुली कुतुबशाह की बहन से हुई। १५८६ ई० (६८८हि०) में शाहजादा बुर्हान निजाम की प्रार्थना पर शाही तख्त दिलाने के लिऐ इब्राहीम ने हमला किया और काफी दिनों तक यह दोनों सल्तनतें आपस में लड़ती रहीं। १५६४ ई० (१००३ हि०) में इब्राहीम आदिलशाह द्वितीय के भाई शाहजादा इस्माईल ने बगावत की और कुछ लोग भी उसके मददगार हो गये परन्तु अन्त में गिरफतार कर लिया गया। १६२७ ई० (१०३६ हि०) में इब्राहीम के मरने के बाद उस का लड़का मुहम्मद आदिल शाह बादशाह हुआ। उसने शाहजहां की तख्त नशीनी (राज्य रूहण) पर मुबारकबादी के दूत भेजे। उसका अधिकतर समय निजाम शाह और मुगलों से लड़ने में गुजरा। वह बड़ा नेक दिल बादशाह था। गरीबों को आराम देने की हमेशा कोशिश करता। मुहम्मद आदिलशाह के मरने पर उसका कमसिन लड़का बच्चा आदिल शाह १६५६ ई० (१०६७ हि०) में तख्त पर बैठा और उसके बाद उसका लड़का सिकन्दर आदिल शाह ने कुछ दिनों हुकूमत की। शहंशाह औरंगजेब के सेनापति गाजीयुद्दीन खां ने १६८५ हि० (१०६७हि०) में बीजापुर को फतेह कर लिया। सिकन्दर दौलताबाद में नजरबन्द कर दिया गया और बीजापुर का प्रान्त मुगल राज्य में शामिल कर लिया गया।

सल्तनत के आखिरी काल में सरदारों की असहमति के कारण देश का बुरा हाल हो गया था। मुगलों की शक्ति दिन बदिन बढ़ती जा रही थी जिससे दकिनी बहुत भयभीत हो गये और बजाय इसके कि फौजी शक्ति पैदा कर के बहादुरी से मुकाबला करते दरबारी सरदार हमेशा यह कोशिश करते कि स्वयं अधीनता को स्वीकार कर लेते और मरहठों को माली सहायता देकर मुगलों पर हमला कराया करते जिससे दिलेर होकर मरहठों ने दोस्त दुश्मन सबको लूटना शुरू किया। इसी आपस की लड़ाई का नतीजा आदिलशाही सल्तनत की तबाही थी।

## आदिलशाही सल्तनत के काम

आदिल शाही सल्तनत दकिन की तमाम सल्तनतों में सबसे मजबूत थी। दो सौ वर्ष से अधिक उनकी हुकूमत रही। दकिन की दूसरी इस्लामी सल्तनतों से सरहदी मामलात में बहुदा झगड़ा रहता और जब तक निजाम शाही सल्तनत रही हमेशा उनसे आदिल शाही लड़ते भिड़ते रहे। इसके बावजूद देश को उन्नति देने में कभी लापरवाही नहीं बरती। उनकी राजधानी बीजापुर थी और इस शहर की आबादी को इस प्रकार तरक्की दी और ऐसी बड़ी–बड़ी इमारतें बनवाईं कि शहर की शोभा दुगुनी हो गई। मस्जिद और मकबरे ऐसी उच्च कारीगरी से तैयार किये गये कि अब तक पर्यटक उसे देखने जाते हैं।

दरबार में कवियों (शायरों) की

(शेष पृष्ठ १३ पर)

# आत्महत्या कारण निवारण

अनीस अहमद नदवी

मनोविज्ञान के विशेषज्ञों का कहना है कि बहुत से लोगों में एक प्रकार का बदला लेने का जज्बा होता है और लोग अपनी जान लेकर अपने दोस्तों में या सगे सम्बन्धियों में एक प्रकार के जुर्म का एहसास पैदा करते हैं कि उन्होंने उस समय उन की सहायता नहीं की जब उन्हें मदद की आवश्यकता थी और एक बात यह भी कही जाती है कि जेहनी तौर पर बीमार लोगों में या **Hallucination** (जेहनी बीमारी की वजह से काल्पनिक चीजों या सोचना) करने वालों में आत्महत्या की घटनाएं अधिक होती हैं। मालूम होना चाहिए कि **Halluciation** अपने खुद को हानि पहुंचाने को प्रोत्साहित करता है। वह ऐसी आवाज सुनते रहते हैं जो उन्हे आत्महत्या के लिए प्रेरित करती हैं।

ऐसा मालूम होता है कि बहुत सारी मनोवैज्ञानिक (नफसियाती) बीमारियां और समस्याएं हैं जो आत्महत्या का कारण बनती हैं जैसे अकेलापन, घृणा, प्रेम, डर बीमारी के कारण दर्द, जल्दबाजी अपनाना व फादर का डर। यह चीजें विभिन्न लोगों की मनोदशा के अनुसार भिन्न हो सकती हैं लेकिन अधिकतर इंसान इन्हीं बुनियादों पर आत्महत्या करता है।

संसार एक ऐसी जगह है जहां अल्लाह तआला ने आराम सुख सुविधा, शान्ति और ऐश के अनगिनत साधन पैदा किये हैं और इसी लिए तो दुन्या एक परीक्षा स्थल है। यहां पगपग पर मेहनत, तकलीफ, सब्र की परीक्षा लेने वाली, होश उड़ा देने वाली चीजें है। आशएं ऐसी कि जादुई स्वपनों का रूप ले लेती हैं लेकिन जो व्यक्ति इस स्वप्न के जादू को तोड़ देता है वही सफल होता है। वही संसार और आखिरत के खजाने का मालिक बन जाता है।

यह दुन्या है यहां तो ठोकर लगना ही है। ऐसा भी हो सकता है कि अभी आप एक ठोकर से संभलने भी न पाएं कि दूसरी ठोकर लग जाए। परन्तु इन मुसीबतों और असफलताओं से घबराना न चाहिए क्योंकि इन कष्टों को झेलने और उन्हे सहन करने के गुर हमें सिखाए गए हैं। इस सिलसिले में इंसान अपने हमजोलियों मित्रों, बाप दादा व पूर्वजों के अनुभवों और ज्ञान से लाभ उठाकर सफल हो जाता है और अपने जीवन को सुखी बना लेता है और जो व्यक्ति समाज से कट जाता है या समाज के सिद्धान्तों को पददलित (पामाल) करता है और अपने पूर्वजों के अनुभवों से लाभ नहीं उठाता, ऐसा इंसान ठोकर लगने पर व नाकामी पर मायूसी के घटाटोप अन्धकार में डूब जाता है और फिर जिन्दगी को कठिन और मौत को आसान समझने लगता है।

आखिर क्या कारण है कि आजकल लोगों और खास कर नवजवानों में आत्महत्या की प्रवृत्ति पनप रही है। नौजवानों में जिन्दगी के तई एक नकारात्मक रूजहान पैदा हो रहा है। बहुत सारे लोग दुन्या की सारी शोभाओं से मुंह मोड़ कर अपनी जिन्दगी को जानबूझ कर खूनी पंजों के हवाले कर देते हैं। इस के कुछ कारण ऐसे हैं जो इन मनोवैज्ञानिक कारणों के अतिरिक्त जिन्हें हमने बयान किया है। यह कुछ ऐसे कारण हैं जिनको मनोवैज्ञानिक बीमारी नहीं समझते हालांकि वह कारण ऐसे हैं जो बीमारी की जड़ हैं।

सबसे महत्वपूर्ण कारण जो इक्कीसवीं सदी के इंसान के लिए तबाही का कारण बनी हुई हैं वह धन दौलत की चाहत का दलदल है। यह एक ऐसा दलदल है जिसमें हरइंसान फंसता जा रहा है। हर चीज और हर समस्या का हल भौतिकता और सनसाधनों में तलाश किया जाता है। जीवन शैली साधारण बेतकल्लुफ होने के बजाय पुरतकल्लुफ और सुख सुविधाओं के साधनों से परिपूर्ण होती जाती है। जितना अधिक सुख साधनों का इस्तेमाल होगा उसी कदर जिन्दगी आसाधारण होगी और ऐसा जीवन गुजारने वालों का खर्च बढ़ता जाता है जिस को पूरा करने के लिए इंसान अपने एक एक मिनट का और छोटी–छोटी चीजों का हिसाब रखता है और अपने हर कार्य और कोशिश को सफलता और लाभप्रद बनाने की चेष्ठा करता है। अपनी सफलता को देख कर प्रसन्न होता है लेकिन नतीजा सकारात्मक न निकलने पर और अपने अमल और कोशिशों को निष्फल होता

देख कर वह निराश और झटकाव के समुद्र में डूब जाता हैं जहां से उसको निकलने के लिऐ न दीन होता है न ईमान नहीं पालन पोषण व शिक्षा और ना ही संयमियों जैसा सन्तोष ना ही संतों जैसा संसार त्याग की शिक्षा और नरक में जलने का डर होता है और ना ही दुन्या में धिक्कारे जाने का भय नहीं दोस्तों की सलाह। आदमी समाज से बिल्कुल अलग–थलग हो जाता है। इस का नतीजा यह होता है कि इंसान को निराशा और असंतोष के इस खड से निकालने वाला किसी तरह का कोई उपाय काम नहीं करता और दुन्या हर तरह की सुख सुविधाओं व रंगीनियों और आकर्षणों के बावजूद अन्धकार चिन्ताओं और कष्टों से परिपूर्ण मालूम होती है। इसी तरह के इंसान के लिये जिन्दगी को मौत के हवाले करना आसान हो जाता है।

इक्कीसवीं सदी का इंसान हर हर पग पर माद्दाप्रस्त (भौतिकता का पुजारी) हो गया है। उस का हर कदम धन–दौलत, सुख सुविधा, को प्राप्त करने की शिक्षा में उठता है। उसकी सबसे बड़ी मिसाल तालीम है। इस समय शिक्षा को पूरी तौर पर सुख सुविधा, माल व दौलत प्राप्त करने का एक साध न स्वीकार किया जा चुका है। हर व्यक्ति दो चार की तरह जोड़ता है कि मेरा बच्चा तालीम हासिल करेगा तो इंजीनियर या डाक्टर बनेगा तो पचासों हजार रूपया कमाएगा। एक अच्छी शान्दार जिन्दगी गुजारेगा, पोस्ट लोकेलिटी में उसका घर होगा, मां बाप उस पर गर्व करेंगे। बच्चा भी सुबह शाम ऐसी बातें सुनते सुनते यही समझता है कि सब कुछ धन दौलत ही है, हमें अपना कैरियर ऐसा बनाना है जिससे हम अधिक से अधिक सुख सुविधा और धन प्राप्त कर सकें। यदि बच्चे को दिलचाही सफलता मिलती है तो कोई समस्या नहीं और यदि दिल चाही सफलती नहीं मिलती तो मां बाप के साथ ही उस का अपने सपनों का ताज महल टूट कर बिखिर जाता है मां बाप की तकलीफ देखी नहीं जाती और इस तरह मौत को गले लगाकर सारी समस्याओं को समाप्त कर देता है या कर देना चाहता हैं।

हालांकि होना तो यह चाहिए कि बच्चों को हालात से लड़ना सिखाया जाय उनके अन्दर यह भावना और चेतना पैदा की जाय कि उन्हें सख्त से सख्त परिस्थितियों का मुकाबला करना है। इसलिये उन्हें असफलताओं और पराजय को भी मुस्कराते हुए स्वीकार करने की शिक्षा दी जाय। पूरी कोशिश के बाद सफलताओं का मर्दानावार मुकाबला तो असल बहादुरी है क्योंकि असफलता को सफलता का सोपान (जीना) बनाना ही असल असफलता है। एक विशेषज्ञ ने कहा था कि **Failure is key to success** – असफलता सफलता की कुंजी है।

यह जमाना ऐसा है कि जान लेना और जान देना दोनों आसान हो गया है। जरा जरा सी बात पर लोग जान ले लेते हैं और मामूली सी बात पर जान दे देते हैं। विधरबा या बुन्देल खण्ड के किसान हों या आज कल के नवजवान, गरीबी या निर्धनता के शिकार लोग हों या दौलत के नशे में बदमस्त, इश्क के बीमार हों या बेरोजगारी के मारे लोग हों मौत को सारी परेशानियों का हल समझ लेते हैं। हाईस्कूल या इण्टर और दूसरी परीक्षाओं के नतीजे आते ही असफल होने वाले अपनी आशाओं का दफतर जला अपने को किसी बहती हुई नदी के हवाले कर देते हैं। आत्महत्या चाहे जैसी हो बहुत बुरी चीज है। इन्सान के कष्टदायक जीवन का अन्त नहीं बल्कि उसका प्रारम्भ होता है। नरक की आग की धधकती हुई लपटें उसे अपनी लपेट में लेने के लिए लपकती हैं और वह सदा के लिऐ जहन्नम के अजाब से पीड़ित रहता है। हदीस शरीफ में आता है कि इंसान जिस तरह आत्महत्या करता है वही कष्ट उसे हमेशा दिया जाता रहेगा।

आत्महत्या इस्लाम में हराम है। आत्महत्या करने वाले मुसलमानों की नमाजे जनाजा भी नहीं पढ़ी जाती। आत्महत्या करने वाला सीधे जहन्नम में जाता है। यही कारण है कि आत्म हत्या की घटना मुसलमानों में बहुत कम होती है। खास कर इस्लामी मदरसों के विद्यार्थियों में आत्महत्या की घटनाएं बिल्कुल नहीं पाई जातीं क्योंकि वह अल्लाह तआला से अच्छी उम्मीदें रखते हैं। इसलिए वह कालेज के नवजवानों की तरह मायूसी व निराशा के शिकार नहीं होते। असफलताओं को भी खुदा के फैसले के संदर्भ से समझते है कि जिन्दगी है तो सफलताओं और असफलताओं का सिलसिला जारी रहेगा और मेहनत की गई तो कामयाबी कदम चूमेगी। इसलिए जरूरी है कि इंसान अल्लाह से अच्छी उम्मीद लगा कर और सही रास्ता अपनाकर अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिऐ संघर्ष करे उसको सफलता अवश्य मिलेगी।

नवजवान मुल्क व मिल्लत की दौलत हैं इन्हीं पर देश और समुदाय की उन्नति निर्भर है। अगर यह बहुमूल्य दौलत हमारी लापरवाही से नष्ट हो जाती है तो न केवल भविष्य का इतिहासकार हमें कभी माफ करेगा बल्कि उसके साथ साथ हमारा भविष्य भी खतरे में होगा। हमें इस खतरे का निवारण करना होगा और हम नवजवान नस्ल के लिए शिक्षा व उसके अवसर

(शेष पृष्ठ १३ पर)

# ऐ ईमान वालो सावधान

बिलाल अब्दुल हयी नदवी

मौजूदा इस्लामी जागरण के बाद इस्लाम दुश्मन शक्तियों ने इस्लाम एवं मुसलमानों को पराजित करने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ी है। यूरोप सदैव इसमें प्रथप रहा है, अब तो अमरीका ने इसका नेतृत्व अपने हाथ में ले लिया है, यहूदी मस्तिष्क ने अमेरिकी साधनों को इसके लिये निःसंकोच प्रयोग करना आरम्भ कर दिया है यूरोप, अमरीका, इसराईल का एक ऐसा त्रिकोण तैयार हो गया है जो पूरे इस्लामी जगत को निगलना चाहता है। अदल व इन्साफ (न्याय) समानता एवं स्वतंत्रता के परदे में झूठ, फरेब, दुष्ठता एक ऐसा सिलसिला है जिसने पूरे इस्लामी विश्व को हिला कर रख दिया है अच्छे अच्छे बुद्धि जीवी एवं शिक्षित लोग इसके शिकार हो रहे हैं।

आतंकवाद के शब्द का ऐसा ढिंढोरा पीटा गया कि यह शब्द ही अपने मूल अर्थ से हटकर कुछ का कुछ हो गया परन्तु लोगों की जबानें नहीं थकीं, नाइन इलेवन की घटना हो या अन्य घटनायें, यह सिद्ध हो चुका है कि यह सब एक ड्रामा था जो मुसलमानों के लिये स्टेज किया गया था ताकि उन पर लाँहन लगाई जा सके। उसके द्वारा उनपर हर प्रकार की निर्दयी कार्यवाहियां की जा सकें यह सब कुछ किया गया परन्तु विश्वास की शक्ति ने मुसलमानों को झुकने नहीं दिया येरोपी तथा अमरीकी सारी योजनाएं विफल हो चुकी हैं उनको अन्दाजा हो गया कि इनसे प्राण तो लिये जा सकते हैं परन्तु ईमान नहीं । इन निर्दयी कारवाहियों ने ईमान की बुझी हुई चिंगारी को पुनः ज्वलित कर दिया दुनिया के कितने ऐसे स्थान हैं जहां मुसलमान केवल नाम मात्र के रह गये थे बल्कि कुछ स्थानों पर सम्पूर्ण ढांचा ही परिवर्तित हो चुका था परन्तु इन घटनाओं ने उनको पुनः मुसलमान बना डाला।

अब वातावरण धीरे–धीरे परिवर्तित हो रहा है इस्लाम दुश्मन शक्तियों को आभास हो चुका है कि उनकी भूतपूर्व चालें कामयाब नहीं हो सकतीं तो उन्होंने अपनी कूटनीति ही को बदल दिया, उनकी कोशिश ये है कि मुसलमानों की उनकी इस्लामियत से हलके–हलके, निष्काशित किया जाये उनमें उन धार्मिक धड़ों को बढ़ावा दिया जाय जो इस्लाम का गलत चित्र प्रस्तुत करते हैं। धार्मिक लोगों के बीच में विवादों को जन्म दिया जाये। जो धर्म से बहुत निकट नहीं है एवं अमेरिकन, योरोपियन सभ्यता पर मंत्रमुग्ध हैं। उनको सभ्यता कला के नाम पर धर्म से इतना दूर किया जाय कि उनके पास इस्लाम किंचित मात्र भी न बचे, वह मसीहियत को स्वीकार भले ही न करें किन्तु मुसलमान भी न रहें यह कूटनीति पूर्व में भी कई मुस्लिम देशों में चलाई गई उनके मनभावन नतीजे भी उनके सम्मुख आ चुके हैं।

यही खतरनाक कूटनीति आज पुनः चलाई जा रही है। विश्व सतह पर यह कोशिशें की जा रही हैं समाजी भाई चारे के नाम पर, सर्व धर्म संवाद सम्मेलनों के नाम पर, इस बात की आवश्यकता एवं लाभान्वित में कोई सन्देह नहीं कि विभिन्न धर्मों के अनुयायी एक दूसरे के निकट आयें, एक दूसरे को समझने की कोशिश करें, उनमें मृत मानवी मूल्यों को जीवित किया जाए, शान्ति तथा सुरक्षा का वातावरण पैदा करने की सम्मिलित चेष्ठाएं की जाएं। लेकिन यह सब केवल उसी समय तक उचित है जब तक धर्मों को बीच में न लाया जाए केवल समान मानवी मूल्यों पर बात की जाये अगर धर्म को बीच में लाया गया तो धर्म पर इसका असर पड़ना निश्चित है। दूसरे धर्म इतने परिवर्तित हो चुके हैं के उनके लिऐ कोई परेशानी की बात नहीं लेकिन इस्लाम एक स्थायी सभ्यता है उसकी एक ठोस व्यवस्था है। वह एक क्षण के लिऐ भी अपने किसी अकीदे (विश्वास) के एक बिन्दु को छोड़ना धार्मिक आत्महत्या के समान है। इस्लाम मानव एकता का तो प्रचारक है परन्तु "सर्व धर्म एकता" की कल्पना भी सम्भव नहीं है।

आज अगर इन सम्मेलनों में वहदते अदयान (सर्वधर्म एकता वाद) का प्रचार खुले रूप में न किया किन्तु उसकी झलक तो सामने आती है ईसाइयों कि तरफ से यह मांग कि सभी इस्लामी देशों में कलीसा निर्माण की अनुमति दी जाए इस लिये कि ईसाई देशोंमें मस्जिद निर्माण की

(शेष पृष्ठ १३ पर)

# इस आत्महीनता का अन्त कब तक

नजमुस्साकिब अब्बासी, गाजीपुरी

दोष सिद्ध हुए बिना स्वयं को पापी समझने की मुसलमानों की सोच ने पूरी कौम को आत्महीनता की गहरी खाई में डाल दिया है कि उसे हर समय दो प्रकार का भय सताता है कि पता नहीं कब उनके समुदाय के किसी व्यक्ति का सर फिर जाए और वह आतंकी घटना को अंजाम देकर समस्त समुदाय को बदनाम करने पर उतारू हो जाये। दूसरा भय ये रहता है कि निर्दोष होने के बावजूद कहीं उन्हें स्वयं या उनके घर वालों को पुलिस या गुप्तचर एजेंसियों के अत्याचार का शिकार न होना पड़े। जहां तक अपनी ओर उठती उंगलियों और संशय भरी दृष्टि से देखने का प्रश्न है तो ऐसा आभास होता है कि मुसलमानों की इसकी आदत पड़ चुकी है मगर आश्चर्य है कि ऐसे लोगों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है।

आत्महीनता के चक्रव्यूह से निकलने के लिऐ आवश्यक है कि मुसलमान सबसे पहले ये जानने की चेष्ठा करें कि आतंकी है कौन? इस्लाम को ही आतंकवाद के नाम पर निशाना क्यों बनाया जा रहा है। अल्लाह और उसके रसूल (सन्देष्टा) की सरल शिक्षा देने वाले उलमा के ऊपर समुदाय के युवकों को दिग्भ्रमित करने का आरोप क्यों लगा रहे हैं? मानवता का सन्देश देने वाले मदरसों को आतंकी गतिविधियों का केन्द्र क्यों बताया जा रहा है? सबसे महत्वपूर्ण बात ये है कि नाइन इलेवन की घटना के बाद ही इन आरोपों की बाढ़ क्यों है?

लगभग तीस वर्ष पहले आई०आर०ए० नामक आतंकी संगठन ने ब्रिटिश सरकार को नाकों चने चबवाए थे। उस आतंकी संगठन ने ब्रिटिश संसद से लेकर प्रधानमंत्री आवास क्षेत्रों पर बमों से हमले किये मगर कभी भी किसी ने आईआर०ए० सदस्यों के धर्म रोमन कैथोलिक को निशाना नहीं बनाया। बाबरी मस्जिद विध्वंस कांड और रथ यात्रा के माध्यम से दंगा भड़काने के मुख्य आरोपी लालकृष्ण अडवाणी ने कहा था कि "सारे मुसलमान आतंकी नहीं लेकिन जितने भी आतंकी हैं वह मुसलमान ही क्यों?" ये बात समझ से परे है कि आई०आर०ए० के बारे में कभी किसी ने ऐसा क्यों नहीं कहा कि "माना सारे ईसाई आतंकी नहीं मगर आई०आर०ए० से जुड़े जितने भी आतंकी है वह ईसाई हैं। निहत्थे फिलिस्तीनियों पर जब इजरईली गोलियों की बौछार करते हैं तो पश्चिमी देश यहूदियों को अर्थात यहूदी धर्म को बुरा भला क्यों नहीं कहते।

अजब विडम्बना है कि जब हिटलर ने यहूदियों का कत्ले आम किया था तो किसी ने ये नहीं कहा कि ईसाइयों ने यहूदियों को मारा बल्कि इसका आरोप केवल हिटलर नामक जर्मन तानाशाह के सर धरा गया। भारत में जब बोडो उल्फा और नक्सली लोगों की हत्याएं करते हैं तो कोई उनके धर्म को गाली नहीं देता। हिन्दू, ईसाई, यहूदी और कम्युनिस्ट निर्दोषों की हत्याएं करें तो उनके स्वाभिमान की रक्षा हेतु हैं और अगर मुसलमान उन लोगों के अत्याचार से विवश होकर प्रतिक्रिया स्वरूप कोई कार्यवाही करें तो वह मानवता विरोधी है ऐसा क्यों?

ये बात दिन के प्रकाश की तरह सत्य है कि मुसलमानों को आतंकवाद के साथ जोड़ना केवल षडयंत्र मात्र है। इस षडयंत्र में अमेरिका, ब्रिटेन और इजराइल का खुला हाथ है। अमेरिका और उसके समर्थक देश तो मुसलमानों के विरूद्ध सलीबी जंग लड़ रहे हैं। वास्तव में विश्व के सबसे बड़े आतंकी अफगानिस्तान के पहाड़ों, ईराक की सड़कों और चेचेन्या की गलियों में नहीं बल्कि व्हाइट हाउस और १० डाउनिंग स्ट्रीट (ब्रिटेन) में रहते हैं। ये वही खुंखार आतंकी हैं जिनकी सहायता से इजराइल निर्दोष फिलिस्तीनियों पर अमानवीय अत्याचार कर रहा है। उन सब की दृष्टि हर समय अरब देशों के तेल के कुओं पर लगी रहती है जिसमें अमेरिका और इंग्लैण्ड ने इतनी तेल की मात्रा इकट्ठा कर ली है कि कई दशक तक उसका काम चल सकता है मगर फिर भी इराक के तेल पर उन देशों की नियत इस सीमा तक लगी हुई थी कि दूसरी बार इराक पर हमला करने के लिये उन्होंने हर बार की तरह इस बार भी संयुक्त राष्ट्र संघ के नियमों को ठेंगा दिखाया।

मीडिया के माध्यम से नाइन इलेवन घटना को अमेरिका अभी तक

की सबसे बड़ी मानवता विरोधी घटना प्रचारित कराता रहा है। इस घटना में मारे गये लोगों से हमदर्दी तो होनी चाहिए क्योंकि निर्दोषों को मारा जाना कहीं भी सही नहीं कहा जा सकता है मगर सत्य तो यही है कि इस घटना में अलकायदा का नहीं बल्कि अमेरिका का हाथ है। क्योंकि इस घटना में शामिल जार्जबुश इस घटना का सीधा प्रसारण व्हाइट हाउस से देख रहा था। पेंटागन में रखी फाइलें हमले से एक दो दिन पहले हटा ली गई थीं। वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर में कार्यरत चार हजार यहूदी उस दिन फरार थे इन सब सबूतों से ज्ञात होता है कि ये अमेरिका द्वारा रचा गया घोर षडयंत्र था जो उसामा बिन लादेन के नाम पर रचा गया जिसका मकसद एशिया में पैर जमाना और अरब देशों के कुवों पर कब्जा करना था जिसकी पहली और कमजोर कड़ी अफगानिस्तान जैसा युद्ध ग्रस्त देश था।

इन सब बातों के बीच सत्य तो यही है कि इस्लाम को बदनाम करके और मुसलमानों को अलग थलग करके आतंकवाद का युद्ध नहीं जीता जा सकता वास्तव में अगर आतंकवाद को समाप्त करना है तो उसमें मुसलमानों को शामिल करना होगा तभी पता चलेगा कि आतंकवादी कौन और जेहादी कौन है? और उसके मूल कारणों को ढूंढना होगा जिसके कारण वह हथियार उठाने पर मजबूर हो जाते हैं। क्योंकि किसी को भी अकारण जान लेने और स्वयं जान गंवाने का कदापि शौक नहीं होता।

हमेशा की तरह ये बड़ी अच्छी बात है कि इस्लाम पर जब भी अकारण गंभीर आरोप लगा है तो उलमा ने उसका खुल कर उत्तर दिया है। इसमें दारूल उलूम देवबंद, नदवतुल उलमा और जमीयत उलमा–ए–हिन्द का महत्वपूर्ण किरदार रहा है। ये सत्य है कि अगर जायज जेहाद का आदेश आन पड़े जिसकी व्याख्या कुरआन व हदीस में है तो हर मुसलमान पर अनिवार्य है कि जेहाद करे मगर आतंकवाद को इस्लाम कदापि सहीह नहीं समझता।

और अंत में मुसलमानों से अपील है कि जब भी कभी विस्फोट हो तो बिन मांगे सफाई न दें क्योंकि इसी सफाई रूपी आत्महीनता ने हमें दुनिया के नजरों में आतंकवादी बना दिया है।

(लेखक नदवा के छात्र हैं)

## आत्म चिन्तन

१९८० के बाद से खास तौर से हिन्दुस्तानी मुसलमानों की शिनाख्त और पहचान को मिटाने की एक सोची समझी तथा नियोजित साज़िश हो रही है। इस के लिये खास निशना उर्दू और इस्लामी कलचर को बनाया गया है। इस्लाम और मुस्लिम दुश्मन तत्वों को हमारी जबान उर्दू, हमारा कलचर और हमारा अस्तित्व एक आंख नहीं भाता। इससे मुल्क कमज़ोर हुआ है और होता जा रहा है। हमको इस वस्तुस्थिति का सामना एकता, पौरूष और त्याग से करना है। और अपने अन्दर बेदारी पैदा करके आत्मनिर्भर बनाना है। मांग और प्रदर्शन, धरना और भूख हड़ताल बेअसर दिखायी देते हैं, इनमें अपना समय नष्ट करना मुनासिब नहीं। जरूरत 'स्व' और समय की बर्बादी की हमारे अन्दर व्याप्त बीमारी से लड़ना है। इसने हमको कमजोर बना दिया है। इसका इलाज करना होगा। हमको स्वयं अपनी जवाबदेही करनी होगी। आत्मचिन्तन करना होगा दिन रात एक करना होगा। और इस्लाम दुश्मन तत्वों की मेल्हाने वाली पालीसी से होशियार रहना होगा। और हम को साबित करना होगा कि हमारा वजूद, हमारा कल्चर, हमारी जबान मुल्क के मफाद (हित) में है। हम को अपनी इफादीयत (उपादेयता) एक जागरूक नागरिक की हैसियत से न केवल साबित करनी है, बल्कि इस का लोहा मनवा लेना है। और हम यह काम कर सकते हैं क्योंकि हम को ईमान की वह दौलत नसीब है जो बहुतों को नसीब नहीं।

हसन अंसारी

# अनाथों के अधिकार

सैयद सुलेमान नदवी
अनुवाद : नजमुस्साकिब अब्बासी गाजीपुरी

"यतीम वह कमसिन बच्चा है जो बाप के प्रेम की छांव से वंचित है। जमाअत के हर सदस्य का कर्तव्य है कि उसको प्रेम की बाहों में ले ले। उसको प्यार करे। उसके बाप के छोड़े हुए माल व दौलत की रक्षा करे। उसकी शिक्षा व भरण पोषण की चिन्ता करे। बुद्धिमता की आयु पर पहुंचने के बाद उसके बाप की छोड़ी हुई जायदाद उसको वापस कर दे। यतीम लड़कियों की रक्षा और उनकी शादी–ब्याह की उचित चिन्ता करे। ये वह इस्लामी आदेश हैं जो मक्का का यतीम पैगम्बर (सन्देष्टा) अपने साथ लाया।

अरबों में प्रतिदिन की हत्याएं और अशान्ति के कारण यतीमों की अधिकता थी मगर जैसा कि चाहिए, उनके देखभाल का सामान न था। वह अपने बाप की विरासत से वंचित रहते थे क्योंकि छोटे बच्चों को वह विरासत नहीं दिया करते थे और न संदिग्ध अरबों में सामान्य तौर से उनके साथ दया की भावना थी। कुरआन में उनकी बदसुलूकी का वर्णन बार–बार है .... क्या तूने उसको देखा जो न्याय को झुटलाते हैं, वही है जो यतीम (अनाथ) को धक्के देता है। (सूरह : माऊन) एक और आयत में उन अभिभावकों का चित्रांकन किया गया है जो अनाथों के जवान हो जाने के डर से उनके बापों की छोड़ी हुई विरासत को जल्द से जल्द खाकर हजम कर जाना चाहते हैं कुरआन में है "नहीं ये बात नहीं बल्कि तुम अनाथ का आदर नहीं करते और न एक दूसरे को गरीब के खिलाने पर उभारते हो और मुर्दे का माल पूरा समेट कर खा जाते हो और दुनिया के माल व दौलत पर जी भर रीझते हो। (सुरहः फज़्र)

इस्लाम से पहले के धर्मों में इस दया के पात्र गिरोह के साथ दया और उनकी सहायता व लालन–पालन का वर्णन बहुत कम मिलता है। तौरेत में उश्र (खेतो व फलों की जकात) और जकात के पात्रों में दूसरे लोगों के साथ यतीम का नाम भी एक दो जगह मिलता है कि "शहर के फाटक के अन्दर जो अनाथ हों वह आयें और खायें और सेरहों।" (इस्तस्ना)

इन्जील ने इन बेचारों को कोई न्यायदान (दादरसी) नहीं की और न किसी शिक्षा में उनका वर्णन किया है। इस उत्पीड़ित गिरोह की असली दादरसी (न्याय दान) का समय उस वक्त आया जब मक्का का अनाथ इस्लामी कानून लेकर दुनिया में आया। वह्य इलाही (ईशवाणी) ने सब से पहले खुद उसी को सम्बोधित करके याद दिलाया "क्या तुझ को अल्लाह ने यतीम नहीं पाया, तो उसने शरण दी ..... तू यतीम को न दबा।" (सुरह : जुहा)

हजरत मुहम्मद (सल्ल०) जब तक मक्का में बेबसी की हालत में रहे, अनाथों के सम्बन्धित नैतिक निर्देश देते रहे और कुरैश के अत्याचारी धनवानों को इस असहाय दल पर दया का उपदेश देते रहे। अतः मक्की आयतों में ये शिक्षा वह्य (ईशवाणी) के माध्यम प्राप्त होती रही। धनवानों को गरीबों के साथ दानशीलता के उपदेश के सम्बन्ध में कहा गया कि इन्सानी जिन्दगी की घाटी को पार करना असल कामयाबी है। इस घाटी को क्यों कर, तुम पार सकते हो? उत्पीड़ित की गर्दनों को छुड़ाकर भूकों को खाना खिलाकर और अनाथों की सेवा करके "या भूख वाले दिन में किसी रिश्तेदार यतीम को खिला कर" (सूरह : बलद) नेकियों और सदाचारी व्यक्तियों की प्रशंसा में कहा कि ये वह हैं जो "और उसके प्रेम के साथ किसी गरीब और यतीम को खाना खिलाते हैं" (सूरह : दहर)

मदीने में आने के बाद उन नैतिक निर्देशों ने कानून की सूरत इख्तियार की, सुरहः निसा में उस असहाय गुट के सम्बन्ध में विशेष आदेश पारित किये गये। उन वारिसों का हक दिलाया गया और अभिभावक जो अज्ञान काल में तरह–तरह के विश्वासघात किया करते थे, उनसे कहा गया "और अनाथों को उनकी विरासत का छोड़ा हुआ धन दे दो, और उनके अच्छे माल को अपने बुरे माल से न बदला करो और न अपने माल के साथ मिलाकर उनका माल खा जाओ, ये बड़े गुनाह की बात है।" (सूरह : निसा)

धनी अनाथ लड़कियों की उनकी जायदाद पर कब्जा कर लेने के उद्देश्य से अभिभावक उसे अपने निकाह में ले आते थे और लावारिस

जानकर उनको सताते थे, उस पर आदेश आया, अगर तुमको डर है कि उन अनाथ बच्चियों के हक में न्याय न कर सकोगे तो उनके अलावा दूसरी औरतों से जो तुम्हें पसन्द हों ब्याह रचा लो।" (सूरह : निसा)

अनाथ बच्चों के माल को विश्वास घात और फुजूल खर्च भी नहीं कर देना चाहिए और न जब तक वह बुद्धिमान हो जाएं उनको सौंपा जाए बल्कि उनकी आय जब तक बुद्धिमान व्यक्ति की आय के अनुसार न हो जाए तब तक उनका माल उनको न सौंपा जाए फरमाया, और बेवकूफों को अपने माल जिसको अल्लाह तुम्हारे कियाम का माध्यम बनाया है, न पकड़ा दो और उनको खिलाते और पहनाते रहो और उनसे अच्छी बातें कहो और अनाथों को परखते रहो, जब ब्याह के स्वाभाविक आयु को पहुंच जायें तो उनमें अगर होशियारी देखो तो उनका माल उनको सौंप दो।" (सूरह : निसा)

इन आयात पाक में बलागत का एक अजीब बिन्दु है, ध्यान दो कि आयत के शुरू में जहां अभिभावकों को नासमझ अनाथों के माल को अपने पास संभाल कर रखने का आदेश है, वहां माल का सम्बन्ध अभिभावकों की ओर है "तुम अपना माल उनको न दो" आयत के आखिर में व्यस्कता (बुलूग) के बाद अभिभावकों को अनाथों का माल वापस कर देने का आदेश है वहां उस माल की निस्बत अनाथों की ओर की गई कि "तमु उनका माल उनको वापस कर दो।"

इस से प्रदर्शित होता है कि जब तक ये अमानत अभिभावकों के पास रहे तो उसकी ऐसी रक्षा और निगरानी करनी चाहिए जैसे अपने माल की और जब वापसी की नौबत आये तो इस तरह एक–एक तिनका वापस किया जाये जैसा कि दूसरे का माल वापस किया जाता है जिस पर तुम्हारा कोई अधिकार नहीं है। अभिभावकों को जो अनाथों के माल की इस डर से जल्दी–जल्दी खर्च करके बराबर कर देते थे कि ये बड़े होकर अपना माल मांग न बैठे, इस कुकर्म पर चेतावनी दी गई है और फुजूलखर्ची और जल्दी करके उनका माल न खाओ कि कहीं ये बड़े न हो जाएं" (सुरह : निसा)

जायदाद के मालिक और अनाथों के अभिभावक अगर स्वयं खाते पीते हों तो उनके लिये उन अनाथों की जायदाद की देखभाल और निगरानी का मुआवजा (क्षतिमुल्य) स्वीकार करना भी नैतिकता के विरूद्ध कहा गया है। अगर गरीब हो तो इन्साफ के साथ मुआवजा लेने की आज्ञा दी गई है। कुरआन में है "और जो अभिभावक धनी है उसको चाहिए कि बचता रहे और निर्धन तो न्यायोचित विधि के अनुसार खाए। (सूरह : निसा)

और अंत में ये व्यापी शिक्षा दी गई है "और ये कि अनाथों के लिये न्याय पर जमे रहो।" (सूरह : निसा)

सुरहः अनआम में यहूदियों की दिखावटी शरीअत नवाजी, और जानवरों के हलाल व हराम अर्थहीन शब्दों को मानना आत्मा सम्बन्धी पापों से लापरवाही दिखाकर जिन अस्ली व आध्यात्मिक व नैतिक शिक्षा की ओर ध्यान आकर्षित किया उनमें एक यह है कि "और बेहतरी के उद्देश्य के अलावा अनाथ के माल के पास न जाओ यहां तक कि वह अपनी शक्ति की आयु को पहुंच जाऐं।" (सुरह : अनआम)

सूरह के आठ नैतिक सिद्धान्त में से एक ये भी है कि बेहतरी व सुधार की नियत के अलावा अनाथों की जायदाद के निकट किसी और उद्देश्य से नहीं फटकना चाहिए और ईमानदारी के साथ सदैव अपना दामन बचाना चाहिए।

ये तो जायदाद वाले अनाथों से सम्बन्धित शिक्षा है और जो अनाथ गरीब व निर्धन हों उनका उचित लालन–पालन और सहायता करना आम मुसलमान पर अनिवार्य है। अतः कुरआन ने सुरह : बकरह :, सुरह निसा, अनफाल और हश्र में बार–बार उनके पालन पोषण और उनके साथ अच्छा व्यवहार करने का निर्देश दिया है। अनाथ, निर्धन खैरात व सदकात (दान) के सही अधिकारी हैं।

अपनी इस निरन्तर (वह्य) ईशवाणी की व्याख्या में हजरत मुहम्मद (सल्ल०) ने अपनी उम्मत के उन नेक दिलों को अपने बराबर जगह दी है जो अनाथों के अभिभावक बनकर उनका पालन पोषण करते हैं "मैं (मुहम्मद सल्ल०) और किसी अनाथ की देखभाल करने वाला अभिभावक स्वर्ग में यूं दो उंगलियों की तरह निकट होंगे" (बुखारी) और आप (सल्ल०) ने ये भी कहा कि "जो किसी अनाथ बच्चे को अपने घर बुलाकर और उसको खिलाए पिलाएगा तो अल्लाह उसे जन्नती नेअमतें (सुखसामग्री) देगा, बशर्ते कि उसने कोई ऐसा पाप न किया हो जो क्षमा योग्य न हो" (बहवाला तिरमिजी)

इसी प्रकार एक बार फरमाया "मुसलमानों का सबसे अच्छा घर वह है जिसमें किसी अनाथ के साथ भलाई

की जा रही है और सबसे बुरा घर वह है जिसमें किसी अनाथ के साथ दुर्व्यवहार किया जाता है'' (ब हवाला इब्ने माजा)

हजरत मुहम्मद (सल्ल०) की. इस शिक्षा ने अरब का स्वभाव बदल दिया। वही हृदय जो असहाय निर्बल अनाथ के लिये पत्थर से अधिक कठोर थे, वह मोम से अधिक नर्म हो गये। हर सहाबी रजि० का घर एक अनाथ आश्रम बन गया। एक–एक अनाथ के प्रेम को पाने के लिऐ कई कई हाथ एक साथ बढ़ने लगे और हर एक उसका पालन पोषण का अधिकार पाने के लिये ममता की बाहें खोलने लगा (बुखारी)। जंगे बदर के अनाथों के मुकाबले में हजरत फातिमा रजि० अपने दावे को उठा लेती हैं । (अबूदाऊद)। हजरत आइशा सिद्दीका रजि० ने अपने खानदान और अन्सार आदि की अनाथ लड़कियों की अपने घर ले जाकर दिलो जान से पालती है। हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रजि० का ये हाल था कि वह किसी अनाथ बच्चे को साथ लिये बगैर कभी खाना नहीं खाते थे। (बुखारी)

सहाबा रजि० केवल यही नहीं किया कि अनाथों को उनका हिस्सा देने और उनके माल व दौलत का प्रबन्ध व निगरानी में सत्यनिष्ठा से कार्य करने वाले बल्कि उनकी जायदाद की रक्षा में दानशीलता का पूरा प्रमाण दिया। एक बार हजरत मुहम्मद (सल्ल०) की अदालत में एक अनाथ ने एक व्यक्ति पर एक खजूर के बगीचे के सम्बध में दावा पेश किया। मगर वह दावा सिद्ध न हो सका और आप (सल्ल०) ने वह बगीचा उस व्यक्ति को दे दिया इस पर वह अनाथ रो पड़ा आप (सल्ल०) को दया आई और उस व्यक्ति से कहा कि तुम ये बगीचा उस अनाथ को दे दो अल्लाह तुम्हें इसके बदले में स्वर्ग देगा। वह व्यक्ति इस कुर्बानी पर सहमत न हुआ। वहां एक सहाबी मौजूद थे उन्होंने उस व्यक्ति से कहा कि क्या तुम अपना ये खजूरों का बगीचा मेरे अमुक बाग से बदलते हो? इस पर वह तैयार हो गया, उन्होंने तुरन्त बदल दिया और खजूर का बाग उस अनाथ को दान कर दिया।

आज दुनिया के शहर–शहर में अनाथालय बने हैं मगर अगर ये प्रश्न किया जाये कि क्या हजरत मुहम्मद (सल्ल०) से पहले भी ये बदकिस्मत गिरोह इस अच्छे व्यवहार से परिचित था? तो इतिहास का उत्तर नहीं मिलेगा। इस्लाम प्रथम धर्म है जिसने इस उत्पीड़ित दल की सहायता की है। अरब पहली धरती है जहां किसी अनाथ आश्रम की बुनियाद पड़ी। इस्लामी सरकार दुनिया की प्रथम सरकार है जिसने इस कर्तव्य को महसूस किया। अरब, मिस्र, सीरिया, इराक, भारत जहां मुसलमानों ने अपनी सरकार की बुनियादें डाली वहां इन उत्पीड़ित गिरोह के लिये शान्ति व सुकून के घर बनाए। उनके लिये वजीफे तय किये। प्राथमिक पाठशालाएं बनाए। जायदादें दान कीं और दुनिया में एक नये इन्स्टीट्यूट की तरह डाली और अपने न्यायधीशों का ये कर्तव्य करार दिया कि वह बिना अभिभावक वाले अनाथों के अभिभावक बनें। उनकी जायदाद की निगरानी, उनके मामलों की देखभाल और उनके शादी व्याह का इन्तेजाम करें।

&&&

(पृष्ठ २४ का शेष)

**शनि ग्रह :**

हमारे सौर्य जगत में यह दूसरा सबसे बड़ा ग्रह है। यह ६५ गुना पृथ्वी से बड़ा है। यह अपने चारों तरफ सुन्दर छल्लों के कारण दूसरे ग्रहों से भिन्न है। इसको ग्रहों का राजा कहा जाता है क्योंकि यह सबसे सुन्दर ग्रह है। इसके ४८ चन्द्रमा (उपग्रह) हैं जो इसका चक्कर लगाते रहते हैं।

**अरुन ग्रह :**

टेलीस्कोप के द्वारा देखने पर यह एक तशतरी (डिस्क) नुमा दिखता है। यह पृथ्वी से चार गुना बड़ा है। इसके वातावरण में हाइड्रोजन तथा मीथेन गैस होती है। यह पूरब से पश्चिम की ओर नाचता है। इसके २७ उपग्रह हैं।

**वरुन ग्रह :**

यह पृथ्वी से १७ गुना बड़ा है। सूरज से बहुत दूर होने के कारण ठण्डा ग्रह है। यह नंगी आंखों से नही दिखाई देता है। इसके उपग्रह (चन्द्रमा) नौ हैं।

**याम ग्रह :**

यह सूरज से सबसे दूर है इस लिये यह सबसे ठण्डा ग्रह है। यह तीन उपग्रह रखता है। २००६ में नासा द्वारा तय किया गया है कि याम ग्रह नहीं है। इस प्रकार अब सूर्य जगत में केवल आठ ग्रह हैं।

पाठकों से अनुरोध है कि वह जब तब एक कार्ड द्वारा लिखा करें कि सच्चा राही की सेवाओं में क्या कोताहियां हो रही हैं। ताकि हम इस्लाह कर सकें।

**टिम-टिम करते छोट सितारे :**

हमें आकाश में सितारे रात को जगमगाते हुए दिखाई देते हैं क्योंकि सितारों की रौशनी वायुमण्डल में हवाओं की परतों से गुजरकर पृथ्वी पर आती है जिसके कारण सितारों की रोशनी की शक्ल खण्डित होती रहती है। जो सितारे क्षितिज के निकट होते हैं वे अधिक झिलमिलाते हुए दिखाई पड़ते हैं क्योंकि सितारों की रोशनी वायुमण्डल की अधिक मोटी तहों से गुजरती है। परन्तु अंतरिक्ष से सितारों को देखने पर वे झिलमिलाते हुए नहीं दिखाई देते हैं। यही कारण है कि अंतरिक्ष में दूरबीन से दूर के सितारे और सितारों के झुंड साफ दिखाई देते हैं।

**गैलेक्सी :**

गैलेक्सी करोड़ों सितारों के झुण्ड को कहते हैं जो एक साथ गुरुत्वाकर्षण के बल से टिके रहते हैं। ज्यादा तर गैलेक्सी गोलाकार होती है लेकिन कुछ गैलेक्सी आकार में बेतरतीब भी होती है।

**प्रकाशवर्ष :**

प्रकाशवर्ष दूरी बताता है न क समय। प्रकाश एक वर्ष में दूरी तय करता है उसको प्रकाशवर्ष कहते हैं। अंतरिक्ष में दूरी को प्रकाशवर्ष से नापते हैं।

**सौर्यजगत :**

सौर्यजगत ४५६० मिलियन वर्ष (१० लाख का एक मिलियन होता है।) पहले बना था। ये सौर्य जगत सूरज और नौ ग्रहों से मिलकर बना है। यह पृथ्वी (**Earth-** जमीन), मंगल (**mars**– मिर्रीख) बृहस्पति (**Jupiter** मुश्तरी) शनि (**Saturn** – जुहल) वरुण (**Neptune** नेपच्यून) अरुण (**Uranus** – यूनस) शुक्र (**Venus** – जुहरा) प्लूटो (**Pluto**–प्लूटो) बुद्ध (**Mercury** – उतारिद) और उनके उप ग्रहों (चांदों) तथा पुच्छल तारों और अन्य पिण्डों से मिलकर बना है। यह सब हमारे सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाते रहते हैं तथा गुरुत्वाकर्षण बल पर टिके रहते हैं।

**बुद्ध ग्रह :**

बुध एक छोटा ग्रह है। ये हमारे सूरज के करीब है। और यह अपना चक्कर अट्ठासी दिन में पूरा कर लेता है। इस ग्रह में दिन का तापमान १७६ डिग्री सेसलियस होता है। जबकि रात का तापमान १७६ डिग्री सेलसियस तक गिर जाता है। बुद्ध को यह नाम इसलिये मिला है क्योंकि यह अन्य ग्रहों की अपेक्षा बहुत तेजी से सूरज का चक्कर लगाता है। इस पर जीवन की सम्भावना नहीं है।

**1. शुक्र ग्रह :**

यह पृथ्वी का जुड़वा भाई माना जाता है क्योंकि इसका क्षेत्रफल और आकार पृथ्वी से मिलता जुलता है। शुक्र बादलों की एक मोटी परत से ढका हुआ रहता है। जिससे सूरज की तीन चौथाई किरणें टकराकर वापस चली जाती है इस पर भी जीवन असम्भव है। यह सौर्य जगत में सबसे गर्म ग्रह है। इसका उच्चतम तापमान ४५० डिग्री सेलसियस है जो पृथ्वी के तापमान से ६६ गुना है।

**पृथ्वी :**

सूरज की दूरी के हिसाब से यह तीसरा है इस ग्रह पर तापमान सामान्य रहता है। यहां पर अत्यधिक मात्रा में पानी मौजूद है। हमारी पृथ्वी वायुमण्डल की मोटी परतों से ढकी है जिसमें नाइट्रोजन ७८ आक्सीजन २१ कार्बन डाईआक्साइड .३३ और आक्सीजन गैस ०.१ है। इस ग्रह पर जीवन दायनी सभी चीजें मौजूद हैं जैसे हवा पानी सामान्य तापमान। इसीलिए पूरे ब्रह्माण्ड में एकलौता एक यही ग्रह है जिसमें जीवन पाया जाता है। इसका एक प्राकृतिक सैटेलाइट भी है। जिसका नाम चन्द्रमा है। यह पृथ्वी का चक्कर लगाया करता है। इस पर कोई जीवन नहीं है।

**मंगल ग्रह :**

यह चौथाग्रह है इसकी सतह लाल रंग की होती है इसके वातावरण में बहुत कम मात्रा में आक्सीजन, नाइट्रोजन कार्बन डाई आक्साइट होती है। खगोल शास्त्रियों का मानना है कि इस ग्रह पर जीवन हो सकता है।

**ब्रहस्पति ग्रह :**

यह पांचवीं ग्रह है यह सबसे बड़ा ग्रह है। इसमें हजारों पृथ्वी समा सकती है। इस पर जीवन असंभव है।

(शेष पृष्ठ २३ पर)

# भूत और आसेब

इदारा

एक शख़्स के सर में अचानक दर्द हुआ, अंध विश्वासी ओझा के पास भागा ओझा जी ! सब कुछ ठीक ठाक था, अकस्मात सिर टपकने लगा। ओझा जी बोले भूत ने पीछा कर लिया। अरे भाई उनका भी ध्यान रखा करो, हार बाहर जब कुछ खाओ पियो तो थोड़ा सा उनके नाम गिरा दिया करो। रोगी बोला ओझा जी मैं ऐसा बराबर करता हूं, हो सकता है किसी समय भूल हो गई हो, अब क्या करना है? कुछ नहीं सवा गज तूल, पाव भर पचमेल, गेन्दे के पांच फूल दोने में रखकर, रात में फुलां चौराहे पर रख आना, लाउंग फुंकाई पांच रूपया यहां जमा करो प्रेत भाग जाएगा। रोगी ने यह सब किया, दूसरे दिन चंगा था। उसने स्वयं लोगों से कहना आरम्भ किया कि भूत ने मेरा पीछा किया था ओझा जी ने भगा दिया। ओझा जी निरे झूठे थे उन्होंने भी अपना प्रौपेगन्डा किया। ऐसी ही झूठी घटनाओं से भूत ने रिवाज पाया। जब कि यह केवल अंधविश्वास था। एक औरत सर के बाल खोल सर झटक कर जमीन पर दोनों हाथ मार कर अभवा रही थी, लोग उससे पूछ रहे थे तुम कौन हो? वह गांव के किसी मृतक का नाम ले रही थी। इतने में ओझा जी बुलाए गए उन्होंने लौंग और काफूर मंगवाया, कुछ होट हिलाए मानो मंत्र पढ़ा, लौंग, कपूर जलाया, औरत का अभुवाना तेज़ हो गया उसकी आवाज़ भी तेज़ हो गई, एक भेड़ लेकर जाउंगा, ओझा जी बोले तूल लंगोटा, एक पाव पंचमेल मिलेगा वरना समझ लूंगा, औरत बोली अच्छा जाता हूं, लंगोटा और पंचमेल भेज देना और अभवाना बन्द हो गया। यह सब क्या था, न भूत था न प्रेत ओझा का झूट, औरत का मक्र, मिली भगत भी नहीं, केवल झूटे रवाज की और अंधविश्वास की अनुकूलता। कभी किसी औरत पर काली और उस की सात बहनें आ जाती हैं और भेंट की मांग करती हैं आमतौर से यह दीहातों में चेचक के छय रोग या कालरा रोग फैलने के काल में देखने को मिलता है। यह सब अंधविश्वास है।

किसी को किसी खारिजी सबब से अचानक बुख़ार आया उस का कोई करीबी तअवीज़ गन्डे वाले मौलवी जी के पास पहुंच गया। अरे मोलवी साहब! अच्छा भला था, अचानक किसी साये ने दबोच लिया। मौलवी साहिब ने किताब खोली, किसी खाने पर उंगली रखवाई फिर वरक उल्टे, ध्यान से पढ़ा और बोले इस पर तो परी का साया हो गया है, फौरन फ़तीला लिखा और कहा कि पास में जला देना, तअवीज़ लिखा कि दाहने बाज़ू पर बान्ध देना। हमारे बचपन में तो सवा रूपये पड़ते थे अब सुना है कि दहाइयों सैकड़ों में सौदा होता है। अगर एक दो रोज़ में ख़ुद से बुख़ार उतर गया तो मौलवी साहिब की चान्दी, मुफ़्त में इश्तिहार हो गया, अगर बुखार मीआदी निकला या कई रोज़ तक न उतरा तो मौलवी साहिब ने बड़े जिन्नात का बहाना लिया, दूसरा कोई कीमती अमलपेश किया इलाज का भी मश्वरा दिया। मरीज के घर वालों ने यह सब बर्दाश्त किया। हालांकि यह महज मरीज़ और उसके घर वालों का वहम था और मौलवी साहिब का खुला झूठ, न परी का साया था, न आसेब था न जिन्नात का असर था, झूट और वहम का कारनामा था। ऐसे वहमी खासे पढ़े लिखे भी देखे गये हैं।

ऐसी घटनाएं जहां दिखाई दें, ऐसे वाकिआत जहां नज़र आएं हिक्मत से इन के झूट को उजागर करें, ओझा जी और मौलवी जी मुख़ालफ़त करेंगे। अगर आप अपनी सच्चाई पर जमे रहे तो काम्याब होंगे।

ओझा जी पढ़े लिखे होंगे तो पुराणों के संदर्भ से राक्षसों की बात करेंगे लेकिन उन की बात केवल कहानी सिद्ध होगी। मौलवी साहिब कुर्आन हदीस से जिन्नों का सुबूत पेश करेंगे, बेशक हर मुसलमान जिन्नों के वजूद पर ईमान रखता है, जिन्नों का इन्कार कुफ़्र है लेकिन उनके यह काम हरगिज़ नहीं हैं कि किसी को बीमार डाल दें किसी को उठा कर पटख़ दें। वह अल्लाह की मख़्लूक़ हैं। इन्सानी नज़रों से ओझल है, उनके क्या काम हैं, यह उनके ख़ालिक़ ही को मअ़लूम है अलबत्ता उन में शयातीन हैं जिन का काम लोगों को बुराइयों पर उभारना है। यह जो मौलवी साहिब फ़तीला जलवाकर जिन भगाते हैं। अमल से बोतल में क़ैद करते हैं, जलाकर मारते हैं, ज़मीन में दफ़न करते हैं, यह सब फ़रेब है, मरीज़ पर जिन नहीं है, इन झूटे मौलवी पर शैतान ज़रूर है। इसी प्रकार ओझा जी राक्षस नहीं भगाते स्वयं राक्षस का कार्य करते हैं।

# आपके प्रश्नों के उत्तर?

डॉ० हारून रशीन सिद्दीकी

**प्रश्न :** हमारे यहां दो सज्जन आए मस्जिद में नमाज़ पढ़ी फिर कुछ लोगों से मिल कर जानकारी ली कि यहां मुस्लिम बच्चों की शिक्षा (तअ़लीम) के लिए कोई प्रबन्ध (नज़्म) है या नहीं बताया गया कि हम मजदूरी मेहनत करने वाले ग़रीब लोग हैं बच्चों की शिक्षा की कोई व्यवस्था नही है। उन्होंने कहा अगर आप लोग हमारे ठहरने का प्रबन्ध (इन्तिज़ाम) कर दें तो हम आप के बच्चों को क़ुर्आन शरीफ़, दीनियात और उर्दू की निःशुल्क (मुफ्त) शिक्षा देने को तैयार हैं। कहा गया हमारे पास न कोई कमरा है न लैट्रीन है। हम लोग खेतों में अपनी आवश्यकताएं पूरी करते हैं। यदि हमारे छप्पर के नीचे रह सकें तो आप का स्वागत है। वह इस पर ऐग्री हो गए और एक घर के तरवाहे (द्वारे का बड़ा छप्पर) में एक खाट पर रहने लगे और मस्जिद में बच्चों को पढ़ाने लगे, मेहनत से पढ़ाते थे। कई महीनों के पश्चात एक दिन कहने लगे, हम बहुत से लोग, बहुत से गांवों में इस प्रकार का काम करते हैं। हमारा एक सुसंगठित संगठन है जिस का हेडक्वार्टर क़ादियान है। वहां हर वर्ष एक बड़ा समारोह (जल्सा) होता है, बड़े–बड़े विद्वानों के भाषण होते हैं। हम बस लाएंगे आप लोग उस वार्षिक समारोह में भाग लें। समारोह तक आने जाने खाने पीने की व्यवस्था (इन्तिज़ाम) हम करेंगे। अब हम लोगों को शंका (शुब्हा) हुई कि समारोह लखनऊ में नहीं कानपुर में नहीं क़ादियान (पंजाब) में क्यों? हम लोगों ने गांव की मस्जिद के इमाम साहिब से पूछा तो उन्होंने कहा हम को इस विषय में जानकारी नहीं है। फिर हम दो तीन आदमी दूसरे गांव के एक मौलवी साहिब के पास गये और हाल बताया तो उन्होंने तुरन्त कहा अरे वह तो भ्रष्ट सम्प्रदाय (गुमराह फिर्क़ा) क़ादियानी से सम्बन्धित है, उसे तुरन्त भगाओ तथा दूसरे दिन वह मौलवी साहिब हमारे यहां आ गये और उस से बात करने लगे तो वह लड़ने लगा और कहा आओ मुनाज़रा कर लो। गांव के मौलवी साहिब बुलाए गये तो उन्होंने कहा हां यह क़ादियानी है और वह वहाबी दोनों भ्रष्ट हैं, तो यह क़ादियानी साहिब पहले से पढ़ा रहे हैं, इन को हटाने की कोई आवश्यकता नहीं, रही बात कादियान जाने की तो वहां मत जाओ। हम लोगों ने कहा जब कादियानी भ्रष्ट है तो हम इन से कैसे सम्बन्ध रखें? हम लोगों ने उसे तो रुख़सत कर दिया। मौलवी साहिब ने कहा हम तुम्हारे बच्चों की शिक्षा का बन्दोबस्त करेंगे लेकिन गांव के मोलवी साहिब क़ादियानी के ख़िलाफ़ नहीं बोले थे अब कहते हैं कि वहाबी मौलवी मत लाओ। इस विषय में हम आप का पथ प्रदर्शन चाहते हैं ।

**उत्तर :** बड़ा लम्बा प्रश्न है, परन्तु इस की हर बात अति आवश्यक है। प्रिय बन्धुओ! यह सत्य है कि मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद का चलाया हुआ क़ादियानी मज़हब जिसे उनके मानने वाले अहमदी मिशन भी कहते हैं पथ भ्रष्ट समुदाय है। यह आपकी और हमारी कोताही है कि हम नाम के मुसलमान बने रहे न ख़ुद इस्लाम सीखा न अपनी सन्तान को सिखा सके न सिखवा सके, हमारी इस कोताही पर हम से और आप से पूछ (बाज पुर्स) होगी। हमारे भाइयों के अपने दीन की जानकारी न होने तथा हमारी ग़रीबी से लाभ उठाकर यह भ्रष्ट समुदाय हमारे भाइयों का शिकार करता है। यह बेचारे मुनाज़रा क्या करेंगे? आप इन से ख़ुद प्रश्न करें कि नदवतुल उलमा, देवबन्द बरेली के उलमा के विषय में तुम्हारा क्या ख़याल है? यदि वह कहें यह हक़ पर हैं तो उनसे कहें जाओ इन संस्थाओं (इंदारों) से किसी भी संस्था से मिर्ज़ा ग़ुलाम और उसके मज़हब के बारे में लिखा लाओ कि वह हक़ पर थे, अगर तुम अपने हक़ में लिखा सको तो शौक से हमारे बच्चों को पढ़ाओ वर्ना अपना रास्ता लो। आप यह भी कह सकते हैं कि तथाकथित क़ादियानी आ़लिमों के अतिरिक्त वर्तमान किसी भी इस्लामी संस्था से क़ादियानियत के हक़ होने का फ़त्वा ला दो। यह भी कह सकते हैं कि मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद की तहरीरों से साबित करो कि वह देवबन्दी, बरेलवी, सऊ़दी तथा अहले ह़दीस उ़लमा को हक़ पर समझते थे। वह इन प्रश्नों का स्वीकारात्मक उत्तर कदापि न दे सकेंगे। बस आ़म लोगों को इन बातों पर अड़ कर उन से छुटकारा लेना चाहिए रहीं उन की छेड़ी हुई इख़्तिलाफ़ी बहसें तो उनकी एक एक बात पर ख़ूब

बात हो चुकी है, जो सैकड़ों किताबों में सुरक्षित (महफ़ूज़) हैं, जिस मसअले को चाहें सच्चा राही में प्रश्न कर के समझें और याद रखें यह पथ भ्रष्ट समुदाय अपने कथानुसार मिर्जा गुलाम अहमद के अनुगामी अथवा तथाकथित अहमदी अपने सिवा सब को पथ भ्रष्ट मानते हैं, जब कि मक्का, मदीना, समस्त अरब,विश्व के सभी मुस्लिम उलमा, देवबन्दी, बरेलवी सब ने इन पथ भ्रष्ट क़ादियानियों को पथ भ्रष्ट घोषित किया है। ऐसे में इन से अपने बच्चों को दूर रखना और इन से दूर रहना अति आवश्यक है। रही बात गांव के मौलवी साहिब की, वहाबी मसअला छेड़ने की तो बड़े खेद के साथ यह कहना पड़ रहा है कि यह बरेलवी समुदाय भी ना समझी का शिकार हैं, वह यह भी नहीं सोचता कि यह वहाबीयत का नाम कैसे पड़ा? और यह कैसे सहीह है? जिस व्यक्ति से इस का सम्बन्ध जोड़ रहे हैं उस का नाम मुहम्मद था अब्दुल वह्हाब उस के पिता का नाम था, अतः वहाबी कहना ख़ुद ही गलत है। बरेलवी जिन मसाइल में अवाम को उलझाते हैं, उनमें केवल धोखा देते हैं। कहते हैं कि देवबन्दी अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की तौहीन करते हैं जब कि देवबन्दी उलमा का फैसला है कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की तनिक भी तौहीन करने वाला काफिर है। ऐसी दशा में उन पर तौहीन का आरोप कैसे लगाया जा सकता है। इसी प्रकार वर्तमान मीलाद, फातिहा, उर्स आदि को वह स्वयं मानते हैं कि यह कार्य इस रूप में हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम या सहाब–ए–किराम, या उलमाए फ़िक्ह, इमाम अबू हनीफ़ा, इमाम मालिक, इमाम शाफ़ई, इमाम अहमद बिन हंबल, या तसव्वुफ के इमाम सय्यिदना अब्दुल क़ादिर जीलानी, हज़रत मुईनुद्दीन चिश्ती, शैख शिहाबुददीन सहरवर्दी, ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शबन्दी (अल्लाह इन सब पर रहम करे) के काल में न थे। अतः हैं तो यह कार्य दीन में नये परन्तु बिदअते हसना है और जाइज़ है। उनसे पूछिये कि बिदअते हसना छोड़ देना भी कोई गुनाह का कार्य है? बड़े अफ़सोस की बात है कि एक ओर मिर्जा गुलाम अहमद क़ादियानी महदी होने का दअवा करे, मसीह होन का दअवा करे, ज़िल्ली बुरूज़ी नबी होने का दअवा कर के अपनी गढ़ी वह्य से शरीअते मुहम्मदी में तरमीम व तन्सीख आरंभ करे जिहाद मंसूख करे, अंग्रेजी साम्राज्य की ग़ुलामी को सहीह ठहराएं, उस झूठ बोलने वाले पर हज़रते महदी अलैहिर्रहमा और मसीह अलैहिस्सलाम से सम्बन्धित पचासों हदीसों में से कोई हदीस लागू नहीं होती फिर भी इन बरेलवी हज़रात को क़ादियानी बर्दाश्त मगर उनके नाम रखे हुए वहाबी जो किताब व सुन्नत से बाल बराबर इधर उधर नहीं होते वह असहनीय (नाकाबिले बर्दाश्त) हैं। मेरी नजर में क़ादियानी बेदीन हैं, इस्लाम से ख़ारिज हैं, यही उम्मत के उलमा का फैसला है और हमारे बरेलवी भाई बड़ी भूल में हैं अल्लाह उन्हे सत्य ज्ञान दे, अपने ज्ञान के अनुसार मैंने सत्य बात प्रस्तुत कर दी और आप से अनुरोध है कि सत्य अपनाएं बरेलवी मौलवी जी की बात न मान कर क़ादियानी से सम्बन्ध न रखें और जो दूसरे मौलवी आपके बच्चों की शिक्षा की ज़िम्मेदारी ले रहे हैं उनकी सेवाएं उनके शुक्रिये के साथ स्वीकार करें।

**प्रश्न :** मैंने सद्क़–ए–फित्र निकाला मगर नमाज़ से पहले सहीह मुहताज क़रीब में न होने के सबब अदाएगी न हो सकी तो क्या अब अदा कर सकते हैं?

**उत्तर :** आपने सदक–ए–फित्र मुस्तहिक तक पहुंचाने में कोताही की ग़लत किया, खैर वह गरीबों का हक़ है बअद में सही अब उन्हें पहुंचा दीजिए।

**प्रश्न :** क्या सदक–ए–फ़ित्र ग़ैर मुस्लिम ग़रीबों मुहताजों को दिया जा सकता है?

**उत्तर :** कुछ मुहक्क़िक उलमा के नज़दीक ग़ैर मुस्लिम मुहताजों को सदक–ए–फित्र दिया जा सकता है लेकिन मुस्लिम मुहताजों को नज़र अन्दाज़ कर के ग़ैर मुस्लिम को सदका देना ना पसन्दीदा बात है। आज कल कितने बाढ़ पीड़ित दाने–दाने को तरस रहे हैं, घर द्वार सब नष्ट हो चुका है ऐसों की मदद में हिन्दू मुस्लिम न देखिये, सदक़–ए–फ़ित्र और दूसरे सदक़ात मुसलमानों को भी दीजिए और जरूरतमन्द ग़ैर–मुस्लिम हज़रात को भी।

**प्रश्न :** कुछ लोग कहते हैं कि वहाबी हमारे हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दुरूद नहीं पढ़ते क्या यह सही है?

**उत्तर :** पहली बात तो यह वहाबी नाम अंग्रेजों और बरेलियों का रखा है जिस का नाम मुस्लिम है उसका नाम वहाबी रखना ख़ुद गलत है, लेकिन अपने अर्थ में यह ऐसा बुरा भी नहीं है। रही बात दुरूद की तो देवबन्दी नदवी वहाबी बरेलवीयों से कुछ ज़ियादा ही दुरूद व सलाम पढ़ते हैं। उनकी सुहबत से इसे जांचा जा सकता है।

## देश में हो रहे बम धमाके :

# फॉसीवादियों की साजिश

एजाज अहमद असलम

"इस्लाम दया और कृपा का मार्ग है और मानव के लिए यह मार्ग जिसने चुना है, उसकी कृपा असीम है। उसने धर्म और जाति, रंग और नस्ल का भेदभाव किये बिना इन्सानी जान के सम्मान की शिक्षा दी है। उसके अनुसार यदि किसी ने एक आदमी की भी अन्यायपूर्ण हत्या की तो मानो उसने सम्पूर्ण मानवता की हत्या कर दी। परन्तु कोई व्यक्ति यदि ऐसा अपराध करता है तो उसे सजा देने का अधिकार जनता को नहीं है, बल्कि यह सरकार की जिम्मेदारी है कि सबूतों को देखते हुए उसके विरूद्ध कार्रवाई करे।"

जमाअत इस्लामी हिन्द के सेक्रेट्री जनाब एजाज अहमद असलम ने ये बातें पिछले दिनों मर्कज में होने वाले हफतावार इज्तिमा में कहीं। वे "मुल्के अजीज और बम धमाके" शीर्षक के तहत अपने विचार व्यक्त कर रहे थे। उन्होंने बड़े दुख और अफसोस के साथ कहा कि इस देश को हमने अपने खून से सींचा है और जमाअते इस्लामी का हमेशा यह पक्ष रहा है कि किसी भी व्यक्ति के साथ अन्याय नहीं होना चाहिए। मगर आजकल स्थिति यह है कि इन बम धमाकों के बहाने निर्दोष मुस्लिम नवजवानों को बिना किसी छानबीन और बिना किसी सबूत के गिरफतार किया जाता है और उन्हें खूब टार्चर किया जाता है, जिसे बयान नही किया जा सकता। टार्चर की हद करके किसी व्यक्ति से भी मनचाहा इकबालिया बयान दिलवाया जा सकता है। हमारी पुलिस आजकल यही काम कर रही है।

जनाब एजाज असलम ने देश की साम्प्रदायिक और फॉसीवादी मानसिकता पर टिप्पणी करते हुए कहा कि अब से कुछ समय पूर्व तक हरिजनों को दंगा भड़काने के लिऐ इस्तेमाल किया जाता था, जब वे शिक्षा से वंचित और पिछड़ेपन का शिकार थे। मगर अब दलितों में जागरूकता आ गयी है इसलिए फॉसीवादियों ने अपना तरीका बदल दिया है। अब वे खुद धमाके करते हैं और उनके इशारों पर नाचने वाला मीडिया और पुलिस उन्हें साफ बचाते हुए इसका आरोप मुसलमानों पर डालते हैं।

जनाब असलम ने हाल के वर्षों में होने वाले बम धमाकों का विस्तार से वर्णन करते हुए कहा कि इन धमाकों के लिए सिमी, लश्करे तैबा, हुजी और इंडियन मुजाहिदीन का नाम लिया जाने लगा। फिर बिना किसी छानबीन के गिरफ्तार करके उन्हें शारीरिक और मानसिक रूप से प्रताड़ित किया जाने लगा। कहा जाता है कि इन बम धमाकों द्वारा मुसलमानों में डर और आतंक पैदा करके कर्नाटक में भाजपा को सरकार बनाने का अवसर मिल गया। अब यही हरबा दूसरे स्थानों पर भी अपनाया जा रहा है।

जनाब एजाज अहमद ने आगे कहा कि अहमदाबाद के सीरियल बम धमाकों में ५० लोग मारे गये और कोई २०० घायल हुए। सूरत में पहले दिन १८ स्थानों पर और बाद में कई और स्थानों पर बम पाये गये, मगर उनमें से कोई बम नहीं फटा, जनता को इसका एहसास है कि यह मात्र संयोग नहीं हो सकता, बल्कि इसके पीछे फॉसीवादियों की योजना काम कर रही है। ऐसी हालत में पुलिस और उसके साथ लगी जांच एजेंसियो पर भरोसा नही किया जा सकता। सी०बी०आई० भी अपनी विश्वसनीयता खो चुकी है, इसलिए किसी आजाद एजेंसी से मामले की जांच करायी जानी चाहिए।

देवबन्द में दहशतगर्दी के खिलाफ मुत्तहिदा जल्सा हुआ। नदवा, देवबन्द बरेली सभी दहशतगर्दी को अवैध घोषित कर चुके हैं। दहशतगर्दी का इस्लाम से कोई सम्बन्ध नहीं।

इस्लाम में दहशतगर्दी अवैध है। कोई दीनदार दहशतगर्दी की कल्पना भी नहीं कर सकता। बम विस्फोट में आम तौर से बेगुनाह लोग मारे जाते हैं। इस्लाम तो नाहक जानवरों की जान लेने को भी महापाप बताता है, बेगुनाह इन्सानों की जान लेने वाले का ठिकाना जहन्नम है।

# हृदय रोग में उपयोगी लहसुन

इदारा

मसालेदार सब्जियों तथा व्यंजनो में लहसुन का उपयोग भरपूर मात्रा में किया जाता है। इस खाने का स्वाद बढ़ जाता है। लहसुन में उपस्थित विशेष गंध उसमें पाये जाने वाले 'एलाइल सल्फाइड' के कारण होती है।

लहसुन स्निग्ध, बलदायक, पाचक तथा जीवाणुनाशक है। प्रति एक सौ ग्राम लहसुन में लगभग ७७ कैलोरी ऊर्जा निहित होती है। लहसुन का रासायनिक विश्लेशण करने पर ज्ञात हुआ कि इसमें ७८.६ प्रतिशत जल, १.८ प्रतिशत प्रोटीन, ०.१ प्रतिशत वसा, ०.७ प्रतिशत खनिज तथा १.३ प्रतिशत रेशा होता है। एक सौ ग्राम लहसुन में १७.२ मिलीग्राम कार्बोहाइड्रेट, ५० मिलीग्राम कैलशियम, ७० मलिीग्राम फास्फोरस, २.३ मिलीग्राम लोहा और विटामिन 'ए' ३० मिलीग्राम, विटामिन 'ब' ०.२३ मिलीग्राम, विटामिन 'सी' ११ मिलीग्राम होता है।

अनेक बीमारियों में लहसुन का उपयोग बहुत लाभदायक है। हमारे यहां वर्षाकाल तथा शीतऋतु में इसका प्रयोग अधिक किया जाता है। प्राचीन ग्रंथों में उल्लेख है कि लहसुन के नियमित उचित मात्रा में प्रयोग से मनुष्य दीर्घायु, निरोगी, बलवान तथा तेजस्वी बना रहता है। अधिक शारीरिक मेहनत करने वाले भोजन में लहसुन का अधिक सेवन करें तो इससे थकान मिट जाती है। कड़ी धूप में भी काम करने पर यह शरीर का बचाव करता है। वृद्धावस्था के कारण शरीर के नष्ट होने वाले सेल्स को लहसुन बचाता है, उनमें शक्ति का संचार करता है। लहसुन उच्च रक्त चाप को नियंत्रित रखता है। यह धमनियों की ऐंठन को दूर करता है। इसके सेवन से गैस से पीड़ित रोगी को आराम मिलता है। लहसुन आलस्य दूर करने में सहायक होता है। हृदय की धमनियों में कोलेस्ट्राल की अधिक मात्रा जम जाने से धमनियां कड़ी हो जाती है, इससे हृदय गति रूक जाने का खतरा रहता है। लहसुन के प्रयोग से हृदय रोगों से बचा जा सकता है।

लहसुन रक्त को शुद्ध करने का काम करता है। यह रक्त से अनावश्यक तत्वों को शरीर से निकालता है। यह जोड़ों का दर्द व सूजन को दूर करने में सहायक होता है। सरसों के तेल में लहसुन को गर्म करें उस तेल से लकवे वाले रोगी की मालिश करना लाभदायक होता है। लहसुन का लेप चेहरे पर लगाने से मुंहासे दूर होने लगते हैं। इससे त्वचा संबंधी बीमारियां ठीक होने लगती हैं।

लहसुन क्षय रोग तथा फेंफड़ों की बीमारी में लाभदायक है। लहसुन की पुल्टिस घावों को सेकने तथा फोड़ों को पकाने के लिए प्रयुक्त की जाती है। हैजा का इलाज करने के लिए लहसुन अति लाभकारी माना जाता है। लहसुन पाचन शक्ति बढ़ाने में काम आता है। यह आहार तंत्र में पाचक रसों की मात्रा बढ़ाता है।

लहसुन में जीवाणुनाशक गुण होता है। इसमें वोलेटाइल पदार्थ होता है, यह अनेक प्रकार के जीवाणुओं तथा कीटाणुओं को नष्ट करने में सहायक होता है।

काली खांसी में लहसुन सुघाना लाभदायक है। काली खांसी पुरानी हो गई हो तो लहसुन को शहद में पीस कर चटाएं। लहसुन का तेल पट्ठों और जोड़ों के दर्द में मुफीद है, लहसुन का माजून पट्टों के दर्द में लाभदायक है, लहसन का माजून माजनू सीर और लहसुन का तेल रौगने सीर के नाम से अत्तार के यहां मिलता हे।

(पृष्ठ ४० का शेष)

है। मानव अधिकार वाच संस्था के अधिकारियों ने अपने जारी किये हुए आंकड़ों को देते हुए बताया है कि अमेरिकी जेलों में बन्द कैदियों की संख्या साफ यह प्रकट करती है कि अमेरिका में वांशिक भेद भाव (नस्ली तअस्सुब) चर्म सीमा पर है क्योंकि हर छः काले कैदियों में केवल एक गोरा कैदी नजर आता है। काले कैदियों में ३० से ४० वर्ष की उम्र के होने की बात भी प्रकाश में आई है। वर्ष २००६ में २२ लाख ५८ हजार ६८३ कैदी अमेरीकी जेलों में कैद थे और अब यह संख्या २३ लाख से अधिक हो गयी है। अधिकतर अपराधी नशीली वस्तुओं के सेवन और कारोबार से जुड़े हुए हैं।

# अल्लाह की रहमत ने मुझे थाम लिया

अमीना जोन (अमेरिका)

*मेरा वह खानदान जिस ने मेरा सोशल बाईकाट कर दिया था। अल्लाह के फजल से उस में से अक्सर लोग इस्लाम कुबूल कर चुके हैं। मेरा वह बेटा जो अपने ईसाई बाप के पास रहता है और जिस की तर्बियत ईसाइयत के मुताबिक बड़ी तवज्जह से हो रही थी, एक दिन मेरे पास आया और कहने लगा "मम्मी! अगर मैं अपना नाम बदल कर फारूक रख लूं तो आप के नजदीक कैसा रहेगा?" मैंने यह सुन कर उसे चिमटा लिया और उसे इस्लाम की दावत पेश की तो उस ने कलमा पढ़ लिया। फारूक अब भी बाप के पास है मगर सच्चा पक्का मुसलमान है। यह भी अल्लाह की मेहरबानी है कि अमरीका जैसे मुल्क में रहते हुए भी मैं पर्दा कर रही हूं।*

जनवरी १९४५ में अमेरिका की रियासत लास एंजिल्स के इलाका वेस्ट में पैदा हुई। मेरे वालिदैन प्रोटेस्टन्ट ईसाई थे। मेरे ननिहाल व ददिहाल दोनों ही में मजहब का बड़ा चर्चा था। मैं आठवें में थी कि मेरे वालिदैन को फ्लोरेडा मुन्तकिल होना पड़ा। मेरी बाकी तालीम वहीं मुकम्मल हुई। मेरी तालीमी हालत बहुत अच्छी थी। बाइबिल से मुझे खास दिलचस्पी थी और उसके बहुत से हिस्से मुझे जबानी याद थे। इस सिलसिले में मैंने कई इनामात भी हासिल किये, मैं गैर निसाबी सरगर्मियों में भी बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेती थी और औरतों की आजादी की तहरीक की पुरजोश कारकुन थी।

हाई स्कूल की तालीम खत्म हुई तो मेरी शादी हो गयी और इसके साथ ही मैं माडलिंग के पेशे से जुड़ गई। मैं खूब मेहनत करती थी, इस लिए मेरा कारोबार खूब चमका। पैसे की रेल पेल हो गयी, शोफर, बेतहरीन गाड़ियां, गर्ज आराइश का हर सामान मुहैया हो गया। हालत यह थी कि बअज औकात में एक जूता खरीदने के लिए हवाई सफर करके दूसरे शहर जाती थी। इसी दौरान मैं एक बेटे और बेटी की मां भी बन गयी। मगर सच्ची बात यह है कि हर तरह के आराम व राहत के बावजूद दिल मुतमइन न था। बे सकूनी और उदासी जान का गोया मुस्तकिल रोग बन गयी थी। और जिन्दगी में कोई जबरदस्त कमी महसूस होती थी। इसका नतीजा यह निकला कि मैंने माडलिंग का पेशा छोड़ करके दोबारा मजहबी जिन्दगी अपना ली और मुख्तलिफ तालीमी इदारों में मजहबी तबलीग की खिदमात अंजाम देने लगी। इस के साथ ही मैंने और तालीम के लिए यूनिवर्सिटी में दाखिला ले लिया। ख्याल था कि इस बहाने शायद रूह को कुछ सुकून मिलेगा। उस वक्त मेरी उम्र तीस साल थी।

इसे मेरी किस्मत कहिये कि मुझे एक ऐसे क्लास में दाखिला मिल गया जिस में सियाह फाम और ऐशियाई तालिब इल्मों की बड़ी तादाद थी। शुरू शुरू में बड़ी परेशानी हुई, मगर अब क्या हो सकता था, बड़ी घुटन यह देखकर महसूस हुई कि इस में ज़्यादा लोग मुसलमान थे और मुझे मुसलमानों से सख्त नफरत थी। मेरे नजदीक आम यूरोपियन लोगों की तरह इस्लाम दहशत व जिहालत का मजहब था और मुसलमान गैर मुहज्जब, अय्याश, औरतों पर जुल्म करने वाले और अपने मुखालिफों को जिन्दा जलाने वाले लोग थे। अमरीका और यूरोप के आम लिखने वाले यही कुछ लिखते आ रहे हैं। बहर हाल शदीद जेहनी बेचैनी के साथ तालीम शुरू की। फिर अपने आप को समझाया कि मैं एक मिशनरी हूं। क्या अजब कि खुदा ने मुझे इन काफिरों की इस्लाह के लिए भेजा हो इस लिये मुझे परेशान नहीं होना चाहिए। इस वक्त मैं हैरत में मुब्तिला हो गयी। जब मैंने देखा कि मुसलमान तालिब इल्मों का रवैया दीगर सियाह फाम नौजवानों से बिल्कुल मुख्तलिफ था। वह आम अमरीकी नौजवानों की तरह न लड़कियों से बेतकल्लुफ होना पसन्द करते, न आवारगी और ऐश पसन्दी के रसिया थे। मैं तबलीगी जज्बे के तहत उनसे बात करती उनके सामने ईसाइयत की खूबियां बयान करती, तो वह बड़े वकार

व एहतिराम से मिलते और बहस में उलझने के बजाये मुस्करा कर खामोश हो जाते।

मैं ने अपनी कोशिशों को यूं बेकार जाते देखा, तो सोचा कि इस्लाम की जानकारी करनी चाहिये ताकि उसकी कमियों से आगाह होकर मुसलमान तालिब इल्मों को शिकस्त दे सकूं। मगर दिल के गोशे में यह एहसास था कि ईसाई पादरी, मजमून निगार और मुअर्रिख तो मुसलमानों को वहशी, अनपढ़, जाहिल और न जाने किन किन बुराइयों का मजमूआ बताते हैं लेकिन अमरीकी सोसाइटी में पलने बढ़ने वाले इन सियाह फाम मुसलमान नौजवानों में तो ऐसी कोई बुराई नजर नहीं आती, बल्कि यह बाकी सब तलबा से मुख्तलिफ और पाकीजा रवैये के हामिल हैं। ख्याल आया कि क्यों न मैं खुद इस्लाम का मुतालआ करूं और हकीकत से आगाही हासिल करूं। इसी मकसद की खातिर मैंने सब से पहले कुर्आन का अंग्रेजी तरजुमा पढ़ना शुरू किया और यह देख कर मेरी हैरत की इन्तिहा न रही कि यह किताब दिल के साथ साथ दिमाग को भी अपील करती है। बाइबिल के मुतालआ के दौरान जेहन में कितने सवाल पैदा होते थे मगर किसी पादरी या दानिश्वर के पास उनका कोई जवाब न था मगर कुर्आन पढ़ा तो उन सारे सवालों के ऐसे जवाब मिल गये जो अक्ल और शऊर के बिल्कुल मुताबिक थे। मजीद इत्मिनान के लिए अपने मुसलमान क्लास फेलोज से गुफ्तगू की। इस्लाम का मुतालआ किया तो अन्दाजा हुआ कि मैं अब तक अंधेरों में भटक रही थी। इस्लाम और मुसलमानों के बारे में मेरा ख्याल बेइंसाफी और जिहालत पर मबनी था।

मजीद इत्मिनान की खातिर मैं ने पैगम्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और उनकी तालीमात का मुतालआ किया तो यह देखकर मुझे खुशगवार हैरत हुई कि अमरीकी मुसन्निफीन के प्रोपेगेन्डे के बरअक्स रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इन्सानियत के अजीम मुहसिन और सच्चे खैर ख्वाह हैं। खासतौर से आप सल्ल० ने औरत को जो मकाम व मर्तबा अता फरमाया, उसकी पहले या बाद में कोई मिसाल नजर नहीं आती। माहौल की मजबूरियों की बात दूसरी है वरना मैं बहुत शर्मीली हूं और शौहर के सिवा किसी मर्द से खुलना पसन्द नहीं करती। मैं ने पढ़ा कि पैगम्बरे इस्लाम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बे हद हयादार थे, खासतौर से औरतों के लिए पाकीज़गी और हया की ताकीद करते थे। यह पढ़ कर मैं बहुत मुत अस्सिर हुई और इसे औरत की जरूरियात और नफसियात के मुताबिक पाया। फिर रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने औरत का दर्जा जिस कद्र बलन्द फरमाया उस का अन्दाजा इस कौल से हुआ कि "जन्नत मां के कदमों तले है।" और आपके इस फरमान पर तो मैं झूम उठी कि "औरत नाजुक आबगीनों की तरह है और तुम में से सबसे अच्छा शख्स वह है जो अपनी बीवी और घर वालों से अच्छा सुलूक करे।"

अब मैंने इस्लाम कुबूल करने का फैसला कर लिया। इस का जिक्र मैंने अपने क्लास के साथियों से किया तो वह २१ मई १९७७ ई० को मेरे पास चार जिम्मेदार मुसलमानों को ले आये। उनमें से एक साहब एक मस्जिद के इमाम थे। मैंने उन से कुछ सवालात किये और कलमा शहादत पढ़ कर इस्लाम में दाखिल हो गयी। मेरे इस्लाम कुबूल करने से पूरे खानदान पर गोया बिजली गिर पड़ी। हमारे मियां बीवी के तअल्लुकात मिसाली थे और मेरे शौहर मुझ से टूट कर मुहब्बत करते थे, मगर मेरे इस्लाम की खबर सुन कर उन्हें बहुत सदमा हुआ। मैं उन्हें पहले भी समझाने की कोशिश करती रही थी और अब फिर उन्हें समझाने की बहुत कोशिश की मगर उन का गुस्सा किसी तरह कम न हुआ और उन्होंने मुझ से किनाराकशी कर ली और मेरे खिलाफ अदालत में मुकदमा दायर कर दिया। आरजी तौर पर दोनों बच्चों की परवरिश मेरे जिम्मे करार पाई।

मैंने माली जरूरतों के पेशे नजर एक दफ्तर में मुलाजमत हासिल की, लेकिन एक रोज मेरी गाड़ी को हादसा पेश आ गया और थोड़ी सी देर हो गई इस पर मुझे मुलाजमत से निकाल दिया गया। फर्म वालों के नजदीक मेरा असल जुर्म यही था कि मैंने इस्लाम कुबूल कर लिया था। मेरे साथ एक हादसा यह भी था कि मेरा एक बच्चा पैदाइशी तोर पर माजूर था। इधर बच्चों की तहवील और तलाक के मुकदमे के बाअस अमरीकी कानून के तहत मुकदमे तक मेरी जमा पूंजी मुंजमिद कर दी गयी थी। मुलाजिमत भी खत्म हो गयी थी। मैं बहुत घबराई और बेइख्तियार अल्लाह के हुजूर सर ब सुजूद हो गयी और गिड़गिड़ा कर खूब दुआयें कीं। अल्लाह ने मेरी दुआयें कुबूल फरमा लीं और दूसरे ही रोज मेरी एक जानने वाली खातून की कोशिश से मुझे मुलाजमत मिल गयी और मेरे माजूर

बेटे का इलाज भी बिला कीमत होने लगा। डाक्टरों ने दिमाग के आपरेशन का फैसला किया और अल्लाह के खास फजल से यह आपरेशन कामयाब रहा। बच्चा तन्दुरूस्त हो गया और मेरी जान में जान आई। लेकिन आह ! अभी आजमाइशों का सिलसिला खत्म न हुआ था। अदालत में बच्चों की तहवील का मुकद्मा दो साल से चल रहा था। आखिरकार दुनिया के इस सबसे बड़े जम्हूरी मुल्क की आजाद अदालत ने यह फैसला किया कि अगर बच्चों को अपने पास रखना चाहती हो तो इस्लाम से निकलना पड़ेगा। क्योंकि इस कदामत परस्त मजहब की वजह से बच्चों के अखलाक खराब होंगे और तहजीबी एतबार से भी उन्हें नुकसान पहुंचेगा।

अदालत का यह फैसला मेरे दिल व दिमाग पर बिजली बन कर गिरा और एक मर्तबा तो मैं चकरा कर रह गयी जमीन और आसमान घूमते हुए नजर आये, मगर अल्लाह की रहमत ने मुझे थाम लिया और मैंने दो टूक अन्दाज में अदालत से कह दिया कि मैं अपने बच्चों से जुदाई गवारा कर लूंगी मगर इस्लाम और ईमान की दौलत से दस्तबरदार नहीं हो सकती। चुनानचः बच्ची और बच्चा दोनों बाप के सुपुर्द कर दिये गये।

इसके बाद एक साल इसी तरह गुजर गया। मैंने अल्लाह से अपना तअल्लुक गहरा कर लिया और दीन की तबलीग में मशगूल हो गयी। नतीजा यह हुआ कि सारी महरूमियों के बावजूद एक खास किस्म के सुकून व इतमीनान से सरशार रही, मगर मेरे खैरख्वाहों ने इसरार के साथ मशवरा दिया कि मुझे किसी बा अमल मुसलमान से निकाह कर लेना चाहिए। औरत के लिए तनहा जिन्दगी गुजारना मुनासिब नहीं है। चुनानचिः एक मराकशी मुसलमान की तरफ से निकाह की पेशकश हुई तो मैंने कुबूल कर ली। यह साहब एक मस्जिद में इमामत के फराएज़ अंजाम देते थे। कुर्आन खूब अच्छी आवाज से पढ़ते थे और सुनने वालों को मसहूर कर देते थे। मैं दीन से उनके गहरे तअल्लुक से बड़ी मुत-अस्सिर हुई और उनसे निकाह कर लिया। अदालत ने मेरी रकम वा गुजार कर दी थी, चुनानचः मैंने अपने शौहर को अच्छी खासी रकम दी कि वह इस से कारोबार करें, मगर शादी को सिर्फ तीन माह गुजरे थे कि मेरे शौहर ने मुझे तलाक दे दी। उन्होंने कहा मुझे तुम से कोई शिकायत नहीं, मगर उकता गया हूं इस लिए म अजिरत के साथ तलाक दे रहा हूं। मैंने उन्हें जो भारी रकम दी थी चूंकि उस की कोई तहरीर मौजूद नहीं थी इस लिए वह भी उन्हों ने हजम कर ली और उस की मदद से उन्हों ने जल्द ही दूसरी शादी रचा ली।

तलाक के चन्द माह बाद अल्लाह ने मुझे बेटा अता फरमाया। उस का नाम मैंने मुहम्मद रखा। अब यह बेटा माशाअल्लाह दस बरस का है वजीह व शकील और बड़ा जहीन है। उसे ही देख देख कर मैं जीती हूं। अब मैंने अपने आपको अल्लाह के फजल से इस्लाम की तबलीग व इशाअत के लिए वक्फ कर दिया है और चाहती हूं कि बकिया जिन्दगी इसी मुबारक फरीजे की नजर हो जाये। यह भी अल्लाह का फजल है कि मैंने कुर्आन को खूब पढ़ा है। अमरीका में इस वक्त कुर्आन के सताइस तरजुमे मिलते हैं। मैंने उन में से दस का पूरे तौर पर मुतालआ किया है। अरबी जबान सीख ली है और जहां तरजुमे की कोई बात खटकती है फोन पर अरबी के किसी स्कालर से मालूम कर लेती हूं। अलहम्दुलिल्लाह कि मैंने मुख्तलिफ हदीस की किताबों यानी बुखारी, मुस्लिम, अबूदाऊद और मिशकात का कई कई बार मुतालआ कर चुकी हूं और इस्लाम को जदीद तरीन उस्लूब में समझने के लिए मुख्तलिफ उलमा की किताबों का मुतालआ करती रहती हूं। मैं समझती हूं कि जब तक एक मुबल्लिग कुर्आन व हदीस और इस्लाम के बारे में भरपूर मालूम न रखता हो वह तबलीग के तकाजों को अदा नहीं कर सकता।

यह भी अल्लाह ही की तौफीक है कि मैंने मुख्तलिफ मकामात पर मुस्लिम वोमेन स्टडी सर्किल कायम किये है, जिनमें गैर मुस्लिम ख्वातीन आती हैं, मैं उन्हें बताती हूं कि इसी अमरीका में आज से डेढ़ सौ साल पहले औरतों की खरीद व फरोख्त होती थी। मैं ख्वातीन को बताती हूं कि इस के बरअक्स इस्लाम ने आज से चौदह सौ साल पहले ख्वातीन को जो हुकूक अता किये थे उस की इन्सानी तारीख में कोई मिसाल नहीं मिलती। बेटी, बहन, बीवी और मां की हैसियत से जायदाद से उसे हिस्सा मिलता है और तलाक की सूरत में औलाद की किफालत का जिम्मादार शौहर होता है। तलाक को यूं भी इस्लाम में सख्त ना पसन्द करार दिया गया है। और शादी के मौके पर शौहर की हैसियत के मुताबिक उसे माकूल रकम यानी महर का मुस्तहिक करार दिया गया

है। शौहर को पाबन्द किया गया है कि वह अपनी बीवी के साथ बेहतरीन सुलूक रवा रखे। उस बाप के लिए जन्नत में आला तरीन इनामात की खुशखबरी दी गयी है जो अपनी बच्चियों की महब्बत और शफकत से परवरिश करता है और उनकी दीनी तर्बियत करके उन्हें एहतराम से रुखसत करता है। और इस की तो कहीं अदना सी मिसाल भी नहीं मिलती कि मां के कदमों में जन्नत करार दी गयी है और बाप के मुकाबले में इसे तीन गुना जियादा एहतराम का मुस्तहिक करार दिया गया है।

मैं जब यह बातें करती हूं तो अमरीकी औरतों के मुंह हैरत से खुले रह जाते हैं। वह तहकीक करती हैं, मुतालआ करती हैं और जब उन्हें यकीन हो जाता है कि मैं सहीह बातें कह रही हूं और हकीकत में इस्लाम ने औरत को बेपनाह हुकूक अता किये है तो वह इस्लाम कुबूल कर लेती हैं। चुनाचः अल्लाह का शुक्र है कि अब तक तकरीबन छः सौ अमरीकी ख्वातीन इस्लाम में दाखिल हो चुकी हैं।

आखिर में यह खुशखबरी भी सुनाती चलूं कि मेरा वह खानदान जिस ने मेरा सोशल बाईकाट कर दिया था। अल्लाह के फजल से उस में से अक्सर लोग इस्लाम कुबूल कर चुके हैं। मेरा वह बेटा जो अपने ईसाई बाप के पास रहता है और जिस की तर्बियत ईसाइयत के मुताबिक बड़ी तवज्जह से हो रही थी, एक दिन मेरे पास आया और कहने लगा "मम्मी! अगर मैं अपना नाम बदल कर फारूक रख लूं तो आप के नजदीक कैसा रहेगा?" मैंने यह सुन कर उसे चिमटा लिया और उसे इस्लाम की दावत पेश की तो उस ने कलमा पढ़ लिया। फारूक अब भी बाप के पास है मगर सच्चा पक्का मुसलमान है। यह भी अल्लाह की मेहरबानी है कि अमरीका जैसे मुल्क में रहते हुए भी मैं पर्दा कर रही हूं।

(हमें खुदा कैसे मिला? डाक्टर अब्दुलगनी फारूक/कुछ तरमीम के साथ)

# पुस्तक समीक्षा

पुस्तक का नाम : दी प्लेन ट्रूथ
लिपि : अंग्रेजी
लेखक : श्री उबैदुर्रहमान नदवी
साईज : १८ग२२ १/८
प्रकाशक : एकेडमी आफ जनरलइज्म एण्ड पब्लिकेशन नदवतुल उलमा, पोस्ट बाक्स–१३
टैगोर मार्ग, लखनऊ – २२६००७
मूल्य : ७५ रूपये

मिलने का पता : नदवा बुक डिपो, नदवा कालेज टैगोर मार्ग, लखनऊ–७

यह पुस्तक श्री उबैदुर्रहमान नदवी अध्यापक नदवतुल उलमा लखनऊ के उन ५०० प्रकाशित पत्रों का संग्रह है जो उन्होंने प्रसिद्ध अंग्रेजी समाचार पत्रों के संपादकों को लिखा है। इन पत्रों की विशेषता का अन्दाजा इसी से लगाया जा सकता है कि उनको दो बार पॉयनियर नई दिल्ली द्वारा ठमेज स्मजजमत ूतक प्रदान किया गया है।

इन पत्रों में अधिक महत्वपूर्ण वे पत्र हैं जो उन्होंने समाचार पत्रों में इस्लाम धर्म के विरूद्ध आपत्तिजनक लेखों और पत्रों के उत्तर में इस्लाम ध र्म का सही चित्रण कुर्आन और हदीस की रोशनी में किया है। इस के अतिरिक्त कुछ पत्र राजनीति और समाज सुधा२ पर भी प्रकाशित हुए हैं जिन में वर्तमान राजनीति और समाज की कुरीतियों को दर्शाते हुए समाज को सही दिशा में अग्रसर होने के लिए प्रोत्साहित किया गया है।

इन पत्रों में उन्होंने समाज की उन बुराइयें को प्रदर्शित किया है जो आज की सोसाइटी में बड़ी तेजी से फैल रही है। इन सामाजिक और राजनीतिक बुराइयों को दूर करने का उनका परामश समय की पुकार है।

समाचार पत्रों के लिऐ पत्र लेखन एक कठिन आर्ट है। बहुत ही कम लोग ऐसे हैं जो समयिक विषयों पर तुरंत अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए समाचार पत्रों में प्रकाशन हेतु पत्र लिखते हैं। श्री उबैदुर्रहमान उन लेखकों में से एक है जो ऐसे सामयिक विषयों पर तुरंत अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए समाज का सही मार्ग दर्शन करते हैं। खुदा करे जोरे कलम और ज्यादा हो।


कादियानियत के फ़ित्ने से बचने के लिऐ तीन किताबों का अध्ययन आवश्यक है।
१. ख़त्म नुबुव्वत
२. मसीहे मौअद की पहचान
३. हजरत महदी
इन तीनों किताबों की कीमत डाक खर्च के साथ ५० रूपये है। खरीद न सकने वाले २० रूपये के डाक टिकट भेज कर मुफ्त मंगवा सकते हैं या शोबे से मुफ्त ले सकते हैं।
शोब–ए–दावत व इरशाद
पो० बा० नं० ६३ नदवा लखनऊ–२२६००७ फोन : ०५२२–२७४१२३१

# पश्चिम प्रेमियों के कुतर्कों से सावधान रहने की जरूरत

गुलजार सहराई

पश्चिमी विचारधारा ने अपने अनुयायियों को इस हद तक स्वार्थी बना दिया है कि उन्हें अपने जैसे अन्य इन्सानों का इस धरती पर जन्म लेना भी अब खलने लगा है। उनके भोग–विलास के आदी मन में यह भय समा चुका है कि बढ़ती जनसंख्या उनके ऐशो–आराम में एक बड़ी बाधा बन सकती है अतः इस पर रोक लगाना आवश्यक है। यही कारण है जो उनकी ओर से समय–समय पर जनसंख्या नियंत्रित करने का आहवान किया जाता है।

पश्चिमी सभ्यता एवं संस्कृति का प्रभाव चूंकि हम भारतवासियों पर भी पड़ा है अतः यहां भी तथाकथित बुद्धिजीवियों का एक वर्ग ऐसा पैदा हो गया है जो हर मामले में पश्चिम का समर्थक है। अन्य धर्मों के अनुयायियों की बात तो जाने दें कि उनके धर्म गुरूओं ने धर्म को अबूझ पहेली बनाकर रख दिया है जिसके कारण वे किसी भी मामले में कोई स्थायी दृष्टिकोण अपनाने तथा हर हाल में उसी पर जमे रहने की क्षमता से वंचित हैं। परन्तु आश्चर्य तो यह देखकर होता है कि वह इस्लाम जो न केवल इन्सान को पारलौकिक जीवन की सफलता का मार्ग सुझाता है, बल्कि सांसारिक जीवन के भी प्रत्येक मामले में अपनी एक निश्चित नीति रखता है, स्वयं को उसी इस्लाम का अनुयायी कहने वाले कुछ लोग जोर–शोर से पश्चिमी विचारधारा का गुणगान करते नजर आते हैं।

ऐसे ही एक पश्चिम–प्रेमी तनवीर जाफरी का लेख "घातक है कट्टरपंथियों का जनसंख्या बढ़ाओ अभियान" हिन्दी दैनिक "आज" (३ जुलाई २००८) में पढ़ने को मिला। लेखक ने जनसंख्या वृद्धि के विरोध में वही घिसे–पिटे तर्क दिये हैं जो इससे पहले भी पश्चिम परस्त देते रहे हैं। मसलन वे लिखते हैं – "आज पूरे विश्व में महंगाई को लेकर हाहाकार मचा हुआ है। अच्छे खासे कमाते हुए परिवार के लिऐ दो वक्त की रोटी जुटा पाना एक चुनौती के समान हो गया है। दैनिक उपभोग की वस्तुएं विशेषकर खाद्य सामग्री के भाव पूरी दुनिया में आसमान छू रहे हैं। ऐसे समाचार प्राप्त हो रहे हैं कि इस बढ़ती हुई वैश्विक महंगाई की वजह से अनेकों परिवारों ने अपने खान–पान एवं रहन–सहन में बदलाव लाना शुरू कर दिया है .... ऐसे हालात में गरीब एवं अधिक बच्चे वाले परिवारों का भविष्य अंधकारमय ही होगा।"

समाज को आर्थिक विषमताओं का भय दिखाकर परिवार नियोजन पर आमादा करने का यह नुस्खा कोई नया नहीं है। यह और बात है कि पश्चिम परस्तों के इस उपदेश को निम्न वर्ग एवं मध्यम वर्ग ने कभी ध्यान देने योग्य नहीं समझा। स्वयं बुद्धिमान लेखक को भी इसका एहसास है, तभी तो वे लिखते हैं – "भारत का अशिक्षित समाज चाहे वह किसी भी समुदाय का क्यों न हो, आमतौर पर उन्हीं परिवारों में अधिक बच्चों की फौज देखने को मिलेगी।"

परन्तु अन्य पश्चिमी–परस्तों के विपरीत यदि वे इस तथ्य पर गौर कर लेते तो उन्हें आर्थिक विषमताओं का भय दिखाने की आवश्यकता ही न पड़ती क्योंकि जनसंख्या की समस्या आर्थिक है ही नहीं। क्योंकि यदि ऐसा होता तो विकसित एवं आर्थिक दृष्टि से खुशहाल पश्चिमी देशों में लोग अधिक से अधिक बच्चे पैदा करने को अच्छा समझते और पिछड़े तथा गरीब देशों के निम्न वर्ग के लोग आर्थिक तंगी के भय से बच्चों की संख्या सीमित रखने में ही कुशलता समझते । परन्तु वस्तुस्थिति इसके ठीक उलट है। मध्यम वर्ग एवं निम्न वर्ग अपनी आर्थिक तंगी के बावजूद बच्चों को बोझ नहीं समझता जबकि धनाड्य वर्ग साधन सम्पन्न होते हुए भी अधिक बच्चे पैदा करने में रूचि नहीं रखता। आखिर ऐसा क्यों?

दरअसल मध्यम वर्ग एवं निम्न वर्ग प्रायः आत्मसन्तोषी होता है। उच्च वर्ग की तरह उसे अपना स्टेटस बनाए रखने की चिन्ता भी नहीं होती। वह रूखी–सूखी खाकर तथा मामूली कपड़े पहन कर गुजारा करने में भी संकोच महसूस नहीं करता। फिर धार्मिक प्रवृत्ति का होने के कारण उसे इस बात पर भी पूर्ण विश्वास होता है कि सबका पालनहार तो ईश्वर ही है। अतः यदि

वह उन्हें आजीविका दे रहा है तो उनके बच्चों का प्रबन्ध भी वही करेगा। इसके विपरीत उच्च एवं धनाड्य वर्ग पश्चिमी विचारधारा से प्रभावित होने के कारण मात्र भौतिकवादी होता है। अतः अधिक से अधिक ऐशो–आराम से रहना चाहता है। दूसरों की खातिर कष्ट उठाने की भावना उसमें नहीं पायी जाती है। ऐसे में ज्यादा बच्चे पैदा करके उनका पालन–पोषण करना उसे व्यर्थ का बोझ नजर आता है जबकि उसके सामने आर्थिक समस्या नहीं होती। ईश्वर में या तो उसकी आस्था ही नहीं होती या अगर होती भी है तो न होने जैसी। इसका प्रमाण उक्त लेख में भी मिलता है।

लेखक महोदय फरमाते हैं –"आम मुसलमान अपने प्रत्येक नवजात बच्चे को "अल्लाह की देन" जैसे प्रचलित मुहावरे की आड़ में स्वीकार कर लिया करता था। परन्तु अब समय बदलने लगा है। बदलते समय के साथ–साथ इन्सानों की सोच में भी भारी बदलाव आने लगा है।"

यह कोई व्यक्तिगत विचार नहीं बल्कि इस्लाम की मूल धारणा है कि इन्सान को जो कुछ भी मिलता है, वह अल्लाह की ओर से मिलता है। परन्तु लेखक की बुद्धिमत्ता का हाल यह है कि वह इस्लाम की इस मूल धारणा को मात्र 'प्रचलित मुहावरा' बता रहे हैं। ऐसे में कुरआन एवं हदीस से प्रमाण प्रस्तुत करके उन्हें यह समझाना तो व्यर्थ होगा कि इस्लाम सन्तानोपत्ति रोकने का विरोधी है, परन्तु उनसे यह प्रश्न अवश्य किया जाना चाहिए कि जनसंख्या नियंत्रित करने का उपदेश देकर वे आखिर किस का भला करना चाहते हैं?

लोकतंत्र में संख्या का महत्व होता है और इसी महत्व को समझते हुए आज कई समुदाय अपनी जनसंख्या बढ़ाने पर बल दे रहे हैं। जिसका रोना लेखक महोदय ने अपने लेख में रोया भी है। परन्तु उन्होंने यह सोचने का कष्ट नहीं किया कि जो समुदाय भी उनके मश्वरे पर अमल करेगा वह लोकतंत्र के सिद्धान्त के तहत अपना ही नुकसान करेगा। लेखक महोदय के ऐसे विचित्र मश्वरे पर निश्चय ही दाद देनी चाहिए।

दिलचस्प बात यह है कि एक ओर तो लेखक महोदय जनसंख्या वृद्धि के खतरों को भयावह बनाकर प्रस्तुत करते हैं और उस पर रोक लगाने की मांग करते हैं, वहीं आगे चलकर अपने ही एक वाक्य द्वारा अपने पूरे भाषण को महत्वहीन बना देते हैं। वे कहते हैं – "ऐसे में जरूरी है कि बच्चा पैदा करने जैसे अति व्यक्तिगत मामलों को संबंधित परिवारों के विवेक पर ही निर्भर रहने दिया जाए।"

लेखक महोदय को जब यही कहना था तो फिर जनसंख्या नियंत्रित करने के लिए इतने लंबे भाषण की क्या आवश्यकता थी? सच है जब किसी पर वैचारिक गुलामी छा जाती है तो वह अपने दिमाग से सोचना छोड़ देता है। परिणाम स्वरूप उसके मुख से ऐसी ही विरोधाभासपूर्ण बातें निकलती हैं।

(कान्ति के शुक्रिये के साथ १७.८.२००८)

**बेशक रोज़ी अल्लाह देता है, साथ ही हलाल रोज़ी तलाश करने का हुक्म भी दिया है।**

(पृष्ठ ३६ का शेष)

कि सिद्ध करना कठिन है अर्थात लाखों का घूस प्रस्तुत करने वाले। प्रिय बन्धुओं एक सत्य ज्ञानी ऐसी मिथ्या उन्नति पर लात मारता है और अपने सत्यज्ञान ही को उन्नति के उच्चतर स्थान पर जानता है जिस से बुश भी वंचित है और टोनी ब्लेर भी ..... मैं स्वयं उर्दू में पीएचडी हूं, डबल एम०ए० हूं, उर्दू, हिन्दी, अंग्रेजी, अरबी, फारसी, पांच भाषाएं जानता हूं कभी सरकारी नौकरी की कोशिश भी की परन्तु किसी राजनीतिज्ञ का चापलूस न था, न घूस के पैसे थे न घूस देने का इरादा किया सरकारी नौकरी न पा सका, जब कि मेरे कई साथी जो हाईस्कूल में फेल हो गये थे आज सरकारी नौकरी पूरी कर के रिटायर हो चुके हैं मेरा एक लड़का ग्रेजवेट है, दूसरा इंटर (साइंस) एक पोता ग्रेजवेट दूसरा पोता बीकाम कम्प्यूटर से अवगत, एक भतीजा ग्रेजुएट साफटवियर, हार्डवियर में माहिर तीन पोतियां ग्रेजुएट क्या इस को शिक्षा में पिछड़ा कहेगे? परन्तु किसी को कोई सरकारी नौकरी न मिल सकी क्यों? न लाखों गिनने पर सामर्थ्य न घूस देने का इरादा, न किसी मंत्री की सेवा में हाजिरी न किसी की चापलूसी, न पिछड़े होने का आभास हम मुसमान हैं, हम को वास्तविक उन्नति का उच्चतर स्थान प्राप्त है। हम ऐसों को दअवत देते हैं जो (स्वयं इस्लामी शिक्षाओं से वंचित रह कर) हम को उन्नति का ढर्रा दिखा रहे हैं कि वह हम से सत्य ज्ञान लेकर अपना पिछड़ा पन दूर करें वरना कल कियामत को जब उन का पिछड़ा पन उन के सामने आएगा तो अफसोस से कोई लाभ न होगा। वमा अलैना इल्लल्बलाग़।

# शादियों में भी फुजूलखर्ची न करें

संकलित

निकाह हमारे दीन में एक इबादत है। कभी फर्ज है तो कभी सुन्नत, मगर अफसोस कि हमने इस इबादत को एक कौमी रस्म बनाकर अपनी तबाही का दरवाजा खोल लिया है। शादी की फुजूलखर्चियों ने सुन्नते रसूल (सल्ल०) का मकसद ही खत्म कर डाला है। आज इन्हीं गैर इस्लामी रस्मों की अदायगी के लिऐ मजबूर किये जाने वाले गरीब मुसलमानों को कभी–कभी तो अपनी जमीन जायदाद बेचने पर मजबूर हो जाना पड़ता है। काफी लोग तो सूदी कर्ज लेकर शादी की गैर–इस्लामी रस्में अदा करते है। ब्याज की मार ने न जाने कितने घरों को तबाह करके रख दिय है। अफसोस, समाज की गैर–इस्लामी रस्मों ने गरीब मुसलमानों का जीना हराम कर दिया है।

लगभग हर जहग हमारा मुस्लिम समाज गैर इस्लामी रस्मों का शिकार होकर हर तरह का नुकसान उठा रहा है। इन रस्मों की जड़ें इतनी मजबूत हो चुकी हैं कि इनके खत्म होने के आसार नजर नहीं आ रहे हैं। क्योंकि हमारी नादानी से यह रस्में मजहबी रस्म करार दी जा चुकी हैं । इल्म की कमी की वजह से आज हमारा प्यारा दीन भी धीरे–धीरे रस्मो–रिवाज वाला मजहब बनता जा रहा है। गरीबी या लापरवाही की वजह से आज हम अपने बच्चों की तालीम की तरफ ध्यान नहीं देते बल्कि कुछ बड़ा होते ही उसे किसी काम पर लगाकर कुछ कमाने के लिये भेज देते हैं। एक तरफ यह फुजूलखर्ची दूसरी तरफ जिहालत और गरीबी।

उधर कौम के जाहिल अमीर शादी की गैर इस्लामी रस्मों पर पानी की तरह पैसा बहा रहे हैं। उनका यह सारा पैसा दूसरों के पास जा रहा है। पढ़े–लिखे अमीर और गरीब लोग भी इस मामले में पीछे नहीं हैं क्योंकि समाज में अपना वकार, स्टेटस बुलन्द रखने के लिए अपने आपको मालदार जाहिर करने पर तुले हुए हैं। अपनी औकात से कहीं ज्यादा खर्च करके अपनी झूठी शान बढ़ाने पर फख्र महसूस किया जा रहा है। इन खराबियों की वजह से न जाने कितने गरीब मां–बाप की लड़कियां आहें भर रही हैं। अफसोस, उनकी आहों पर कोई ध्यान देने के लिए तैयार नहीं।

शदी के मौजूदा अखराजात को पूरा करने के लिए लोग न जाने कैसे–कैसे रिस्क लेने पर मजबूर हैं। न जाने कितने लोग नाजायज रस्मों की लानत में गिरफतार होकर तबाह व बर्बाद हो चुके हैं, और हो रहे हैं। हमारी गरीबी और परेशान हाली की सबसे बड़ी वजह हमारी अपनी बनायी हुई गलत और गैर इस्लामी रस्में हैं जिन्हें न चाहते हुए भी करने पर मजबूर हैं। जो गरीब मजदूरी करके बड़ी मुश्किल से अपना गुजारा करता और घर चलाता हो वह बेचारा अपनी गैर इस्लामी रस्मों को कैसे अदा कर पाये? ऐसी हालत में अगर वह अपनी जायदाद न बेचे, सूदी कर्ज न ले तो और क्या करे? इन्हीं खुराफाती रस्मों के चलते वह लड़कियां जिन्हें अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने रहमत फरमाया है, अब अपने मां–बाप के लिए जहमत बन चुकी हैं क्योंकि गरीब–मां–बाप के पास वह सब कुछ नहीं जो लड़के वाले चाहते हैं।

यही वजह है कि अब अगर किसी के घर लड़की पैदा होती है तो मां–बाप को खुशी के बजाय अफसोस होता है क्योंकि उन्हें पता है कि लड़की उनके लिये क्या–क्या मुसीबतें साथ लायी है। अफसोस कितना बड़ा सितम है कि हमने अपनी नादानी से अल्लाह की रहमत को अपने लिये जहमत समझ लिया है।

हम यह भी समझने की कोशिश नहीं कर रहे हैं कि हमारी गाढ़ी कमाई से हासिल की जाने वाली रकम गलत कामों में खर्च होकर किसके पास जा रही है? लगभग ७५ प्रतिशत रकम गैरों के पास जा रही है। हम दीवालिये और वह सरमायादार बन रहे हैं। यह भी गौरतलब है कि शादी में हजारों और लाखों खर्च करने वाली हमारी कौम के पास न अपना शादी हाल है, न जमाअतखाना, न ही कोई गार्डेन, न बर्तनों का इन्तिजाम और बिस्तरों का बन्दोबस्त। शादी की खुशी में लाखों रूपये अपनी झूठी शान के लिये पानी की तरह बहाने वाले हमारे अपनी कौम

के लिऐ कोई जमाअतखाना, शादी हॉल न बना सके हमारी सारीखुशियां और खुशियों के सामान गैरों के किराये पर मुनहसिर हैं।

कौम की इन्हीं गलत रस्मों की बुनियाद पर कितने लोग फर्ज इबादतों से महरूमें हो रहे हैं। अक्सर लोगों की जबानी सुना होगा, रकम पास में है लेकिन हज को नहीं जा रहे हैं। कहते हैं लड़की की शादी करनी है, हज में पैसा खर्च हो जाएगा तो शादी कैसे और कहां से करेंगे? अब जरा सोचिये, इस गैर इस्लामी ख्याल ने कितनों की आखिरत खराब की? अब अक्सर लोग यही सोचते हैं कि मकान बन जाए, बच्चों की शादियां हो जाएं फिर हज के लिए सोचेंगे। जरा सोचिये तो सही, फिर वह वक्त मिले या न मिले, क्या भरोसा। लेकिन परवाह किसे? दुनिया की फिक्र सब को है, आखिरत की परवाह किसी को नहीं। यह हमारी नादानी व जिहालत नहीं तो और क्या है कि अल्लाह व रसूल को नाखुश करने के लिए हजारों और लाखों खुशी–खुशी खर्च किये जाते हैं। इसी दौलत से पहले वाले लोग जन्नत खरीदा करते थे और आज हमारी कौम के लोग जहन्नम खरीद रहे हैं।

निकाह एक इबादत है, कोई रस्म नहीं। जिस तरह इबादत की अदायगी में कोई दूसरा काम, तरीका शामिल कर लिया जाए तो इबादत इबादत नहीं रहती। रोजे की हालत में जो चीजें मना हैं अगर उनसे बचा न जाए तो रोजा रोजा नहीं रहता, तो फिर जो चीजें हमारी शरीअत में हराम व नाजायज हैं अगर हम निकाह के दौरान उन्हें अपनाएंगे तो निकाह क्या होगा? यही वजह है कि निकाह के वक्त अदा होने वाली नाजायज और हराम रस्मों की लानत व नहूसत से रिश्ते मुबारक नहीं साबित हो रहे हैं। शादी में हजारों और लाखों रूपये खर्च करने वाले मां–बाप निकाह की बरकतों से महरूम होकर बुढ़ापे में अपनी नादानी पर अफ्सोस करते नजर आते हैं।

अफसोस होता है कि हमें आज के हालात और समाज के ठेकेदारों पर कि वे अपनी कौम को इस तबाही से बचाने के लिए कुछ सोचते ही नहीं। उलमा–ए–दीन की कौन सुने? यह हजरात कौम को नाजाएज रस्मों से बचने की सलाह देते हैं तो उन्हें जवाब मिलता है मौलाना साहब! क्या करें, हम भी समझते हैं, लेकिन समाज में इज्जत पाने के लिए कुछ न कुछ तो करना ही पड़ता है। जरा सोचिये, हमने दुनिया की झूठी इज्जत के लिए आखिरत की जिल्लत मोल लेना गवारा कर लिया है। लड़की की शादी में लाखों रूपये खर्च करने वाले मां–बाप अपनी बेटियों को उनका जायज हक देने की बात नहीं करते। इस्लामी शरीअत के अनुसार मां–बाप की जायदाद में बेटों की तरह बेटियों का भी हक है, लेकिन कोई देने के लिए सोचता ही नहीं, तैयार ही नहीं। अल्लाह ने सूरह निसा में औरतों के हुकूक बयान फरमा दिये हैं लेकिन आज कोई देने की बात नहीं करता।

कहने का मतलब यह है कि गैर–इस्लामी रस्मों की जड़ें धीरे–धीरे इतनी मजबूत होती जा रही हैं कि उनकी मुखालफत करने वालों को मस्जिद का मुल्ला कहकर जलील किया जाता हे। जिसका नतीजा यह निकल रहा है कि अगर कोई शरीफ आदमी इन बेहूदा रस्मों से बचना चाहे तो बच नहीं पा रहा है, उसे गुनाहों में फंसाने पर मजबूर किया जा रहा है। हमारी इन नाजायज रस्मों की वजह से न जाने कितने घर वाले बेघर हो गये, कितने सूदी कर्ज की लानत में गिरफतार हैं न जाने कितनों की जायदादें बिक गयीं, तो न जाने कितने लोग शादी से महरूम हो गये।

## मायूस नहीं है

ग़मगीन हम जरूर हैं मायूस नहीं हैं
आज़ाद हैं अअमाल में महबूस नहीं हैं
टेक्निक नई, खेती में हम आम करेंगे
आलाते जदीद से हम काम करेंगे
ग़ल्ले की कमी मुल्क में होने नहीं देंगे
इस पेश–ए–आली को न बदनाम करेंगे
ग़मगीन हम ज़रूर हैं मायूस नहीं हैं
आज़ाद हैं अअमाल में महबूस नहीं हैं
हक़ नौकरी का हम अदा करने में है मशहूर
हाकिम हों कि हारिस हों हर हाल में मसरूर
हम वक़्त के पाबन्द हैं मेहनत शिआर हैं
और काहिली सुस्ती से तो रहते हैं बहुत दूर
ग़मगीन हम ज़रूर हैं मायूस नहीं है
आज़ाद हैं अअमाल में महबूस नहीं है

किस्त सात

# हिन्दी लिपि में उर्दू शब्दों का उच्चारण तथा अर्थ

इदारा

नोट : बिन्दी वाले अक्षरों के उच्चारण स्थान उर्दू वालों से सीखना आवश्यक है

| शब्द | अर्थ | शब्द | अर्थ | शब्द | अर्थ |
|---|---|---|---|---|---|
| तरस | दया | तसख़ीर | वशीकरण | तसर्रुफ़ | वश |
| तुर्श | खट्टा | तस्कीन | सांत्वना | तसरीह़ | व्याख्या |
| तुर्शरूई | क्रोध | तसल्सुल | निरंतरता | तसग़ीर | अल्पार्थक |
| तरग़ीब | प्रलोभन | तसल्लुत | अधिपत्य | तस्फ़ियः | निर्णय |
| तरक्क़ी | उन्नति | तसल्ली | सांत्वना | तसन्नुअ़ | पाखण्ड |
| तरक्क़ी पज़ीर | उन्नतिशील | तस्लीम | स्वीकरण | तसनीफ़ | रचना |
| तरक्क़ीयाफ़्ता | उन्नति प्राप्त | तस्लीम शुदा | स्वीकृत | तसव्वुफ़ | संतवाद |
| तर्क | त्याग | तस्मिया | नामकरण | तज़हीक | उपहास |
| तर्का | मृतक संपति | तश्ख़ीस | निर्धारण | तज़ीअ़ | नष्टीकरण |
| तरकीब | विधि | तशद्दुद | हिन्सा | तताबुक़ | अनुकूलता |
| तरमीम | संशोधन | तशरीह़ | व्याख्या | ततहीर | शुद्धी |
| तरन्नुम | रोग | तशफ़्फ़ी | सन्तोष | तआ़रुफ़ | परिचय |
| तरवीज | प्रसार | तिशनगी | पिपासा | तआ़वुन | सहयोग |
| तिर्याक | विष निवारक औषधि | तिशना | पिपासू | तअ़ब | कष्ट |
| तज़्किय: | शुद्धिकरण | तशनीअ़ | दुर्वचन | तअ़ब्बुद | उपासना |
| तज़वीर | कपट | तशवीश | संशय | तअ़बीर | स्वप्नार्थ |
| तज़ईन | सज्जा | तशहीर | विज्ञापन | तअ़ज्जुब | आश्चर्य |
| तसामुह़ | अवहेलना | तसादुम | संघर्ष | तअ़ज्जुब ख़ेज़ | आश्चर्यजनक |
| तसाहुल | आलस्य | तसहीह़ | संशोधन | तअ़जील | शीघ्रता |
| तस्बीह़ | ईशपवित्रता | तस्दीक़ | पुष्टि | तअ़दाद | संख्या |

पाठक जिस उर्दू शब्द का उच्चरण जानना चाहेंगे अर्थ सहित छापा जाएगा।

# बातें सत्यज्ञानी गुरूजी की

इदारा

गुरू जी! आप राजनीति में भाग क्यों नहीं लेते? क्या राजनीति में भाग लेना पाप है? प्रिय बन्धुओ! राजनीति में भाग लेना और कोई ऐसा पद प्राप्त करना जिस के द्वारा जन साधारण का सत्य मार्ग का पथ प्रदर्शन किया जा सके तथा सत्य मार्ग पर चलने में जो रूकावटें हों उन को सत्ता बल द्वारा दूर किया जा सके अति आवश्यक है। परन्तु राजनीति में ऐसा पद प्राप्त करना अब सहज नहीं। यह पद अब राजनीतिक उखाड़ पछाड़ और अवैध व्यय के बिना संभव नहीं, जो पद अवैध ढर्रे द्वारा प्राप्त किया जाए उस से भलाई की आशा करना मूर्खता है। इस वातावरण में सत्यवादियों के लिये राजनीति का त्याग ही अच्छा है। होना तो यह चाहिए था कि समस्त सत्यवादी तथा सत्य ज्ञानी एक जुट होकर बिना किसी व्यय के अपने प्रतिनिधि चुनते परन्तु वर्तमान स्थिति में ऐसा संभव नहीं रह गया है। अतः सत्यवादियों का राजनीति से दूर रहना ही अच्छा है। ऐसी दशा में सत्य वादियों को चाहिए कि वह जन साधारण को अपने उस सत्य ज्ञान से अवगत कराएं जो अंधेरे उजाले, एकान्त तथा जन समूह, बाजार तथा आफिस हर जगह अपने सृष्टा की पकड़ के भय से हर बुरे तथा गलत कार्य से बचाये एवं उनकी कोशिश हिकमत के साथ राजनीतिज्ञ गणों के सुधार की भी हो। कोशिश (चेष्ठा) अपना काम है सफलता देना सृष्टा के अधिकार में है।

गुरूजी ! कुछ लोग बराबर अपना बयान छाप रहे हैं कि मुसलमानों का पिछड़ापन शिक्षा में पिछड़े होने के कारण है क्या यह बात उन की सत्य है? यदि सत्य है तो मुसलमानों की शिक्षा का पिछड़ा पन कैसे दूर हो सकता है?

प्रिय बन्धुओ ! ऐसा बयान देने वाले सत्य निष्ठ तथा सुमित्र अवश्य हैं, उनको उन की चेष्ठाओं का प्रतिदान अवश्य मिलेगा परन्तु यह बेचारे सत्य ज्ञान से वंचित हैं और उन को इस का आभास भी नहीं है। मुसलमान और पिछड़ा पन ! मुसलमान ही उन्नति के उच्चतर स्थान पर बिराज मान है। हां जो नाम का मुसलमान है इस्लाम के सत्यज्ञान से वंचित है वह अवश्य पिछड़ा है। मुसलमान यदि अपने अल्लाह (सृष्टा) को पहचानता है। उसके गुणों से अवगत है, उस पर ईमान रखता है। उस के भेजे हुए अन्तिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जानता है और उन पर ईमान रखता है। उनके लाए हुए इलाही अहकामात (ईशादेशों) का ज्ञान रखता और उन पर चलता है तो क्या उसे पिछड़ा हुआ कहेंगे कदापि नहीं। उस का कार्य विश्व का सुधार है बिगाड़ नहीं, उस का कार्य हलाल रोजी (वैध आजीविका) से जीवन बिताना है, लूट खसोट, धोखा धड़ी, घूस पात से प्राप्त आजीविका नहीं, उस का कार्य जगत से बुराइयां दूर करना और भलाइयां बरपा करना है। ऐसा व्यक्ति यदि दिन में एक समय खाना पाता है तो भी उसे पिछड़ा कहने वाले स्वयं पिछड़े हैं। अल्लाह के अन्तिम सन्देष्टा के यहां महीना महीना चूल्हा नहीं जलता था जबकि अबू जहल और अबू लहब के यहां धन की रेल पेल थी ऐसे में क्या किसी के मुख में ज़बान है कि वह हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथियों को पिछड़ा कह सके? अगर कहे तो वह खुद पिछड़ों में गिना जाएगा उस को सत्यज्ञान से वंचित समझा जाएगा, जरा बताएं कारून और मूसा अलैहिस्सलाम में कौन पिछड़ा था, वही जो अपने धन के साथ धरती में धंसा दिया गया। अतः मुसलमान यदि इस्लाम के ज्ञान से वंचित नहीं है और इस्लामी शिक्षाओं को अपनाने से वंचित नहीं है तो उसे पिछड़ा कहना अनुचित है तथा ऐसे मुसलमानों को अपने को पिछड़ा जानना नाशुक्री है। रही बात सांसारिक शिक्षा से सांसारिक उन्नति प्राप्त करना इस को इस्लाम रोकता नहीं जब कि यह मुसलमान का उद्देश्य नहीं, परन्तु यह भी बड़ी भूल है आज के वातावरण में कम ही ऐसे होंगे जिन को सांसारिक उच्च शिक्षा से सांसारिक उन्नति मिली हो, अव्वल तो सांसारिक उच्च शिक्षा सरल नहीं आखिर डाक्टरी की शिक्षा इतनी महंगी क्यों कर दी गई, इंजीनियरिंग की शिक्षा इतनी महंगी क्यों कर दी गई जिसे वही प्राप्त कर सकता है जिस के पास धन की रेल पेल हो फिर आम तौर से उच्च शिक्षा पाने वाले सरकारी नौकरियों में कहां जा पाते हैं? वही जा पाते हैं जो राजनीतिज्ञों के सम्बन्धी हैं या उनके चापलूस या कहते हुए डर लगता है

(शेष पृष्ठ ३५ पर)

# अन्तर्राष्ट्रीय समाचार

## मोबाइल फोन का प्रयोग अति अधिक हानिकारक :

गर्भवती महिलाओं, बच्चों और दिल के मरीजों को इस के प्रयोग से बचना चाहिए।

जनता को सचेत करते हुए सरकार ने मोबाइल सेवा देने वाली कम्पनियों को ऐसे विज्ञापनों (इश्तहारों) को सीमित करने का निर्देश दिया है। जिस में गर्भवती महिलाओं और बच्चों को मुबाइल का प्रयोग करते हुए दिखाया जाता है। संचार माध्यम मंत्रालय के निर्देशों के अनुसार मोबाइल से निकलने वाली इलेक्ट्रानिक किरणों से दिमाग की कोशिकाओं पर बहुत बुरा असर पड़ता है। मंत्रालय द्वारा जारी किये गये निर्देशों में इस बात पर भी जोर दिया गया है कि बच्चों, गर्भवती महिलाओं और दिल के रोगियों को मुबाइल का प्रयोग सीमित तौर पर करना चाहिए।

बीते दिनों भारत में प्रयोग किये जाने वाले मुबाइल फोनों की संख्या बहुत तेजी से बढ़ी है। २०१० ई० तक सम्भव है यह संख्या ५०० मिलयन तक पहुंच जाए और इसका प्रयोग करने वाले अधिकतर बच्चे होंगे। मोबाइल से फोन करते समय हम अधिक तर इसे कान पर लगाते हैं जो कि दिमाग के बहुत निकट होता है और इससे दिमाग पर पड़ने वाले हानिकारक प्रभावों का खतरा बढ़ जाता है। रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि यदि मोबाइल फोन का प्रयोग बहुत जरूरी हो तो हेड फोन का प्रयोग करें। रिपोर्ट मं १६ साल से कम उम्र के बच्चों को मोबाइल प्रयोग से रोका गया है। इसके अतिरिक्त मोबाइल टावर से निकलने वाला रेडियेशन के प्रभाव कम करने के लिऐ बेस ट्रांसीवर स्टेशन स्थापित करते समय मोबाइल आपरेट्रों को भी रेडियेशन कम करने वाले उपायों को अपनाना आवश्यक होगा।

## राजनीति में बढ़ रहा है मुसलमानों का दख़्ल :

उत्तर प्रदेश की सियासत में मुसलमानों का दख़ल ने केवल बढ़ रहा है बल्कि मुसलमानों को अपनी तरफ आकर्षित करने के लिऐ ही बड़ी–बड़ी राजनीतिक पार्टियां अपने पैंतरे बदल रही है। सम्भवतः यही कारण है कि केन्द्रीय सरकार से अपना सहयोग वापस लेने के बाद उत्तर प्रदेश को मुख्यमंत्री ने अमेरिका से होने वाले प्रमाण समझौते के विरोध का दहाना मुसलमानों की ओर मोड़ दिया और कहा कि इससे देश के मुसलमान नाराज है। इसके उत्तर में समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मुलायम सिंह ने प्रमाणु समझौते के बहाने अपनी राजनीति का रूख भूतपूर्व राष्ट्रपति अब्दुल कलाम की तरफ मोड़ दिया जिन्होंने कहा कि अमेरिका के साथ भारत का प्रमाण समझौता देश हित में है। यह मुसलमानों की बढ़ती हुई राजनीतिक महत्व का नतीजा है डॉ० अब्दलकलाम अच्छे वैज्ञानिक होने के साथ साथ अच्छे मुसलमान भी हैं।

राजनीतिक क्षेत्र में मुसलमानों के बढ़ते आद्यपत्य (संतुलन) का नतीजा है कि उत्तर प्रदेश विद्यमान परिषद में मुसलमान सदस्यों की सख्या लगातार बढ़ रही हैं। तेरहवीं विधान परिषद में जहां केवल ३६ मुसलमान सदस्य थे तो चौदहवीं विद्यान परिषद में उनकी संख्या बढ़कर ४३ हो गई जब कि वर्तमान विधान परिषद में उनकी संख्या बढ़कर ५६ है। भारती जनता पार्टी ही ऐसी पार्टी है। ज़िस से एक भी मुसलमान सदस्य अभी तक चुना नहीं गया। लेकिन मुसलमानों के बढ़ते हुए राजनीतिक गलबे (अधिपत्य) को देखते हुए बी.जे.पी. ने भी अब मुसलमानों के विरोध की राजनीति को छोड़ दिया। विगत लोक सभा चुनाव में उस समयके प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेयी ने मुसलमानों को आकर्षित करने वाली भाषा का प्रयोग किया।

डॉ० मुईद अशरफ नदवी

अमेरिका संसार का सबसे बड़ा कैदखाना :मानव अधिकार वाच की एक रिपोर्ट के अनुसार ३.२ मिलयन· ३२ लाख लोगों को जेल की सलाखों के पीछे बन्द करके अमेरिका बन्दियों की सब से बड़ी संख्या रखने वाला दुन्या का पहला देश बन गया है। अमेरिका के इतिहास में यह पहला अवसर है जबकि देश के अन्दर एक साल में कैदियों की संख्या में इतनी वृद्धि हुई

(शेष पृष्ठ ३६ पर)